सरस्वती-सिरीज़ नं० ५९

अग्रणी

विजय वर्मा

प्रकाशक
इंडियन प्रेस लिमिटेड
प्रयाग

सरस्वती-सिरीज़

स्थायी परामर्शदाता—डा० भगवानदास, पण्डित अमरनाथ झा, भाई परमानंद, डा० प्राणनाथ विद्यालङ्कार, श्री सत्यदेव विद्यालङ्कार, पं० द्वारिका-प्रसाद मिश्र, संत निहालसिंह, पं० लक्ष्मणनारायण गर्दे, बाबू संपूर्णानन्द, श्री बाबूराव विष्णुपराड़कर, पण्डित केदारनाथ भट्ट, ब्यौहार राजेन्द्रसिंह, श्री पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, श्री जैनेन्द्र कुमार, बाबू वृन्दावनलाल वर्मा, सेठ गोविन्ददास, पण्डित क्षेत्रेश चटर्जी; डा० ईश्वरीप्रसाद, डा० रमाशंकर त्रिपाठी; डा० परमात्माशरण, डा० बेनीप्रसाद, डा० रामप्रसाद त्रिपाठी, पण्डित रामनारायण मिश्र, श्री संतराम, पण्डित रामचन्द्र शर्मा, श्री महेश-प्रसाद मौलवी फ़ाज़िल, श्री रायकृष्णदास, बाबू गोपालराम गहमरी, श्री उपेन्द्र-नाथ "अश्क़", डा० ताराचंद, श्री चन्द्रगुप्त विद्यालङ्कार, डा० गोरखप्रसाद, डा० सत्यप्रकाश, श्री अनुकूलचन्द्र मुकर्जी, रायसाहब पण्डित श्रीनारा-यण चतुर्वेदी; रायबहादुर बाबू श्यामसुन्दरदास, पण्डित सुमित्रानन्दन पंत; पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', पं० नन्ददुलारे वाजपेयी, पं० हजारीप्रसाद द्विवेदी, पण्डित मोहनलाल महतो, श्रीमती महादेवी वर्मा, पण्डित अयोध्या-सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'; डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल, डा० धीरेन्द्र वर्मा, बाबू रामचन्द्र टंडन, पण्डित केशवप्रसाद मिश्र, बाबू कालिदास कपूर, इत्यादि; इत्यादि।

आधुनिक-उपन्यास

अग्रणी

विश्व-शान्ति का पथ-प्रदर्शक मौलिक उपन्यास।

विजय वर्मा

Printed and Published by K. Mittra at the Indian Press, Ltd. Allahabad.

१

डाक्टर कमल और सुन्दरी कैथरिन में आपस में किसी प्रकार प्रेमपूर्ण आकर्षण हो जाने की सम्भावना मैक्सिम कामरोव के मन में स्थान नहीं पा सकती थी—उस समय भी जब कैथरिन कमल की बीमारी बढ़ जाने से उसकी सेवा में अपने आप लग गई! अपने देश रूस से कामरोव ऐसे उच्च अधिकारी का अमरीका की राजधानी वाशिंगटन में जिस उद्देश्य से आगमन हुआ था उसे बाहरी संसार से गुप्त रखने का प्रयत्न किया गया था। किन्तु कमल पर कामरोव का विश्वास था। कमल एक अच्छा डाक्टर था और संयोग-वश कामरोव से पहले-पहल उस समय मिला था जब कामरोव एक रोग से परेशान था। उसने कामरोव को अपनी दवा से स्वस्थ कर दिया और इस तरह उनका 'साथी और मित्र' बन गया! कामरोव ने उसकी उन खोजों के लिए, जिनमें वह रूस में लगना चाहता था, सुविधाएँ करवा दीं। जब कामरोव अमरीका आना चाहता था तब कमल ने भी यहाँ आने की अपनी इच्छा प्रकट की और कामरोव ने प्रसन्नता से उसकी इस इच्छा की पूर्ति का भी प्रबन्ध कर दिया। किन्तु यहाँ आकर थोड़े ही दिनों बाद कमल बीमार पड़ गया। और तब कैथरिन ने यह 'विचित्र' प्रस्ताव कामरोव से किया कि वे उसे कमल की सेवा-शुश्रूषा करने का अवसर दे दें।

मैक्सिम कामरोव ने कैथरिन को 'टाइपिस्ट' की तरह रक्खा था। कुछ लोगों ने उन्हें सावधान किया कि ऐसे ऐरे-ग़ैरे व्यक्तियों से राजकीय काग़ज़ों और महत्त्वपूर्ण समझौतों को टाइप कराना ठीक नहीं, पर कामरोव ने तुरन्त उत्तर दिया—"अमरीका में अब भी एक व्यवसायी-दल का और धनी वर्ग का राज्य है। इसी लिए आप लोग साधारण लोगों को 'ऐरे-ग़ैरे' कह

सकते हैं, पर रूस में तो अब मज़दूरों और किसानों का ही शासन है। मैं स्वयं उन्हीं साधारण लोगों में से हूँ। फिर मैं यह बात कैसे मान सकता हूँ। साधारण वर्ग में तो मेरा कहीं अधिक विश्वास है।"

कमल को पिछले चार वर्षों में कामरोव ने जितना देखा था उससे वे अपने को उसके स्वभाव का पूरा जानकार समझने लगे थे। कमल पच्चीस-छब्बीस साल की अवस्था में लेनिनग्रेड में आकर कामरोव से मिला था। उस समय स्वयं कामरोव की अवस्था तीस थी। कार्लमार्क्स और लेनिन के सिद्धान्तों का पूरा अनुयायी न होने पर भी कामरोव अपने को उन्हीं की तरह वैज्ञानिक समाजवादी मानते थे। उन्हें आश्चर्य हुआ कि कमल डाक्टर होने पर भी एक अनिर्वचनीय विज्ञानमयी शक्ति में विश्वास रखता है। फिर भी उसके समाजवाद और कामरोव के समाजवाद में बहुत बातों में अन्तर होने पर भी व्यावहारिक क्षेत्र में दोनों में यथेष्ट एकता थी। इसी लिए कामरोव उससे अपने दिल की बातें जब-तब कह देते थे। इस बार अपने अमरीका आने का उद्देश्य भी उन्होंने उससे नहीं छिपाया। इसी से उन्हें कैथरिन की कमल की सेवा-शुश्रूषा करने की बात विचित्र जान पड़ी। उन्होंने सोचा—क्या सचमुच यह सम्भव है कि यह गुप्तचरों की भाँति कमल से मेरा कुछ विशेष भेद जानने के लिए उसके पास इस तरह रहना चाहती है?

कैथरिन की सेवा का ढङ्ग देखकर कामरोव और कमल दोनों चकित थे। प्रातःकाल कमल के जगने के पहले ही कैथरिन आ जाती थी और फिर रात्रि में उस समय जाती थी जब वह सो जाता था। जब कमल का ज्वर तेज़ी पर न होता तो वह समाचारपत्र सुनने को ज़िद करता था। कैथरिन संक्षेप में सब समाचार बतला देती थी। इसके सिवा वह उसे पियानो बजाकर सुनाती थी और कभी-कभी एकाध गीत भी।

पहले कमल ने यही समझा कि कैथरिन को कामरोव ने उसके पास भेज देने की कृपा की है, पर कामरोव की बातों से उसने जाना कि कैथरिन स्वयमेव आई है। इससे उसे विशेष प्रसन्नता हुई।

एक दिन कमल ने किसी बात के सिलसिले में कह दिया—केवल आप ही नहीं सभी युरोपियन लोग मन ही मन हिन्दोस्तानियों को बल्कि सभी एशियाई लोगों को असभ्य और अवैज्ञानिक समझते हैं। कई एक तो खुल्लमखुल्ला इसका जितना भी प्रचार कर सकते हैं करते हैं।

यह सुनते ही कैथरिन की आँखों में आँसू आ गये। उसने कहा—आप सभी गौरवर्णवालों को मिस मेयो की जाति का न मान लें। मैं जनती हूँ कि यहाँ पूर्वी लोगों के विरुद्ध बहुत कुछ लिखा कहा गया है पर इसके लिए आप यहाँ की समस्त जनता को दोषी ठहरायेंगे तो उसके साथ अन्याय करेंगे।

कमल ने कहा—इस षड्यन्त्र का पाप जिनके सिर है उन्हें मैं जानता हूँ, और आप भी जानती हैं। किन्तु मैं यह सोचा करता हूँ कि जिस तरह किसी देश की जनता भूख से व्याकुल होकर पेट के लिए न्याय-अन्याय की परवा न करे तो उसे दोषी न ठहराकर उस देश की शासन-पद्धति में ही दोष देखना अधिक न्याययुक्त है उसी तरह जब कुछ देश मदान्धता और अत्यधिक विलासिता से अपने अधिकारियों द्वारा दूसरों की लूट-खसोट जारी रखने और उन्हें ही बदनाम करने को ठीक समझने लगें, और शेष संसार इसे देखता रह जाय तो इसके लिए संसार भर की वर्तमान सामाजिक व्यवस्था को पतन तथा प्रवञ्चना की स्थिति में समझना ठीक होगा। आप जैसी उच्च और विशाल हृदयवाली देवियाँ इस दुर्गति से संसार भर को छुड़ा सकती हैं और उसे वैसा ही अपना चिर-ऋणी बना सकती हैं जैसा मुझे आपने व्यक्तिगत रूप से बना लिया है।"

"आप सचमुच मेरे चिरऋणी हो गये हैं?"

"क्यों न होता? यहाँ इस तरह मेरी देख-रेख कौन कर सकता था? इसके बदले में मैं जो भी दूँ वह बहुत थोड़ा होगा।"

अच्छा तो इसके बदले आप कुछ देना भी चाहते हैं तो मैं आपको तुरन्त सारे ऋण से मुक्त हो जाने का उपाय बताये देती हूँ। यह न सोचिए कि आपके धन इत्यादि की लालच से मैं यह काम कर रही हूँ।

आप अपने देश से इतने अधिक दूर आ पड़े हैं—यहाँ आपका कोई है नहीं और मैंने सुना था कि हिन्दोस्तानी लोग संसार को माया मानकर अपने स्वास्थ्य तक की परवा नहीं करते। ऐसे आप लोग न होते तो इस अमरीका की तरह आपके देश की भी शक्ति क्यों न होती!

कमल चुपचाप सोचता रह गया। यह देखकर कैथरिन ने कहा—आप मेरी खरी-खरी बातों से रुष्ट तो नहीं हो रहे हैं? चालीस करोड़ लोगों के देश की अगर सचमुच वैसी दुर्गति हो जैसी आप अपने देश की बतलाते हैं तो वहाँ के निवासियों की सङ्गठनहीनता से हम लोगों को भी दुःख होता ही है। आपकी सज्जनता और विद्वत्ता आदि से तो आपके देश के प्रति मुझे कहीं अधिक ममता हो गई है। अच्छा, क्या मैं पूछ सकती हूँ कि आप रूस क्यों आये?

कमल—आप सब कुछ पूछ सकती हैं। मैं अपने देश की प्राचीन शासन-पद्धतियों पर कुछ पुस्तकें आपको आज दूँगा। ऐतिहासिक काल के प्रारम्भ से अभी डेढ़-दो सौ साल पहले तक वह देश कैसा हरा-भरा और समृद्ध था, इस सबके बारे में आपको उनसे ठीक जानकारी हो जायगी, मैं आपसे अब तभी पूरबी और एशियाई सङ्घटन पर बातें कर सकता हूँ जब आप हमारे बारे में कुछ वास्तविक बातों का अध्ययन कर लें। रहा, मेरे रूस आने का कारण—वह मैं अभी बतलाये देता हूँ। विश्व-कवि श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर को आप जानती ही हैं। उन्होंने इस देश के विषय में कहा है कि जिस स्वर्ग की, जिस अपूर्व आनन्द के आविर्भाव की, कल्पना वे किया करते हैं उसी की ओर उन्होंने रूस को प्रत्यक्ष बढ़ते हुए देख लिया। मैं तो वह स्वर्ग रूस में अवतरित मान चुका था। गत युद्ध का मेरी दृष्टि में एक यही सुफल हुआ है। इसलिए अपनी डाक्टरी की खोजों को पूर्ण करने के लिए मैं वहाँ गया।

कैथरिन—क्या सचमुच आप कोई राजनीतिक नेता नहीं हैं?

कमल—नेता क्या, मुझे तो उस क्षेत्र में सिपाही बनने का अवसर भी कभी न मिला। मेरी उस ओर रुचि बढ़ते देखकर मेरे बड़े भाई ने

मुझे विदेश भेज दिया। शायद उन्हें भय हुआ कि मैं पकड़कर जेल में डाल दिया जाऊँगा।

कैथरिन—वे क्या करते हैं?

कमल—वे रईस हैं। अधिकांश रईस लोग स्वयं कुछ करना-धरना अपनी शान के विरुद्ध समझते हैं। पर समाज-सुधार में वे बहुत आगे हैं। उन्होंने अपना विवाह एक अमरीकन महिला से किया है।

कैथरिन हँसकर बोली—अच्छा, तभी आप भी अमरीका आये हैं। आपके बड़े भाई यहाँ कब आये थे?

कमल—वे कभी अमरीका नहीं आये—वहीं हिन्दुस्तान में उन्होंने ऐसा विवाह किया। पर उसका वहाँ के अधिकांश अमेरिकन लोगों की ओर से भी बहुत विरोध हुआ, हिन्दुस्तान के पुराने विचारवाले दल के द्वारा तो हुआ ही।

कैथरिन—मैंने तो यही समझा था कि हिन्दुस्तानी लोग केवल दर्शन-शास्त्र में बढ़े-चढ़े थे। अमरीका में भी स्वामी विवेकानन्द और स्वामी राम के बाद बहुत से दर्शनशास्त्री हो गये थे। कुछ अब भी हैं। उनमें से अपने राजनीतिक काम के सिलसिले में दो-एक से मिलने-जुलने की ज़रूरत मुझे भी जब-तब हुई है; क्योंकि जो भौतिक विजय को कोई विजय ही न माने उसी का उसकी आत्मिक उन्नति के नाम से पूरी तरह भौतिक दोहन और शोषण सम्भव है।

कमल ने आश्चर्यान्वित होकर पूछा—तो क्या आपका सम्बन्ध अमरीका के किसी विशेष राजनीतिक दल से है? और क्या ऐसे ही शुभ उद्देश से आपने मेरे साथ फिलास्फी की बातें की हैं? कैथरिन ने गम्भीरता से उत्तर दिया—आपको इससे इतना अधिक अचरज क्यों होता है? हम लोग हिन्दुस्तानी तो हैं नहीं, जिनकी दुनिया घर और परिवार तक ही सीमित रहती है। मैं ही नहीं, आज-कल के स्वतन्त्र देशों के पुरुषों की भाँति वहाँ की स्त्रियाँ भी किसी न किसी दल की होती हैं। पर मैं उस भयङ्कर राजनीति से छुटकारा पा चुकी हूँ।

कमल—फिर भी आपने आज मुझे यह क्यों बतला दिया कि आप किसी राजनीतिक दल की हैं ? क्या अब यह बात मि० कामरोव से कहना मेरा कर्तव्य नहीं है ? किसी न किसी दल में तो आप अब भी हैं न ?

कैथरिन—मैंने अभी आपको बतलाया ही क्या है ? मैं अमरीका की नहीं हूँ, न यहाँ के दलों में से किसी से मेरा कुछ भी सम्बन्ध है। यहाँ के दोनों शक्तिशाली राजनीतिक दलों—रिपब्लिकन और डिमोक्रैट—के बारे में तो अब सभी शिक्षित लोग यह जान गये हैं कि ये बड़े-बड़े व्यवसायियों के हाथों में हैं। है यही बात या नहीं ? यहाँ के प्रसिद्ध उपन्यास-लेखक, अपटन सिनक्लेयर, ने अपने 'तैल', 'जङ्गल' आदि उपन्यासों में इनकी सब पोल खोल दी है। आपने इन्हें पढ़ा ही होगा। पढ़ा है न ? अब सुनिए मेरा सम्बन्ध एक ऐसे सङ्घ से है जो सभी देशों के लिए है। मानव मात्र का उसके कार्यों से वास्तविक उद्धार होगा। उसके बारे में मैं आपको धीरे-धीरे सब कुछ बतलाऊँगी। आज इतना ही बहुत है।

कमल ने घंटी बजाई। उनका सहायक आ गया। कमल ने उससे कहा—तश्तरियों में कुछ फल लाओ। वह चला गया तब कैथरिन ने हँसकर कहा—इस हब्शी को आपने रूस में अच्छा अपना 'सहायक' बनाया। मैं इसको बोगरोविला की जगह बागड़बिल्ला कहा करूँगी। और इस नाम का मतलब बतला दूँगी—महाविद्वान् !

और वह ज़ोर से हँस पड़ी। खा-पीकर प्रसन्न ढङ्ग से कैथरिन चली गई, किन्तु कमल के मन की प्रसन्नता और शान्ति लेती गई। वह सोचने लगा—यह तो बड़ी भयङ्कर अवस्था है। मैंने समझा था कि कैथरिन शरीर और मन दोनों से सरल है। पर यदि उसका सम्बन्ध किसी भयङ्कर राजनीतिक दल से हो तो क्या उचित नहीं होगा कि मैं कामरोव को इसके सम्बन्ध में सचेत कर दूँ ! या यह अपने को वीराङ्गना सिद्ध करने के लिए ही राजनीतिक दल की सदस्या होने का दम्भ कर

रही है। कामरोव स्वयं तो स्त्रियों से सदा दूर रहनेवाले आदमी हैं, फिर भी वे इसका विश्वास करते हैं, यह कम आश्चर्य की बात नहीं है। क्या वे इसके प्रेम-पाश में तो नहीं फँसे हैं?

सोचते-सोचते थोड़ी देर में उसे नींद आ गई।

× × × ×

वह तभी जगा जब कामरोव उसे देखने के लिए आये। हृष्ट-पुष्ट, लम्बा शरीर, चौड़ी छाती, चौड़ा और चमकता हुआ मुँह। बड़ी-बड़ी आँखों पर शानदार चश्मा। कामरोव सदैव की भाँति ही प्रसन्न थे। उन्होंने कमल से उसके स्वास्थ्य के बारे में प्रश्न करने के बाद कहा—अब तुम जल्दी ही अच्छे हो जाओगे। कैथरिन तुम्हारी ओर बेहद खिंच रही है। मैं चाहता हूँ कि तुम उससे अपने विवाह का प्रस्ताव कर दो। इससे और जल्दी स्वस्थ हो सकते हो।

कमल—यह आप क्या कह रहे हैं? अभी तक तो आप मुझसे यही कहते थे कि मैं किसी सुन्दरी की ओर आकर्षित होकर उससे विवाह कर लूँगा तब मेरे सभी उच्चतर कामों का अन्त हो जावेगा।

कामरोव—सच तो यह है कि मैं कैथरिन को यहाँ छोड़ना नहीं चाहता। उसे अपने देश ले चलना चाहता हूँ।

कमल—तो आप ही अपने विवाह का प्रस्ताव क्यों नहीं करते?

कामरोव ज़ोर से हँस पड़ा। बोला—क्या आप समझते हैं कि मैं उस पर मोहित हो गया हूँ? मैंने अपने आपको जिसे समर्पित कर दिया है उसे नहीं जानते क्या?

कमल—उसके बारे में कई बार सुन चुका हूँ। स्त्रियों के प्रति आपकी विरक्ति भी बहुत कुछ देख चुका हूँ। किन्तु मनुष्य निराकार-पूजा में ही जीवन नहीं बिता सकता, साकार के प्रति प्रेम की ज़रूरत होती ही है।

कामरोव—सब के लिए नहीं। हम चाहें तब भी हमारे पास समय तथा अन्य साधन हैं कहाँ? हमने अपने आपको जिस ओर लगा दिया

है उस ओर लगे रहने के लिए असाधारण शक्ति चाहिए—वह बिना असाधारण संयम के मिल ही कैसे सकती है ? एक सच्चे डाक्टर की तरह तुमने स्वयं ही इसे कई बार स्वीकार किया है।

कमल—तब आप कैथरिन को रूस क्यों ले चलना चाहते हैं ? और आप चाहे जो कहें पर अब रूस की ऐसी दशा तो नहीं है कि आपके पास समय या साधन न हों ! अब तो शान्ति-प्रचार और व्यावसायिक तथा बौद्धिक उन्नति के ही काम हैं।

"इसके अद्‌भुत आकर्षण का उचित उपयोग करने के लिए मैं इसे ले चलना चाहता हूँ। वहाँ इसके जीवन की सार्थकता हो सकती है। शान्ति के समय भी भीतर ही भीतर अनेक अशान्तियों के बवण्डर उठा करते हैं। स्त्रियाँ उन्हें हटा सकती हैं।" कामरोव ने धीरे से कहा।

कमल ने तेज़ी से पूछा—"ज़बरदस्ती ?"

कामरोव—नहीं, स्वाभाविक ढङ्ग से। मैंने कई काग़ज़ों में आज रूसी भाषा में कई बातें लिख दी हैं। कैथरिन किस देश की है, यह तुम्हें पता चला ? मुझे वह यहाँ की तो मालूम नहीं होती ! रूसी भाषा जानती है क्या ?

कमल—मैंने तो उसे यहीं की समझकर उससे कभी कोई ऐसा प्रश्न नहीं किया। कहिए तो अब पूछ लूँ ?

कामरोव—मैंने एक दिन पूछा तो वह हँसकर बोली—"मैं सभी देशों की हूँ।" ऐसा उत्तर तो तुम्हारे देश के कुछ पुराने वेदान्ती लोगों या कुछ पुराने इस्लामी लोगों का हो सकता है या फिर आज-कल के अराजकवादी और समाजवादी दलवालों का। यह कम्यूनिस्ट है या नहीं ? रूसी भाषावाली बातें अभी सर्वसाधारण में प्रकट नहीं की जा सकतीं। एक भाषा छोड़ और में कभी वह कुछ बोली नहीं। मैं उसे सभी बातें धीरे-धीरे बता देना चाहता हूँ। एक संवाददाता मिलने के लिए आया था। उसे बैठालकर तुम्हारे पास चला आया हूँ। जिस काम से मैं अमरीका आया था उसमें पूरी तो नहीं पर यथेष्ट सफलता मिल रही है।

इसमें भी इसका उपयोग किया जा सकता है क्योंकि सुन्दरता के साथ इसमें ज्ञान भी है।

तब इसी सहायता के बारे में वे बातचीत करने लगे। थोड़ी देर बाद ही बागड़बिल्ला ने आकर कहा—कैथरिन आई हैं।

आश्चर्य में आकर कामरोव ने कहा—कैथरिन! उन्हें यहीं आने दो।

२

कामरोव किसी काम से बाहर चले गये थे। वे लौटकर आये तब कैथरिन टाइप कर रही थी। आते ही उन्होंने पूछा—सब ठीक है?

कैथरिन ने कहा—हाँ, कमल की नई दवा आ गई है। वे आज तो और अच्छे हैं।

कामरोव ने हँसकर कहा—ऐसी अच्छी नर्स मिल जाने पर भी न अच्छे हों, यह असम्भव है। लेकिन मैं तो सोचता हूँ कि मैं बीमार होता तो ऐसी नर्स पाकर दस-बारह दिन ज़बरदस्ती बिछौने पर पड़ा रहता।

कैथरिन—आप ऐसा कभी न कर सकते!

कामरोव—क्यों, क्या मैं पुरुष ही नहीं हूँ—क्या मेरे हृदय है ही नहीं?

कैथरिन—नहीं, ऐसे राजनीतिक लोगों को मैं साधारण मानव-श्रेणी से सर्वथा अलग समझती हूँ। आपके पास जिस दिन मुझ जैसी स्त्री के लिए हृदय होगा उसी दिन अपने देश के लिए या अपने उच्च सिद्धान्तों की पूर्ति के लिए कुछ न रह जायगा।

कामरोव ने एक कुरसी पर बैठते हुए कहा—यह नई बात है। अभी तक तो, पिछले इतिहास में या हमारे समय भी, ऐसे लोगों की कभी नहीं रही जो स्त्री के साथ रहते हुए भी सब राजनीतिक काम करते रहे हैं।

हँसकर कैथरिन बोली—इसी लिए काम उतना बढ़िया नहीं हुआ।

कैथरिन की हँसी ने उनकी इस बात का भण्डाफोड़ कर दिया।

कामरोव ने कहा—ओह! तुम मेरे ऊपर व्यंग्य बाण छोड़ रही हो। मैंने अभी तक अपना विवाह नहीं किया, इसी लिए तुम यह सब कह रही हो। सच मानो, मैं विवाह का विरोधी नहीं हूँ—मैं तो उसके विरोधियों का भयानक विरोधी हूँ। मुझे अपने मन के योग्य कोई स्त्री मिली ही नहीं, बस इतनी बात है। अगर तुम अमेरिकन न होकर रूसी होतीं—

एकाएक कामरोव ने खड़े होकर कहा—मैं कमल को देखने जाता हूँ।

उसी समय फोन की घण्टी बजी। कैथरिन ने फोन के पास जाकर उसे सुनकर कहा—'वाशिंगटन समाचार' के संवाददाता आपसे मिलना चाहते हैं।

कामरोव—यह समाचार-पत्र यहाँ की गवर्नमेण्ट का ही पत्र है। संवाददाता को बुलाकर यहाँ बैठा लो और उसे चाय देकर तथा उससे प्रेमपूर्ण बातें करके यह पता लगाओ कि यहाँ के अधिकारीगण भविष्य में सोवियट सिद्धान्तों के प्रति कैसा रुख़ रखना चाहते हैं और जनता में कैसे-कैसे भाव हैं। अब मैं तुम पर पूरा विश्वास करना चाहता हूँ। मैं अभी आता हूँ।

कैथरिन को ऐसी बातें सुनने की आशा कामरोव से कभी न थी। वह बोली—आपकी इस असीम उदारता के लिए धन्यवाद। मैं अपने को आपके विश्वास के योग्य प्रमाणित कर सकने में कुछ उठा न रक्खूँगी। पर आप मेरा अत्यधिक जल्दी विश्वास कर रहे हैं—जब कि मेरे बारे में अभी तक कुछ जानते भी नहीं—

कामरोव हँसकर 'इसकी तुम चिन्ता न करो' कहते हुए बाहर चले गये। जब वह संवाददाता कमरे में आया तो कैथरिन उसे देखकर चौंक पड़ी। वह बोली—"क्या आप ही 'वाशिंगटन-समाचार' के संवाददाता मिस्टर क्लाइव हैं?"

"जी हाँ, आपको सन्देह क्यों है? यह रहा मेरा कार्ड।" कैथरिन ने मन ही मन कहा—इसे अच्छी तरह छकाना चाहिए—धूर्त कहीं का! मिस्टर क्लाइव बनने चला है!

उससे बोली—"आप आराम से बैठिए—मैं सन्देह क्यों करूँगी ? आपके लिए चाय लाती हूँ।"

वह चाय वहाँ नहीं लाई। आकर बोली—"चलिए, उस कमरे में चाय पीजिए।"

तब इस कमरे में ताला बन्द कर और उन्हें दूसरे कमरे में चाय पीता छोड़ नीचे आकर बाहर का ताला लगा वह भी कमल के यहाँ के लिए चल खड़ी हुई !

× × × ×

कैथरिन जब कमल के कमरे के भीतर आई तब कामरोव ने उससे पूछा—क्या बात है ?

कैथरिन ने कहा—वह आदमी बिलकुल झूठा है। मैं 'वाशिङ्गटन समाचार' के संवाददाता मिस्टर क्लाइव को अच्छी तरह पहचानती हूँ। उनका नाम रखकर वह आपको धोखा देना चाहता है और आपसे भेद लेना चाहता है।

कामरोव—और वाशिङ्गटन सभ्यता का केन्द्र कहा जाता है।

कैथरिन—तभी तो वहाँ ऐसे आदमी हैं ! आधुनिक व्यावसायिक सभ्यता धोखा देने और ठगने की योग्यता का ही दूसरा नाम है। मैं उसे ऐसी चा दे आई हूँ जिससे वह धीरे-धीरे बेहोश हो जावेगा। आप चलकर उसकी तलाशी लीजिएगा। 'तुम उसके सामने ही फोन से पूछना कि मि० क्लाइव को उस समाचार-पत्रवालों ने कहाँ भेजा है। चलो, मैं चलता हूँ'।

× × × ×

फोन से पूछने पर मालूम हुआ कि क्लाइव वहीं दफ़्तर में हैं न कि कहीं बाहर ! तब इस बने हुए आदमी ने कहा—यह अच्छी बात है कि आपने सच्ची बात जान ली। मेरा 'वाशिङ्गटन-समाचार' से कोई सम्बन्ध नहीं है। पर जिन लोगों से मेरा सम्बन्ध है वे मुफ़्त में यह जानना नहीं

चाहते कि आपकी अमेरिका से क्या शर्तें हो रही हैं। इसके लिए वे आपको यथेष्ट रक़म देने को तैयार हैं।

कामरोव ने उठकर कहा—"अब आप चुपचाप और तुरन्त बाहर चले जाइए।"

वह व्यक्ति भी उठ खड़ा हुआ और बोला—"मैं बिना अपना काम पूरा किये नहीं जा सकता—चाहे जो हो।"

कामरोव—यह बात है !

नक़ली संवाददाता—हाँ, यही बात है। जितने पृष्ठ आपने इस बारे में टाइप करवाये हैं वे सब मेरे हवाले कर दीजिए, नहीं तो आपकी कुशल नहीं।

कामरोव—क्या तुम जान लेने-देने पर तैयार हो ?

नक़ली संवाददाता—हाँ, और उपाय ही क्या है। मैं पाँच तक की गिनती गिनता हूँ तब तक आप के सब काग़ज़ मेरे सामने आ जाने चाहिएँ।

"क्या तुम मुझे कायर समझ बैठे हो ?"

"नहीं, परन्तु मैं भी मौत के साथ खेलना पसन्द करता है। बचिए—एक-दो-तीन—चार-पाँच।"

पिस्तौल छूट गई, पर व्यर्थ !

कामरोव खड़े हुए हँस रहे थे। पिस्तौल के भीतर कारतूस था ही नहीं।

कैथरिन ज़ोर से हँस पड़ी।

"जाओ—अब चले जाओ।" कामरोव ने कहा।

पिस्तौल लिये हुए वह व्यक्ति दरवाज़े के बाहर निकल गया। तब बोला—"यह अन्तिम अवसर नहीं है, यह जान लीजिए।"

कामरोव ने कहा—"बहुत अच्छा। मैं भूलूँगा नहीं। वह चला गया।"

कैथरिन ने पूछा—"ऐसा क्यों किया ! दण्ड—पुलीस—"

कामरोव ने बीच में ही कहा—"पुराने ढङ्गों को तुमने अब भी अपने मन में स्थान दे रक्खा है ?"

कैथरिन ने कहा—"उसका इस तरह पिस्तौल छोड़ना शायद नये ढङ्गों में है ?"

कामरोव—"तो क्या हमें भी इनका अनुकरण करना है। तुम्हारा चाय पिलाने का ढङ्ग तो नया था न ? तुमने कारतूस निकाल कर अच्छा नहीं किया लेकिन ऐसी अजीब, थोड़ी देर के लिए ही बेहोश करनेवाली, चाय ख़ूब बनाई। पर मैं वैसे भी उसे परास्त कर सकता था।

कैथरिन ने मुँह बनाकर कहा—"भविष्य में मैं इसका ध्यान रखूँगी।"

३

कैथरिन जिस 'टाइप राइटिङ्ग ब्यूरो' से यहाँ आई है उसे फिर यह सूचना देनी आवश्यक समझकर कि अभी वह वापिस न जा सकेगी, मि० कामरोव ने स्वयं फोन किया। वहाँ से उत्तर मिला—"धन्यवाद; आप जब तक चाहें तब तक कैथरिन से काम ले सकते हैं।"

तब कैथरिन के पास जाकर कामरोव ने कहा—"टाइप समाप्त करते ही एक बार मुझे फिर चाय बनाकर देने की कृपा करना। तुम्हारी ऐसी चाय तो यहाँ कोई बना नहीं सकता। अब मैं उस चाय की तारीफ़ कर रहा हूँ जो तुमने मुझे पीने को दी थी। तुम हमारे देश के लोगों के साथ ज़रूर रही हो।"

कैथरिन चुप रही।

जब कैथरिन टाइप का काम ख़तम कर चुकी तब वह फिर चाय लाई। कामरोव ने उसे पीते हुए कहा—"मैंने रशियन भाषा में जो कुछ लिख दिया था उससे तुम्हें परेशानी हुई होगी पर वह अभी गोपनीय बात है।"

कैथरिन ने आश्चर्य का भाव प्रकट करके कहा—"अगर वह छिपाने योग्य बात थी तो आप उसे इस तरह लिखकर क्यों छोड़ गये ?"

कामरोव—क्यों ? क्या तुमने उसे पढ़ लिया ? तुम रशियन पढ़ सकती हो ?

कैथरिन—क्यों नहीं ? मैंने तो उसे अमेरिकन भाषा में टाइप भी कर डाला है ?

"देखूँ !"

कैथरिन ने वह पृष्ठ दिखलाया।

कामरोव—तुम अमेरिकन हो या रशियन ?

कैथरिन—मैं लड़कपन से अमेरिका में रही हूँ, पर मेरे माता-पिता—दोनों—रशियन थे।

कामरोव—और अपने बारे में कुछ नहीं बतलाना चाहती ?

कैथरिन—और क्या बतलाऊँ ? हमें आपकी गवर्नमेण्ट का ढङ्ग पसन्द नहीं है। मेरे माता-पिता—अन्य अनेक लोगों के साथ—अपने देश से भाग आये। उस समय एक ओर यहाँ वे लोग भागकर रह रहे थे जो ज़ार के दूरस्थ सम्बन्धी थे और दूसरी ओर वे लोग जो आपके नये ढङ्ग से असन्तुष्ट थे।

कामरोव—पुराने शासन-विधान तो अब चल नहीं सकते। अमरीका, स्विटज़रलैंड, फ़्रांस, इँग्लैण्ड—सब के नये शासन-विधान हैं। रूस इन सब से आगे है—पर गवर्नमेन्ट बनाना और चलाना कोई खेल नहीं है, जिसे सभी समझ सकें और जिससे सभी सन्तुष्ट हो सकें।

कामरोव का स्वर गम्भीर था, पर उनकी आँखों में उस समय भी कोमलता थी।

कैथरिन ने उनकी ओर देखा और कहा—"खेल हो या बड़ा ही कठिन और गम्भीर काम हो पर जिससे भी लोगों को असहनीय चोट पहुँचेगी उसे कोई अच्छा कैसे कह सकेगा ?"

कामरोव—इस संसार में ऐसी कोई गवर्नमेण्ट नहीं हो सकती, जिससे सबको एक सा सन्तोष मिल जाय, या किसी को भी चोट न पहुँचे।

"तब तो अराजकवादियों की ही विजय होगी। सभी गवर्नमेण्ट बुरी हैं तो कोई भी गवर्नमेण्ट रहे ही क्यों ?"

कैथरिन के बोलने का ढङ्ग भी यथेष्ट गम्भीर था। वह बहस के अखाड़े में अपने को किसी से कम नहीं समझती—यह स्पष्ट था।

कामरोव ने कहा—"तुम यह ठीक नहीं कह रही हो। अगर हम ऐसा खाना न बना सकें जो सबको सन्तोष दे तो क्या भोजन बन्द कर देना और लोगों को भूखों मार डालना ठीक होगा। अराजकवाद केवल मूर्खता है। मनुष्य-समाज इतना उन्नत कभी नहीं हो सकता कि उसमें बुरे मनुष्य बिलकुल न रहें और दण्ड देनेवालों या सुधार के काम करने-वालों की ज़रूरत ही न रहे। अगर बच्चों और नवयुवकों को पढ़ाने और तरह-तरह के कामों में सुशिक्षित करनेवालों की सदैव आवश्यकता रहेगी तो देश और समाज के नेताओं और सञ्चालकों की भी।"

कैथरिन—अगर बन्दर की अवस्था से हम इस सभ्य अवस्था तक पहुँच गये हैं तो आगे के लिए आशा क्यों नहीं की जा सकती? अब वैज्ञानिकों को इसमें सन्देह तो है नहीं कि एक समय हम सब बन्दर की सी अवस्था में थे। आगे हम ऐसे क्यों नहीं हो सकते कि प्रत्येक व्यक्ति सहज ही अपनी अच्छाइयों का ही विकास करने में लगा रहे?

कामरोव—इस विषय पर तुम कमल से बातें करना। बिलकुल अच्छे हो जाने पर वह तुम्हें विस्तृत रूप से बतलावेगा कि इस पर वैज्ञा-निकों में कितना मतभेद है और कितना मतैक्य। वह यह भी बतला-वेगा कि अधिकांश हिन्दोस्तानी लोग और अन्य कई देशों के लोग भी किस तरह सबसे पहले सतयुग मानते थे, फिर धीरे-धीरे अच्छाइयों की कमी या मानव-अवनति और अन्त में कलियुग तथा प्रलय। वे विकासवाद न मानकर उसका सर्वथा उलटा मानना ठीक समझते थे—ह्रासवाद या निराशावाद।

कैथरिन ने सोचा कामरोव ने हार मान ली। वह तेज़ी से बोली। यह सब पश्चिमी लोगों का हिन्दोस्तानियों के बारे में झूठा प्रचार है। जिस देश ने कृष्ण, बुद्ध आदि क्रान्तिकारियों को जन्म दिया उसे अन्धविश्वासी कहना अपना अज्ञान प्रकट करना होगा, और कुछ नहीं।

दर्शन-शास्त्रों में ही नहीं, आधुनिक रसायन-शास्त्र आदि जैसी बातों में भी वह बहुत बढ़ा-चढ़ा था। उनके ग्रन्थों में वायुयान का नाम ही भर नहीं है, उसके बनाने की तरकीबें भी हैं। रसों में अब भी डाक्टर लोग उनकी बराबरी नहीं पाये। समुद्री जहाज़ों में तो वे सबसे आगे थे। यह सब आप मानने को तैयार हैं या नहीं? स्वाधीन हो जाने पर क्या वे फिर वैसे ही बढ़े-चढ़े न हो सकेंगे?

कामरोव ने जान लिया कि कमल की बातों का कैसा प्रभाव कैथरिन के मन पर पड़ रहा था। उन्होंने इन बातों का न तो समर्थन किया न प्रतिवाद। वे बोले—"अच्छा, आपको भूख लगी है या नहीं? आज से मेरे साथ खाना खाने का आप वादा कर चुकी हैं। मैं पास ही के छोटे होटल में चलना चाहता हूँ। वहीं के लिए आपने कहा था न?"

"हाँ, मैं तैयार हूँ—भूख मुझे भी लगी है।"

दोनों चल खड़े हुए। वे कैसे जानते कि दोनों एक-दूसरे के जाल में फँस रहे हैं। कैथरिन मन ही मन कह रही थी—"सभी बातों में पराजय—विचारा कामरोव।" और कामरोव सोचता था—"होटल में अपनी हार देखकर यह क्या कहेगी?"

४

जब कैथरिन कामरोव के साथ होटल में पहुँची तब उसके भीतर बीस-बाईस व्यक्तियों को कामरोव की प्रतीक्षा करते पाया। वे सब इनके पहुँचते ही उठ खड़े हुए। कामरोव ने उनमें से प्रत्येक का कैथरिन के साथ परिचय करवाया। इससे कैथरिन झुँझला उठी। इन इन्तज़ार करनेवाले व्यक्तियों में से कुछ को वह पहले से जानती थी और उसकी मुख-मुद्रा से यह स्पष्ट था कि उनसे मिलकर उसे हर्ष नहीं हुआ। इतना ही नहीं, उसने अपने मन में कई बार कहा—कामरोव वास्तविक रूस का शत्रु है। मुझे उसका विरोध करना ही पड़ेगा। मेरे साथियों

का इसके बारे में उचित विचार था। मैंने ही भूल की है। इसने इन सबको यहाँ पहले से बुला रक्खा था और मेरा अपमान करने के लिए मुझे भी यहाँ लिवा लाया। मैं और ये लोग !

किन्तु उसे बहुत आश्चर्य हुआ जब खाना खाते ही खाते कामरोव ने रूस की बात छेड़कर कहा—"मित्रो ! मैं जिस काम से अमरीका में आया था वह सन्तोषदायक रीति से समाप्त हो गया। जितना धन मैं चाहता था उतना मुझे यहाँ से मिल जायगा, जो-जो चीज़ें मैं इस देश से चाहता हूँ उन्हें भी ये सहर्ष देंगे और जो-जो वस्तुएँ मैं अपने देश से देना चाहता हूँ उन्हें लेने में इन्हें तनिक भी आपत्ति नहीं है। कुछ वस्तुओं के परिमाण के बारे में अभी कुछ मतभेद है पर मुख्य बातों में समझौता हो जाने के कारण यह मतभेद भी शीघ्र ही दूर हो जायगा। हम सभी देशों को आर्थिक स्वतन्त्रता देना सच्चे लोक-तन्त्र का आधार मानते हैं।"

कैथरिन बोल उठी—"तो दूसरे देश से धन क्यों लिया जा रहा है ? और क्या सब देशों को ऐसी न्यायपूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई है जैसी आप कह रहे हैं ?"

दो आदमियों ने उठकर कहा—"आप किस पार्टी की हैं ?"

कैथरिन—मैं मानव-पार्टी की हूँ।

उन दो में से एक ने कहा—"और क्या हम सबको आप पशु-पार्टी का समझती हैं ?"

कैथरिन—मैं तो ऐसा नहीं समझती। आप सब मेरे देश के हैं। अपने देश के लोगों को मैं पशु-पार्टी का कैसे समझ सकती हूँ ? पर अमरीका से धन लेने का समर्थन करना किस तरह उचित कहा जा सकता है ?

"कैथरिन से स्पष्ट बात की जा सकती है ?" उनमें से एक ने पूछा।

कामरोव ने कहा—"हाँ, हाँ, निस्सन्देह।"

तब वह कैथरिन की ओर फिरकर बोला—"आप साफ़-साफ़ सुनिए। यह धन देकर अमरीका हमारे साथ बँध जाता है—उसका स्वार्थ और रूस का स्वार्थ इस तरह एक-दूसरे के विरोधी न रहेंगे। और अधिक जानना

२

चाहिए तो स्वयं कामरोव महोदय आपको विस्तार से बता देंगे। पर क्या सब देशों के लोग आपकी मानव-पार्टी में शामिल हो सकते हैं?"

कैथरिन—होना तो यही चाहिए।

कामरोव—मैं यह नहीं मानता। मैं यह किसी तरह नहीं मान सकता। हाँ, यहाँ जो लोग आज इस समय हम लोगों के साथ बैठे हैं इनमें से एक के भी साथ मेरे सिद्धान्त नहीं मिलते। ये लोग ज़ार के दूरस्थ सम्बन्धी होते हैं, पर मैंने इन्हें यहाँ इसलिए बुलवाया है कि मैं इन्हें विश्वास दिलाऊँ कि मैं चाहता हूँ कि ये लोग अपने देश—रूस—शीघ्र से शीघ्र लौट चलें। इनके निर्वासन के लिए जो क़ानून अब तक मौजूद हैं उन सबको मैं अलग करवा देने को तैयार हूँ।

यह सुनते ही उन सब लोगों ने खड़े होकर हर्षसूचक ध्वनि की और फिर बैठ गये।

कैथरिन—पर क्या यही स्वतन्त्रता आप उस दल के लोगों को भी देने को तैयार हैं जो उग्र दल के समझे जाते हैं?

कामरोव—निस्सन्देह, बशर्ते कि वे रूस में अराजकवाद न फैलावें।

कैथरिन—इन लोगों के साथ भी आपने कोई ऐसी शर्त रक्खी है।

कामरोव—अवश्य। पर इनसे अराजकवाद का नहीं, बेहद प्रभुत्व तथा पूँजीवाद के प्रचार का डर है। इसके लिए हमने उचित उपाय पहले से सोच लिये हैं। हम किसी को एक निर्धारित सीमा के बाहर धन न रखने देंगे, न किसी को मनमाने अधिकारों का उपयोग करने देंगे।

कैथरिन—व्यक्तियों को धन रखने का अधिकार बच रहेगा?

कामरोव—इसके न रहने से हानि ही होती है। ऐसा अधिकार रहने से यदि किसी स्त्री का पति ठीक तरह काम न करे या अपना धन व्यर्थ खो दे तो स्त्री को अधिकार होता है कि चाहे तो अपने पति को एक पैसा न दे, या जब दे तब उसके सुधार के लिए कड़ी से कड़ी शर्तें कराकर दे। इसी तरह और कई लाभ हैं।

"मैं अभी आती हूँ" कहकर कैथरिन एक दूसरे कमरे में गई, जहाँ फोन लगा हुआ था।

उसने फोन से एक विचित्र भाषा में, जिसे वहाँ कोई समझ न सकता था, कहा —"कामरोव पर हमला करना बड़ी मूर्खता होगी। आप लोग ऐसा प्रयत्न न कीजिएगा। यहाँ काफ़ी आदमी हैं और मैं ऐसे आक्रमण की आवश्यकता कुछ भी नहीं देखती।...हाँ, यह हमला हमारे लिए और हमारे देश के लिए हानिकारक होगा—ज़रूर हानिकारक होगा। कामरोव को हम लोग ठीक तरह समझ नहीं पाये। मैं उसे समझने का पूर्ण प्रयत्न कर रही हूँ। जल्दी करना ठीक नहीं है—उससे काम बनेगा नहीं, बिगड़ ही सकता है।"

एक सप्ताह बाद कामरोव कैथरिन के साथ होटल गये। होटल से लौटने पर कैथरिन को कामरोव के साथ-साथ कमल के कमरे में जाना पड़ा, क्योंकि कामरोव की ऐसी इच्छा थी।

कमल से कामरोव ने कहा—"आज यहाँ का काम पूरा हो गया। अब मैं कल लौट जाना चाहता हूँ। तुम अभी कुछ दिनों यहीं रहना। पूर्णतः स्वस्थ हो जाने पर तुम्हें इँगलैण्ड जाना होगा।"

कमल—मैंने एक बात सोची है। आप मेरे स्थान पर कैथरिन को वहाँ क्यों नहीं भेज देते ?

कामरोव ने आश्चर्यचकित दृष्टि से कैथरिन की ओर देखकर कहा—"क्या तुम वहाँ जाने को तैयार हो ?"

कैथरिन—मैं कैसे हो सकती हूँ ? मैं तो इस समय पहले-पहल ऐसी बात सुन रही हूँ। अमरीका से मैं अब तक कभी किसी दूसरे देश नहीं गई। इँगलैण्ड जाने की मेरी इच्छा ज़रूर है, पर आपके काम से मैं वहाँ न जा सकूँगी।

कामरोव—हम लोगों के प्रति तुम्हारा विरोध ज्यों का त्यों बना हुआ है।

कैथरिन—आप लोगों के प्रति नहीं, आप लोगों की राजनैतिक तथा सामाजिक सम्मतियों, नियमावलियों और व्यवस्थाओं के प्रति। आप जो कुछ कर रहे हैं उससे बुरी प्रणालियों और वैसे ही बुरे नियमों के नाम भर बदल जाते हैं, उनके वास्तविक रूप में बहुत ही कम अन्तर आता है। इसलिए मानव-समाज के कष्ट संसार भर में ज्यों के त्यों बने रहेंगे। यदि हम ऐसा समझने पर भी आपके नियमों आदि का समर्थन करें तो वह केवल छल होगा—भयानक धूर्तता होगी, अपने आपको, अपने देश को और संसार भर को ऐसा गहरा धोखा देना होगा, जैसा उसे अब तक कोई नहीं दे सका। मैं ऐसा काम नहीं कर सकती। जो कुछ मैंने आपका काम किया है उसी के लिए मुझे यथेष्ट पश्चात्ताप हो रहा है।

कामरोव—मैं तुम्हारी स्पष्टवादिता की प्रशंसा करता हूँ। मैंने समझा था कि तुम अपने दिल में मेरी बातों को कुछ स्थान दे सकी हो। मैं देख रहा हूँ कि यह मेरी भूल थी। किन्तु मैं अभी निराश नहीं हूँ। सच तो यह है कि इतनी जल्दी तुममें परिवर्तन की आशा करनी ही मेरी भूल हुई है।

कमल—हाँ, इतने कम समय में ऐसा तीव्र मतभेद कैसे मिट सकता है—बल्कि इस समय की कार्यवाही देखकर कैथरिन के मन को चोट पहुँचना ही स्वाभाविक है।

कामरोव—मैं अभी मोन्टी कार्लो जाऊँगा। वहाँ तक तो तुम मेरे साथ चलो।

कैथरिन—मुझे खेद है, मैं नहीं जा सकती।

कामरोव—जो सुअवसर तुम्हें आज मिल रहा है वह इस जीवन में शायद फिर कभी न मिले, इस पर ख़ूब सोच-विचार कर लो।

कैथरिन—आपकी महती कृपा के लिए अनेक धन्यवाद। किन्तु मैं ख़ूब सोच चुकी।

कामरोव ने उठकर कहा—"अच्छी बात है। मैं जाता हूँ।" और वे वहाँ से चले गये।

कैथरिन ज्यों की त्यों बैठी रही।

× × × ×

कमल ने कहा—"मैं तुम्हारे विचारों की प्रशंसा करता हूँ, किन्तु जो कुछ तुम कर रही हो उसको मैं ठीक नहीं समझता।"

कैथरिन ज़ोर से हँस पड़ी।

कमल ने चोट खाये हुए प्राणी की भाँति पूछा—"यह हँसी किसलिए?"

कैथरिन—मैंने हिन्दोस्तानियों के स्वभाव की विशेषता के बारे में बार-बार यह बात पढ़ी थी कि उनके सिद्धान्त संसार के अन्य सभी व्यक्तियों के सिद्धान्तों से बढ़कर हैं पर कार्यक्षेत्र में वे किसी काम के नहीं रह गये हैं। आपमें मैं इसे प्रत्यक्ष देख रही हूँ। पहले भी मैंने आपके बारे में यही धारणा की थी और आपसे यह कह भी दिया था।

कमल—हिन्दोस्तान कोई छोटा सा देश नहीं है। वहाँ के सभी लोगों की ऐसी विशेषता मान लेना क्या उस देश के प्रति अन्याय करना नहीं है? मैं भी इसे पहले आपसे कह चुका हूँ।

कैथरिन—अगर वहाँ के अधिकांश लोग ऐसे न होते तो संसार का इतिहास अब तक दूसरे ही प्रकार का होता।

कमल—यों तो सभी देशों और संसार भर का इतिहास न जाने कितना बढ़िया होता। अगर योरप के लोग आपस में इस तरह न लड़े होते तो! क्या यह आप वर्तमान युग के संसार भर के लोगों के बारे में नहीं कह सकतीं?

कैथरिन—आप प्राचीन युग के हैं क्या? मैं तो आपके बारे में यह कह रही हूँ—मेरे विचारों के आप प्रशंसक बनते हैं और आगे बढ़ ही नहीं सकते?

कमल—मैं अपवाद रूप हूँ। मैं तो कहता हूँ कि मैं जड़ हूँ, न कि चेतन। पक्षाघात का फल आप जानती हैं?

कैथरिन—ज़रूर। आपके देश भर को यही रोग है—वहाँ के सभी विद्वान् लोग ऐसा ही कहते हैं?

बहस तेज़ हो गई !

कमल ने कहा—"यह असम्भव है। क्या आपकी ऐसी बात किसी तरह सच के निकट कही जा सकती है ? आप जान-बूझकर मेरे देश का अपमान करना चाहती हैं क्या ?"

कैथरिन ने इसका कुछ देर तक उत्तर न दिया। फिर वह बोली—"मेरे अपमान करने या न करने का यह प्रश्न है क्या ! आप कामरेव की ओर से इँग्लैण्ड जाइए और वहाँ जाकर देखिए कि लोग आपको अब भी क्या समझते हैं।"

"कौन लोग ? मैं तो कह चुका कि प्रत्येक देश में कई प्रकार के लोग होते हैं। सभी जगह उदार और अनुदार—साम्यवादी और अपरिवर्तनवादी या कट्टर दल के—लोग मिलेंगे।" कमल ने एक लम्बी साँस खींचते हुए कहा।

"फिर भी देश का शासन जो लोग चलाते हैं—"

बीच में ही कैथरिन का यह वाक्य काटकर कमल बोल उठा—"शासन-सूत्र सदैव एक दल के हाथ में नहीं रहता। सब देशों में कई दल हैं और शासन कभी एक दल के लोगों के हाथ में आता है कभी दूसरे के। नये-नये दल भी बनते जाते हैं। इसी प्रकार जनता का विकास होता है।"

कैथरिन ने तेज़ी से कहा—"इसी प्रकार जनता बेवक़ूफ़ बनाई जाती है। पर कभी जनता का युग भी आता है।"

कमल—अगर कभी सब लोग डाक्टर या वैद्य बन सकें, अर्थात् शरीर के रोगों को समझ सकें, या कभी सब लोग वैज्ञानिक बन सकें, तो यह भी सम्भव है कि कभी सब लोग राजनीतिवेत्ता बन जायँ और शासन-सूत्र को किसी दल-विशेष के सहारे की ज़रूरत न रहे।

कैथरिन ने कटु स्वर में कहा—"आप इसे असम्भव समझते हैं ? न कभी ऐसा हुआ, न होगा। सब देश रोगी रहेंगे और आप तथा आपके साथी डाक्टर होने का बहाना कर उनके रक्त की एक-एक बूँद तक निकाल लेंगे !"

कमल—जो कुछ हम चाहते हैं वह यह नहीं है कि सब डाक्टर और हकीम बन जावें बल्कि यह कि सब नीरोग रहें। इसी तरह सबको राजनीति-विशारद न बनाकर भी उन्हें सुखी किया जा सकता है और लुटने से बचाया जा सकता है।

"डाक्टरों और राजनीति-विशारदों के चक्कर में हमें जनता को नहीं रखना है।" कैथरिन ने दृढ़ता से कहा।

कमल—ऐसा हो सके तो सर्वोत्तम हो, पर यह है कवि-कल्पना। आप ही मेरा कहना मानकर इँगलैण्ड और जर्मनी जाइए। व्यावहारिक जगत् से दूर भटकते रहने से कुछ न होगा। वहाँ जाने से आपको भी बहुत लाभ होगा।

कैथरिन—इस समय के इँगलैण्ड से ? और जर्मनी से ?

कमल—हाँ, इस समय के इँग्लैण्ड से ही और जर्मनी से भी। जर्मनी के नाज़ीवाद या जर्मन जाति को सर्वश्रेष्ठ ठहराकर सबको नीचा दिखाने के प्रयत्न वहाँ आप देखिएगा। जर्मनी के गाँव-गाँव तक में।

"इसके देखने से क्या लाभ होगा!" कैथरिन ने कुछ उत्तेजना के स्वर में पूछा।

"आप अपनी अव्यावहारिकता देख सकने में समर्थ हो जावेंगी।" कमल ने शान्तिपूर्ण ढङ्ग से उत्तर दिया।

कैथरिन—क्या इँग्लैण्ड, फ्रांस आदि कभी ठीक तरह व्यावहारिक बन सके ?

कमल—यह प्रश्न व्यर्थ है। मैं तो कहता हूँ वहाँ जाइए। फ्रांस जाइए; जर्मनी जाइए। और मेरे साथ मेरे देश हिन्दोस्तान भी चलिए। सब कुछ अपनी आँखों से देखिए। संसार की नब्ज़ देखे बिना ही उसके स्वास्थ्य के लिए ओषधि देना क्या ठीक कहा जा सकता है ? पहले रोग समझ लीजिए, फिर दवा दीजिएगा।

कैथरिन—अच्छा, मैं अभी इँगलैण्ड जाऊँगी, पर रोग समझने नहीं बल्कि रोग की ओषधि के साथ। सभी देश रोगी हैं और सबकी दवा

हमारे पास है यह मैं आपको दिखला दूँगी । कैथरिन की उत्तेजना बढ़ गई थी ।

"इससे बढ़कर क्या होगा ? ऐसा हो तो मानों अमृतवर्षा हो—तब तो आप सचमुच मुझ जैसे व्यक्ति को भी पूर्णत: नव जीवन दे देंगी ।" कमल का ढङ्ग उतना ही अधिक उत्तेजनाहीन था ।

"पर आपने तो एक दिन कहा था कि आपको मुझ पर विश्वास है ।" कैथरिन मुँह बनाकर बोली ।

कमल—आपकी हृदय की विशालता पर मेरा विश्वास है ।

कैथरिन—मन की शक्ति पर नहीं ? बुद्धि पर नहीं ?

"अब इन पर भी हो जायगा ।" कमल ने हँसते-हँसते कहा ।

कैथरिन—कामरोव पर आपका पूरा विश्वास है ?

कमल—उनके सिद्धान्तों और उनकी नीति पर ? नहीं, मेरा उनसे बहुत मतभेद है । पर मुझे और कोई उपाय दिखाई नहीं देता ।

कैथरिन—यही हिन्दोस्तानियों की कमज़ोरी है ।

कमल—आप फिर भूल कर रही हैं । हिन्दोस्तान ने संसार के सभी देशों की कमज़ोरी देख ली है और उचित बल का श्रेष्ठ पथ भी पा लिया है । आप ऐसा वाक्य फिर न कहिएगा । मैं कमज़ोर हूँ पर मैं जानता हूँ कि मेरा देश अब कैसा शक्तिशाली बन रहा है ।

'काश मैं तुम्हारे देश भी चल सकती !"

'आप अवश्य चलेंगी ।'

"मैं ! यह किसी तरह सम्भव नहीं है । प्रणाम ।" और वह उठकर चल खड़ी हुई ।

६

जब अमरीका छोड़ने को केवल एक दिवस रह गया तब कामरोव ने अपने कमरे में आने पर 'वाशिंगटन-समाचार' के संवाददाता मिस्टर क्लाइव का कार्ड अपनी मेज़ पर देखा और तुरन्त उन्हें बुलाने को कह

दिया। साथ ही फोन पर जाकर यह पूछा कि मिस्टर क्लाइव अब भेजे गये हैं या नहीं। वहाँ से सन्तोषजनक उत्तर पाकर वे लौटे और मिस्टर क्लाइव से हाथ मिलाकर अपनी कुरसी पर बैठ गये।

संवाददाता ने कहा—सुना है कि मेरे पहले एक दिन एक नक़ली महाशय आ चुके हैं?

कामरोव ने सब हाल बतलाकर पूछा—आप कुछ कह सकते हैं कि ये कौन महाशय थे?

मिस्टर क्लाइव—इस समय तो नहीं कह सकता, पर मैं पता लगा लूँगा और आपको सूचना दूँगा।

कामरोव—मैं तो कल जा रहा हूँ। लेकिन आप मिस्टर कमल को बतला जाइएगा।

क्लाइव—मैंने तो सुना था कि आपकी सेक्रेटरी कोई अमेरिकन हैं।

कामरोव—मैंने टाइपब्यूरो से एक टाइपिस्ट को बुलवाया और उन्हीं को अब सेक्रेटरी की तरह रख छोड़ा है।

क्लाइव—लेकिन ऐसे महत्त्वपूर्ण विषय में किसी साधारण टाइपिस्ट से तो आप बहुत कम सहायता पा सके होंगे।

कामरोव—नहीं, मैंने उन पर पूरा विश्वास किया है क्योंकि मैं जानता हूँ कि विश्वास से ही विश्वास उत्पन्न होता है।

क्लाइव—तो आप कुछ बातें हमारे पत्र के लिए देने को तैयार हैं?

कामरोव—जी हाँ, मैंने वह सब अलग टाइप कराकर रख छोड़ा है। आप इसे पढ़ लीजिए और और जो कुछ पूछना चाहिए पूछ लीलिए। पत्र में यह किसी तरह न प्रकट होना चाहिए कि ये बातें आपको मुझसे मालूम हुई हैं या मैंने कोई चीज़ आपको प्रकाशित करने को दी है।

क्लाइव ने टाइप की हुई सामग्री को पढ़कर कहा—"इसमें सभी बातें यथेष्ट स्पष्ट रूप से लिखी हुई हैं। इसके बारे में मुझे और कुछ नहीं जानना है। पर क्या मैं दो-एक और बातें भी दरयाफ़्त कर सकता हूँ?"

कामरोव—ज़रूर और सहर्ष।

क्लाइव—सुना है कि आप अपने देश की सभी प्रकार की फ़ौजों के आधे लोगों को खेती और व्यापार में लगा देना चाहते हैं, क्या यह ठीक है?

कामरोव—हाँ, इसके सिवा सुख और शांति का और उपाय ही क्या है? जब तक आप लोगों को लड़ाई ही करना सिखाते रहेंगे, तब तक लड़ाई कैसे रुक सकती है? फ़ौजी लोग कोई उत्पादक काम तो करते नहीं—वे देश के लिए क्या उत्पन्न करते हैं या कौन सी चीज़ बनाते हैं? केवल लड़ाई। और उनके लिए कितना अधिक धन ख़र्च करना पड़ता है। यह सब धन किसानों और व्यवसायी लोगों का ही तो होता है।

क्लाइव—उन्हीं की रक्षा के काम में भी तो आता है। बिना ऐसी फ़ौज के आप अपने देश की रक्षा कैसे करेंगे?

कामरोव—अब संसार पहले की तरह असहाय और मूर्ख नहीं है। इस समय सभी देशों का एक कुटुम्ब बन रहा है और बिना ऐसा हुए उनकी उन्नति हो ही नहीं सकती। पृथ्वी के एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैले हुए मानव-समाज में से किसी अंश को भी ऐसा रखना—जो अपने को सबसे बढ़ा-चढ़ा या विशेष पवित्रता, शुद्धता, वीरता, ज्ञान आदि का ठीकेदार समझे—दूसरे अंशों को शक्तिहीन बनाना, उन्हें लूट तथा अन्याय का शिकार करना होगा।

क्लाइव—परन्तु सुना है कि आप ज़ार के बचे-खुचे दूर के राजवंशी लोगों को भी वापस ले जाना चाहते हैं?

कामरोव—यह भी सुन लिया? अमेरिका के समाचारों का प्रबन्ध खुफ़िया पुलिस से बाज़ी लेनेवाला जान पड़ता है। अच्छा, राजवंश के इन लोगों को ले जाने में हानि क्या है, जब कि वे लोग हमारी गवर्नमेण्ट के विरोध में कुछ भी नहीं करना चाहते?

क्लाइव—आप उनसे क्या काम लेंगे?

कामरोव—समाज-सेवकों का। अपनी शक्ति भर मानव-समाज की सेवा करना ही हम सब का मुख्य काम होना चाहिए।

क्लाइव—तो क्या फिर सम्पत्तिशाली लोग आपके यहाँ रह सकेंगे?

कामरोव—एक सीमा तक सम्पत्ति का संचय लोग कर सकेंगे और ऐसे बहुत कम लोग निकलेंगे जो अधिक संचय करना चाहें, जब कि वे देखेंगे कि प्रतिष्ठा का आधार सम्पत्ति नहीं है।

क्लाइव—पर सुख-भोग की वस्तुएँ तो धन से ही पा सकेंगे?

कामरोव—बस एक सीमा तक। ऐसी वस्तुएँ कोई अत्यधिक नहीं चाहता जब कि उसके चारों ओर के लोग उसकी ऐसी अनावश्यक बल्कि हानिकारक कार्यवाही की हँसी उड़ाते हों और आदर के स्थान पर उसका अपमान करने पर उतारू हों। अधिकांश लोग आदर और श्रद्धा पाते रहने के लिए ही ऐसा संग्रह किया करते हैं। पर यह कार्य-धारा पलट रही है।

क्लाइव—क्या अमरीका भी आपके आदर्श को पूरी तरह अपनावेगा? यहाँ तो संसार भर के तैल आदि को हथियाने में और कई व्यापारों में कुबेरपतियों में लाग-डाँट चल रही है। सब अपना ही एकमात्र आधिपत्य चाहते हैं।

कामरोव—ऐसा है अवश्य पर सभी देशों को करना पड़ेगा वैसा ही जैसा इस समय रूस कर रहा है। कुछ देशों में तो बहुत कुछ काम इस दिशा में हो भी चुका है। थोड़े-बहुत ऊपरी मतभेद रह सकते हैं। उनसे कोई हानि नहीं हो सकती।

यह सुनकर क्लाइव चौंक सा पड़ा। फिर कुछ सोचकर उसने कहा—तब तो मुझे आपको विशेष रूप से सावधान करना है। यहाँ कितने ही दल आपके ऐसे सिद्धान्तों के घोर विरोधी हैं। अन्य कई देशों के लोगों के दल भी यहाँ हैं। वे भी आपसे सहमत नहीं। आप सकुशल जहाज़ पर चढ़कर चले जायँ, यह मेरी हार्दिक इच्छा और प्रार्थना है, पर आपको बहुत सावधान रहना होगा। जो हवाई जहाज़ आपको ले जाना चाहता है उस पर तो हरगिज़ न जाइएगा।

कामरोव ने लापरवाही के ढङ्ग से कहा—धन्यवाद। मैं मौत से डरता तो इस पद पर न होता। वे लोग घोर अज्ञानी हैं जो मेरा विरोध करते हैं; लेकिन मैं किसी हवाई जहाज़ से नहीं जाऊँगा। क्लाइव ने मन ही मन कहा—ओह! तुम जैसे लोगों को कैसा असाधारण अभिमान होता है।

७

कमल और कामरोव के साथ बातें करनेवाली कैथरिन और टाइप-ब्यूरो में आकर वहाँ की एक अन्य काम करनेवाली, अन्ना, से बातचीत करनेवाली कैथरिन में ऊपर से देखने पर बहुत ही अन्तर दिखलाई देता है। इस टाइप-ब्यूरो में उसकी न वह भड़कीली पोशाक है, न वह बढ़िया पाउडर, न वह आकर्षक 'लिप-स्टिक'। फ़ाक और हैट तक साधारण हैं। किन्तु बातचीत सुनते ही समझ में आ जाता है कि यह वही अदम्य उत्साह और प्रबल महत्त्वाकांक्षा वाली युवती है, जिसका रहस्य अभी तक कमल और कामरोव में से कोई भी जान नहीं सके।

अन्ना चाय तैयार कर रही थी और कैथरिन अपने पास रखी दो-तीन पुस्तकों में से एक को उठाकर उसके पृष्ठों पर इधर-उधर निगाह डाल रही थी। जब अन्ना ने चाय का प्याला उसके सामने धर दिया तब उसने कहा—कमल को अपनी उस शिक्षा पर गर्व है जो उसने अपने देश में और योरप में पाई है। बुडापेस्ट जाकर 'सर्जरी' की विशेष विज्ञता का सर्टीफिकेट प्राप्त कर लिया और आस्ट्रिया में 'रेडियम-बाथ' से लाभान्वित हो गये। अब रूस में ओषधियों की विचित्र खोज में लगे हुए हैं।

अन्ना ने हँसकर कहा—'रेडयम-बाथ' क्यों? क्या स्वयं ही बीमार पड़ गये थे?

कैथरिन—डाक्टरों का यही हाल तो रहता है। दूसरों का इलाज करते-करते ख़ुद किसी न किसी रोग के शिकार बराबर हुआ करते हैं—और कोई रोग न हुआ तो प्रेम का तो होता ही है!

अन्ना—यह तुम्हारी हृदयहीनता है जो तुम उस कमल के लिए ऐसी कह रही हो जो अपने को जड़ समझ बैठा था और जिसे तुमने ही चेतनता प्रदान की है।

एक घूँट चाय पीकर कैथरिन ने कहा—कुछ नवयुवक कवियों की तरह ये लोग भी सभी युवती और सुन्दरी स्त्रियों से इसी तरह की बातें करना ठीक समझते हैं। इन्हें चेतन से जड़ और जड़ से चेतन होते देर नहीं लगती।

अन्ना—तो क्या तुम समझती हो कि कमल का तुम्हारे प्रति सच्चा आकर्षण नहीं है?

कैथरिन—मैं पन्द्रह-सोलह वर्ष की बच्ची नहीं हूँ जो पुरुष के प्रेम-रहस्य से नितान्त अनभिज्ञ होती है और उसकी वासनापूर्ण बातों को सच्चे प्रेम की बातें समझने की भूल सहज ही कर सकती है। वर्षों साथ रहने पर जो प्रेम होता है उसे ही मैं सच्चा प्रेम कहती हूँ।

अन्ना—तो अभी तुम कमल से क्या चाहती हो?

कैथरिन—उसका सर्वस्व—तन, मन, धन और आत्मा भी।

अन्ना—और बदले में क्या देना चाहती हो?

कैथरिन ने चाय पीना समाप्त करके प्याला अलग रख दिया और तब कहा—बदले में अनन्त प्रेम! प्रेम ही तो वह चाहता है न!

अन्ना—और कामरोव को?

कैथरिन—कामरोव को या तो पिस्तौल का मज़ा चखाऊँगी या ज़हर का।

अन्ना—तो हमला करनेवालों को क्यों रोक दिया था?

कैथरिन—ठठेरे-ठठेरे बदलौवल हो रही है। कामरोव कम काइयाँ तो है नहीं। मैं उसे पास के छोटे होटल में लिवा ले गई, पर जान पड़ता है कि उसने पहले से कुछ आदमियों को निमन्त्रण दे रक्खा था। उन सबको भी उसने वहीं बुला लिया। व्यर्थ में कई व्यक्तियों की हत्या सिर पर लेने से क्या लाभ? और सच तो यह है कि हत्याकारियों

के दल से मैं दूर ही रहना चाहती हूँ। व्यर्थ ही मैंने उनका यह काम लिया।

अन्ना—तुम दयामयी होती जा रही हो। कमल से तुम्हारा दूर रहना अच्छा है।

कैथरिन—अभी तक तो मैंने कभी किसी की हत्या की नहीं। अब ऐसा क्यों करूँ? कमल का चार्ज मैं तुम्हें दे सकती हूँ। चाहती हो? अपने देश के विरुद्ध कहने से वे जितना चिढ़ते हैं, उतना और किसी बात से नहीं। इस विषय में उनकी प्रकृति हम लोगों की ही तरह की हो गई है। उनके देशवालों का तो, मैंने सुना है, एक से अधिक ध्यान मनमाने विचित्र धर्म का है, जिसमें पराधीनता को भी उतना बुरा नहीं समझा जाता जितना अपने देश के दूसरे धर्मवालों के साथ खाना-पीना या भ्रातृ-भाव से रहना। हिन्दू-मुसलमानों को एक साथ रहते एक हज़ार वर्षों से ऊपर हो गये और उनके आर्थिक तथा राजनैतिक स्वार्थ सर्वथा एक हैं फिर भी वे बहकावे में आकर धर्म के नाम से छोटी-छोटी और तुच्छ बातों के लिए लड़ा करते हैं और इस तरह अपनी पराधीनता का पट्टा बढ़ाते जाते हैं। कमल ने इनकी एकता के लिए कुछ काम किया तो दोनों दल में उसके अनेक दुश्मन हो गये।

अन्ना—ऐसा तो सभी बड़े कामों में होता है। क्या कमल को संसार के ऐसे कार्यकर्ताओं के भयानक विरोधों के इतिहास का पता नहीं है? न हो तो सचमुच उनका चार्ज कुछ दिनों के लिए मुझे दे दो।

और वह ज़ोर से हँस पड़ी।

कैथरिन—वैज्ञानिक होने पर भी उन्हें इतिहास, समाज-शास्त्र आदि विषयों में कम रुचि नहीं है। ये सब पुस्तकें जो उन्होंने मुझे दी हैं इन्हीं विषयों की तो हैं। किसी जर्मन लेखक ने एक पुस्तक में यह सिद्ध करना चाहा है कि नाज़ीवाद का मूल हिन्दुस्तान के चाणक्य का कौटिल्य-शास्त्र है। चाणक्य को जर्मनी का बिस्मार्क समझो। बिस्मार्क ने प्रशिया की शक्ति का जैसा संगठन और प्रसार किया वैसा ही चाणक्य ने

अपने समय में मगध प्रदेश का। फलतः मगध के ही शासक ने विदेशी आक्रमणकर्ता सिल्यूकस को हराकर उसकी लड़की से अपना विवाह किया था। असल में उस चन्द्रगुप्त का राज्य एक आदर्श-राज्य हुआ है। उससे नाज़ी-राज्य की तुलना करना उसके गौरव को बढ़ाना नहीं बल्कि घटाना है। पर अब वहाँवाले वैसे विवाहों तक को धर्म-विरुद्ध मानने लगे हैं।

"मैं ये सब पुस्तकें पूरी तरह पढ़ने का समय न निकाल सकी, इसका मुझे सचमुच खेद है।"

अन्ना—तो इन्हें लौटाने की कौन जल्दी है! बल्कि इस तरह लौटा देने से तो वे बुरा ही मानेंगे। मुझे यह कौटिल्यशास्त्र से सम्बन्ध रखनेवाली पुस्तक दे दो और बाक़ी दोनों तुम पढ़ना। पढ़कर लौटा देना।

कैथरिन—नहीं, अब इन सबको तुम अपने पास रख लो। पढ़कर उन्हें लौटा देना। मेरा क्षेत्र अब दूसरा ही है। उनके बुरा मानने की परवा मुझे न करनी चाहिए—क्यों करूँ!

अन्ना—इनमें से किसी में वहाँ के विवाहों के बारे में भी कुछ लिखा है? मैंने सुना है कि वहाँ पहले वर और वधू की जन्मकुण्डली मिलाकर आसमान के ग्रहों की शान्ति की जाती है, तब अनेक ब्राह्मणों को खिलाकर पृथ्वी के देवताओं की। कन्या के घरवाले रुपये न दे सकें तो उनके यहाँ विवाह करने की हिम्मत किसी भी जाति-बिरादरीवाले युवक में नहीं होती—और जाति-पाँति के संकीर्ण दायरे को तोड़ने का साहस बड़े आदमियों को छोड़कर साधारण लोगों में है नहीं। यही वहाँ की नीति है और यही सामाजिक धर्म! मेरी कुंडली की तो बात ही क्या, माँ-बाप तक का पता नहीं है। तब अगर मैं वहाँ पहुँच जाऊँ तो मेरा विवाह तक नहीं हो सकता।

यह कहकर वह फिर ज़ोर से हँस पड़ी।

कैथरिन—मैंने भी सुना था कि यहूदियों की तरह वहाँ वाले भी अपने को ईश्वर की विशेष सन्तान, या 'चुने हुए लोग' समझने लगे थे।

पर अब वह सब पागलों का सा अन्धविश्वास, जान पड़ता है, दूर हो रहा है। तुम चाहोगी तो कमल को तुम्हारे साथ विवाह करने में इन्कार न होगा। हाँ, उससे यह न कहना कि तुम्हारे माँ-बाप का पता नहीं है। अपने को द्विजवर्ण की बताना।

अन्ना—धत्! मैं कमल से विवाह करना क्यों चाहूँगी? विवाह करना होगा तो रूस के इन कामरोव से न करूँगी? अब तो इन्हीं लोगों का ज़माना है। द्विजों से मुझे क्या लेना-देना है। अब हमारी वस्तुएँ पाकर ही उन द्विजों का काम चलता है। वे तो असभ्यों की भाँति हमारे ही आश्रित हैं।

कैथरिन—पर कामरोव ऐसी लड़की से विवाह नहीं कर सकते।

अन्ना—मैं ऐसी ही रहूँगी क्या? जैसी लड़की से वे अपना विवाह करना चाहेंगे वैसी ही मैं बन जाऊँगी।

वे दोनों हँसीं, पर उसके कारण अलग-अलग थे।

कुछ देर में अन्ना ने फिर कहा—"मैं तो समझती हूँ कि कामरोव कमल से कुछ ऐसा काम ले रहे हैं, जिसे रूसवाले न करना चाहते होंगे, जैसे युद्ध के लिए तरह-तरह के गैसों की तैयारी। पिछली लड़ाई पाँच सौ से भी कम टैंकों की बदौलत जीती गई अब तो गैसों से ही कोई देश अग्रणी बन सकेगा।"

कैथरिन को अन्ना की ये बातें कैसी बुरी लगीं यह उसकी मुखमुद्रा से स्पष्ट हो रहा था।

उसने कहा—"तुम कमल से इतना चिढ़ती क्यों हो? उन्हें कमीना कहने का दुस्साहस तुम्हें न करना चाहिए।"

अन्ना दबी नहीं। वैसी ही तेज़ी से बोली—"सभी ग़ुलाम मुल्कों को मैं आज़ाद मुल्कों के मुक़ाबिले बिलकुल गया-बीता और कमीना समझती हूँ—ख़ास कर रङ्गीन जातिवालों को मैं कभी सफ़ेद लोगों की बराबरी करने का दावा करते नहीं देख सकती। प्रकृति ने और दुनिया के चलानेवाले ने ही उन्हें कमज़ोर और रङ्गीन बना दिया है। उनका

शासन-भार हमारे सिर न हो तो वे आपस में कुत्ते, बिल्ली आदि जानवरों की तरह लड़-लड़कर मर जायँ। मोटर और बिजली की चीज़ों का बनाना तो दूर रहा, करोड़ों की लाल्टेनें, साइकिलें, सीने की मशीनें, घड़ी आदि भी हमें उन्हें भेजनी पड़ती हैं। अभी तक उनमें इनके बनाने की भी सभ्यता, बुद्धि और शक्ति नहीं। और वहीं से ये मिस्टर कमल दूसरे देश में हत्याकारक गैस बनाने आये हैं।

नाराज़ होकर कैथरिन उठ खड़ी हुई। बोली—"कुछ अपनी दृष्टि और ज्ञान का विकास करो। मुझे अभी जाना है कुछ प्रमाण है इसका कि कमल इसी के लिए आये हैं कि यहाँ गैस बनावें? ऐसा कोई भी काम उन्होंने किया है? अपने मन से दूसरों के विरुद्ध, चाहे वे किसी देश के हों, ऐसा प्रचार करना अपना छिछोरापन दिखलाना है।"

और उसने जाते-जाते धीरे और शान्त स्वर में कहा—"मुझसे कमल ने एक दिन स्पष्टतः मेरे देश के प्रिंस क्राप्टकिन की तरह कहा है कि उनका कर्तव्यक्षेत्र विज्ञान के ऐसे हानिकारक आविष्कार का नहीं है। बल्कि अपने देश के लिए दूसरे स्वतन्त्र देशों की भाँति विज्ञान का औद्योगिक उपयोग है।"

८

कामरोव जहाज़ पर जाकर बैठ गया। पर उसे जान पड़ता था कि वह एक ऐसी वेदना का अनुभव कर रहा है जिसका उसे अपने चौंतीस वर्ष तक के जीवन में कभी सामना नहीं करना पड़ा। इतने ही में जहाज़ के कप्तान ने आकर कहा—"तीन मनुष्यों को गिरफ़्तार कर लिया गया। वे आप पर हमला करने के लिए ही आये थे।"

कामरोव ने पूछा—"वे किस देश के हैं?"

कप्तान ने कहा—"वे एक देश के नहीं हैं। तीनों तीन देश के हैं। एक रूसी है, दूसरा जर्मन, तीसरा अँगरेज़।"

कामरोव—इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं। मेरे शत्रु सभी देशों में हो गये हैं, पर मेरे मित्र भी सब देशों में हैं। यह स्वाभाविक ही है। आप उन लोगों को छोड़ दीजिए। मैं उनके ख़िलाफ़ कोई कार्यवाही करना नहीं चाहता। एक दिन वे स्वयं ही समझ जायँगे कि मेरे ऊपर हमला करना वैसा ही बुरा है जैसा अपने देश के विरुद्ध आक्रमण करना।

कप्तान के लिए यह विश्वास करना कठिन था कि कामरोव ने ये बातें नशे में नहीं कहीं बल्कि वे पूरे होश-हवास में थे। फिर भी वह वहाँ से चला गया।

कामरोव के मुँह की उदासी और बढ़ गई। "क्या आश्चर्य यदि कैथरिन भी किसी ऐसे दल में हो जो मेरी हत्या कर डालना ठीक समझता है। वह एक साधारण—बहुत ही साधारण—टाइपिस्ट लड़की है और मैं उसे ऊँचा—एकदम ऊँचा—पद देने को तैयार था। पर उसने उसे स्वीकार न किया। एक ऐसी साधारण लड़की क्या कभी ऐसा कर सकती यदि उसका सम्बन्ध किसी न किसी विशेष शक्तिशाली दल से न होता?—और वह उस होटल में एकाएक दूसरे कमरे में गई थी। मैंने रूसी ख़ुफ़िया पुलीस के आदमियों को अपने साथ वहाँ ले जाना ठीक नहीं समझा, पर मुमकिन है कि उनमें से कोई उस होटल में पहले से ही रहा हो। उसने सब कुछ जान लिया होगा। लेकिन मैं कैथरिन की बात सोचता ही क्यों हूँ? अपने जीवन में मैंने कभी किसी स्त्री को स्थान नहीं दिया। इस अमेरिका में ज़बरदस्ती एक लड़की मेरे जीवन में आ गई। बेशक उसका सेवा-भाव बेहद बढ़ा-चढ़ा है। वह न आती तो कमल का अच्छा होना बहुत मुश्किल होता। कैसी सेवा-शुश्रूषा की उसने। कमल तो उस पर बिलकुल मुग्ध हो गया है—उसका दास बनने को तैयार है। पर मैं?"

जहाज़ चला जा रहा था। चारों ओर जल ही जल था। "आप नाश्ता यहीं कीजिएगा क्या?" कहती हुई जो 'लड़की' उसके सामने आ खड़ी हुई उसे देखकर वह आनन्द से अभिभूत हो गया।

वह कैथरिन थी।

"तुम मेरे साथ चल रही हो।"

"हाँ, अन्त में मैंने यही ठीक समझा कि मैं अपने देश के दर्शन करने का यह सुअवसर जाने न दूँ।" कैथरिन ने उत्तर दिया।

"तो तुम रूस तक चलोगी?"

"ज़रूर ?"

"उसके पहले?"

"जहाँ आप कहें वहाँ चलने को तैयार हूँ।"

"यह बड़ी अच्छी बात है। इँगलैण्ड जाओगी?"

"क्यों न जाऊँगी? पर मुझ पर इतना अधिक विश्वास करना क्या आपके लिए ठीक होगा।"

कामरोव की दृष्टि कैथरिन की आँखों की ओर गई और उन्होंने कहा—"तुम्हारी आँखों के भीतर ऐसी शुभ्र उज्ज्वलता मुझे दिखलाई देती है कि किसी प्रकार के सन्देह को अपने मन में स्थान देना मेरे लिए शोभाप्रद न होगा।"

कैथरिन की आँखों में शैतानी की हँसी आ गई। वह बोली—"आँखों के साफ़ होने से हृदय भी साफ़ होगा—ऐसा मान लेना किसी राजनैतिक नेता के लिए कदाचित् ही उचित कहा जा सके। अगर मैं इँगलैण्ड जाऊँगी तो क्या उन सब विचारों को भूल जाऊँगी जो मेरे जीवन-पथ-प्रदर्शक रहे हैं? मैं उन्हें अपने मन से हटाना चाहूँ और केवल आपकी बातों के अनुसार काम करना चाहूँ तब भी क्या यह किसी तरह सम्भव होगा?"

कामरोव—हाँ, यह पूरी तरह सम्भव होगा।

कैथरिन—कैसे?

कामरोव—तुम देख लेना। मैं कोई अनुचित बात तो चाहता नहीं हूँ। तुम्हारा और मेरा उद्देश एक ही है—संसार को सुखी और स्वस्थ देखना। फिर हमारे बीच में कोई हिमालय सा पहाड़ कैसे आ सकता है?

कैथरिन—वह तो आ ही गया है।

कामरोव—यह तुम्हारा भ्रम है। शीघ्र ही यह दूर हो जायगा। चलो मैं नाश्ता करने चलता हूँ।

कैथरिन—क्या हमारे नाश्ता कर लेने से ही वह पहाड़ हट जायगा?

कामरोव—हाँ—हाँ—तुम हँसती क्यों हो? तुम तो अभी बीस-बाईस वर्ष की लड़की हो। मेरी अवस्था बत्तीस साल की है। मैं प्रत्येक प्रकार के लोगों को देख चुका हूँ और उन्हें अपना मित्र बना चुका हूँ।

कैथरिन—तभी आपके शत्रुओं की संख्या इतनी कम है।

कामरोव—वह कम नहीं है, यह मैं मानता हूँ, पर उसका कारण इतना सिद्धान्तों में मतभेद नहीं, जितना पारस्परिक ईर्ष्या-द्वेष है। यही मनुष्य की सबसे बड़ी कमज़ोरी है। सिद्धान्तों की आड़ लेकर लोग अपने प्रिय साथियों को अपनाते हैं और जो लोग अप्रिय लगते हैं उन्हें कुचल डालना चाहते हैं।

कैथरिन—हममें से अधिकांश जान-बूझकर तो ऐसा करते नहीं—अनजान में चाहे जो होता हो।

कामरोव—यही होता है जो मैं कह रहा हूँ।

कैथरिन—सम्भव है, पर प्रियता और अप्रियता का कारण तो सिद्धान्तों में एकमत होना या मतभेद होना ही होता है।

कामरोव—बिलकुल लड़कपन की बात। मेरी बात मान लो कि ऐसा नहीं होता। क्या मेरे लिए यह मुमकिन है कि जिससे मैं ठीक समझूँ उससे ही प्रेम करूँ। ऐसा होता तो इस संसार के न जाने कितने लोग दारुण यन्त्रणा से बच गये होते। ऐसा नहीं होता। मन और हृदय इस तरह हमारे वश में नहीं हैं।

और कामरोव तेज़ी से वहाँ से चल खड़ा हुआ।

९

कमल के मन में इस आशङ्का ने स्थान न पाया था कि कामरोव कैथरिन को अपने साथ ले जाना चाहेंगे और वह चली भी जायगी। इसी लिए वह कामरोव से कैथरिन को इँग्लैण्ड भेजने को कह सका। जब कामरोव ने उसके सामने ही फिर कैथरिन से ऐसा प्रस्ताव कर दिया तो वह उस पर पूरी तरह विश्वास नहीं कर सका। स्त्रियों से कामरोव दूर रहना चाहते हैं, यही कमल ने अब तक देखा और समझा था।

कैथरिन के उत्तर को उसने बिलकुल स्वाभाविक समझा। उसे कैथरिन से ऐसी ही आशा थी। किन्तु स्वयं उसे अपना यह कर्तव्य जान पड़ा कि वह कैथरिन को कामरोव के साथ भेजे। फिर भी उसकी धारणा यही थी कि कैथरिन उसकी बात इस बारे में न सुनेगी और वह यहीं रहकर उसकी देख-भाल तब तक करती रहेगी जब तक वह और भी पूरी तरह अच्छा न हो जायगा।

किन्तु इसके बाद ?

इसी प्रश्न का उत्तर वह सन्तोषजनक रूप से न दे सका इसी लिए उसे फिर यही निश्चय करना पड़ा कि वह कैथरिन को कामरोव के साथ जाने के लिए राज़ी करे।

इस बार के अपने ऐसे निश्चय से उसे एक दारुण व्यथा के बोझ से छुटकारा पाने का पथ दीख पड़ा। अगर कैथरिन अभी रूस न गई तो फिर नहीं जा सकती। रूस उसका जाना आवश्यक है। कमल को भी तो अभी वहाँ जाना ही है। कैथरिन के वहाँ जाने से वह स्थान उसके लिए नया स्थान हो जायगा। वे दोनों अपने लक्ष्य के अनुसार संसार भर की जनता को सच्ची शान्ति और सच्चे सुख की दिशा की ओर ले जाने का पूरा प्रयत्न करेंगे।

ऐसा सोचते ही उसे अपना मन नव-स्फूर्ति से भरा हुआ जान पड़ा। कैथरिन और कमल ! उसे जान पड़ा कैथरिन को ही वह इतने समय से

खोज रहा था। और कामरोव ? कामरोव के सिद्धान्तों से संसार कभी सुखी नहीं हो सकता; क्योंकि वे सिद्धान्त नितान्त दिखाऊ हैं। वे वही हैं जिनका नाम लेकर, जिनके गीत गाकर, सब स्वार्थी लोग अपना मतलब साधते आये हैं। अब संसार भर की जनता का युग है। कमल और कैथरिन ऐसे लोग ही उसके सच्चे प्रतिनिधि हो सकते हैं।

ऐसे विचार से मनमाना सन्तोष पाकर वह सुख की नींद पा गया किन्तु स्वप्न की अवस्था में उसने देखा कि कैथरिन उससे कह रही है—"मैं तुम्हें छोड़कर कैसे जा सकती हूँ ?"

दूसरे दिन कैथरिन नहीं आई। कमल के मन का द्वन्द्व बढ़ गया और रात में उसे जल्दी नींद नहीं आई।

तीसरे दिन अन्ना नाम की एक स्त्री आई। उसने उसे बतलाया कि कैथरिन उसके इच्छानुसार कामरोव के साथ चली गई।

"मेरे इच्छानुसार ?"

"हाँ, आपने उसे जाने की सलाह दी थी न ?"

"पर वह तो उसकी ही भलाई के लिए थी। उसका मेरी इच्छा-अनिच्छा से क्या सम्बन्ध ?"

अन्ना ने कमल की ओर मुस्कराकर देखा, किन्तु बोली कुछ नहीं।

उस मुस्कराहट का अर्थ यही था कि कैथरिन आपके ही कहने से गई है, उसने आपकी इच्छा समझकर ही प्रस्थान किया है।

सेवा-शुश्रूषा में अन्ना कम निपुण न थी। उसने कैथरिन की भाँति ही उसके आराम की छोटी से छोटी बात का ध्यान रक्खा, फिर भी कमल को उसके प्रति अपनी विरक्ति छिपाना कठिन हो रहा था।

अन्त में दो दिन बाद अन्ना ने स्वयं ही कहा—"यह सच है कि मैं कैथरिन की भाँति राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को अपना सर्वस्व नहीं समझती, पर क्या इसी से आप मेरे प्रति ऐसी उपेक्षा का भाव दिखलाते हैं ? आप जब 'धन्यवाद' कहते हैं या अन्य प्रकार अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं तब मुझे ऐसा मालूम होता है मानों आप मुझे चिढ़ाना

चाहते हों। क्या आप अपना यह ढंग ठीक समझते हैं, या आपके देश का—हिन्दोस्तान का—यही बँधा हुआ नियम है ?"

कमल से अन्ना ऐसी बात कह सकती है, इसकी कमल सम्भावना भी न समझता था। पर इस समय उत्तर देने में उसे विलम्ब नहीं हुआ। उसने कहा—"मुझे देखकर आप मेरे देश के बारे में कुछ निर्णय न किया करें। मेरा मन इस समय स्वाभाविक अवस्था में नहीं है। होता तो आप देखतीं कि हिन्दुस्तानी में कितनी अधिक कृतज्ञता होती है !"

इसके बाद से कमल उससे भी अपने देश के समाचार-पत्रों और पत्रिकाओं से समाचारों और लेखों को सुनने लगा। किन्तु उन्हें सुनाते हुए अन्ना ने असह्य व्यङ्ग-बाण छोड़े। एक दिन पिआनो पर अपने दोनों हाथ रखकर अन्ना ने उसे बजाना चाहा तो कमल उत्तेजित स्वर में कह उठा—"नहीं, नहीं, उसे न बजाना। मुझे अच्छा नहीं लगता। सम्भव है इससे हानि भी हो।"

अन्ना हँसी। बोली—"मेरे हाथों में ऐसी विषमयी भयङ्करता नहीं है कि वह इसके स्वर को भी हानिकारक बना दे। हाँ, कैथरिन की उँग-लियों की सी अमृतमयी शक्ति आपके लिए और कहीं नहीं हो सकती। यह बात मैं आपकी कोमल भावना को ठेस पहुँचाने के लिए नहीं, वरन् सत्य के अनुरोध से कह रही हूँ।"

कमल को यह सत्य का अनुरोध नितान्त असत्य जान पड़ा। किन्तु वह चुप रहा।

अब वह प्रातःकाल बाहर घूमने जाने लगा। अन्ना ने यह देखा तो वह भी साथ जाने लगी। और वह हिन्दुस्तान के बारे में प्रतिदिन तरह-तरह की बातें पूछने लगी। उसकी इन बातों में भी कमल को अपने देश के प्रति वैसा ही भाव दीखता था जैसा समाज के उस वर्ग का, जो अपने को उच्चतम मानता है, उस जनसमूह के प्रति है जो निम्न-तम समझा जाता है—जन्मजात श्रेष्ठता और दैवी प्रतिभा तथा बुद्धिमत्ता का भाव ! इससे उसके भावुक हृदय पर फिर प्रतिदिन चोट लगने लगी।

उसने अन्ना से समाचारपत्रों को सुनना इसी कारण दो दिनों बाद ही बन्द कर दिया था। अब उसने बागड़बिल्ला महाशय से यह बात कहकर उसकी सहायता चाही। वह बोला—कल से मैं भी आप लोगों के साथ चला करूँगा। देखिएगा, मैं उसे कैसा छकाता हूँ।

और उसने उसे सचमुच छकाना चाहा; क्योंकि वह अपने को अन्ना के प्रेमी के रूप में प्रकट करने लगा।

इससे अन्त में खीजकर अन्ना ने कहा—"तुम 'लिंचिंग' को भूल रहे हो क्या?"

बागड़बिल्ला बोला—"वाह! सभ्यता में सबके कान काटने का दावा करनेवाले अमरीका की इस सभ्यता को मैं कैसे भूल सकता हूँ। हबशियों को जीते जी जला देना ही तो इस सभ्यता का सबसे बड़ा प्रमाण है!"

उसके दूसरे दिन से अन्ना ने कमल के साथ घूमने जाना बन्द कर दिया। पर दो दिन बाद अन्ना ने इस व्यवहार के लिए कमल से स्वयं क्षमा माँगकर फिर अपने साथ घूमने के लिए ले चलने को कहा। अन्ना के मुख पर सच्ची उत्सुकता और जिज्ञासा के भावों के साथ पश्चात्ताप-भाव देखकर कमल हँस पड़ा। बोला—"आप सहर्ष कल से चलिएगा।" फिर बोला—"क्या आप रूसी ढङ्ग की चाय बनाना भी जानती हैं?"

अन्ना—जानती क्यों नहीं? मैं तो कैथरिन—

वह चुप रह गई। फिर बोली—"मैं अभी वैसी चाय बना लाती हूँ।"

चाय बनाते-बनाते अन्ना ने सोचा—"कैथरिन ने इस युवक पर अपना ऐसा गहरा रङ्ग कैसे जमा लिया? क्या यह बिलकुल बुद्धू है या अपने घर से बहुत समय से भागा हुआ है और एक विशेष मनोवैज्ञानिक अवसर पर कैथरिन का इसके पास आगमन हुआ। हाँ, यही बात है। यह बीमार पड़ा था। काफ़ी बीमार था। मैं... ।"

चाय पीते हुए कमल ने कहा—"अपने देश की समाज-विधान-सम्बन्धी दो पुस्तकें मैं आज आपको दूँगा। एक में उस समाज का हाल है जो वर्ण और आश्रम के अनुसार सङ्गठित किया गया था और दूसरी में उस समाज का जो बुद्ध-सङ्घ के विद्वानों के नियमों के अनुसार बना था। अगर आपने संसार के उन देशों का, जिनकी सभ्यता सबसे प्राचीन समझी जाती है, कुछ हाल पढ़ा होगा तो आपको मालूम होगा कि मिस्र, चीन, फ़ारस, भारत, यूनान और रोम इन सभी देशों में समाज-सङ्गठन के कैसे उपाय काम में लाये गये थे। हिन्दोस्तान ने समय-समय पर इस बारे में जो कुछ किया है वह सब हँसी में उड़ा देने योग्य नहीं है, बल्कि उससे संसार ने बहुत कुछ सीखा है और प्राप्त किया है और अब भी ऐसा कर सकता है। लीजिए, आप भी चाय पीजिए न?"

तुरन्त अन्ना ने साफ़-साफ़ प्रश्न कर दिये—"अब आपके यहाँ कैसी दशा है? अगर आप लोग सब बातों में बढ़े-चढ़े थे तो आपके देश को पराधीन क्यों होना पड़ा?"

कमल ने सिर झुकाकर कहा—"शस्त्र, शास्त्र और चरित्र तीनों की शक्तियों की निरन्तर उन्नति होने और तीनों में सामञ्जस्य बने रहने से ही कोई देश अपने पैरों पर खड़ा रहता है। हम ढोंगी पूजा-पाठ में लग गये, हममें उचित सामाजिक-भाव नष्ट हो गया, शस्त्र और शास्त्र में से किसी में हममें उचित प्रगतिशीलता न रह गई तब प्रकृति के नियमानुसार आपसी द्वेष, संकीर्णता, आलस्य, धोखेबाज़ी आदि अवगुणों में फँसकर हम पराधीन हो गये। हमारे विश्वास से अनुचित लाभ उठाने, हममें आपस में तरह-तरह से फूट के बीज डालने आदि का इतिहास तुम पढ़ना चाहो तो बहुत कुछ अब भी पढ़ने को मिल सकता है। क्या तुम चाय न पिओगी? पिओ न।"

अन्ना ने चाय का प्याला उठाकर कहा—"चाय की अपेक्षा कहीं अधिक स्फूर्ति तो आपकी इन बातों से मुझे मिलती है। पर मैं समझती

हूँ कि अमरीका की स्वाधीनता का इतिहास संसार भर के स्कूलों में पढ़ाया जाना चाहिए और आपके देशवालों को अमरीका के स्वाधीनता-दिवस का उत्सव विशेष रूप से देखना चाहिए।"

यन्त्र की भाँति कमल ने कहा—"क्यों ?"

"डेढ़ सौ साल में ही ये लोग संसार में सब से आगे बढ़ गये हैं न ? तरह-तरह के धर्मों के अनेक वंशों और अनेक देशों के लोग यहाँ इस तरह आये थे कि उन सबका मिलकर अपना केन्द्रीय शासन क़ायम कर लेना या अपना संतोषजनक शासन-विधान बना लेना असंभव समझा जाता था। पर उसी को यहाँ पूरी तरह संभव कर दिया गया। और इससे मिले हुए देश कैनेडा देश ने तो अभी छः-सात दशाब्दी—साठ-सत्तर साल ही पहले स्वराज्य की शक्ति पाने पर भी दुनिया के व्यापार में अपना पाँचवाँ स्थान बना लिया है—उस कैनेडा ने जिसमें मुश्किल से डेढ़ करोड़ व्यक्ति हैं और जहाँ फ़्रांसीसी और अँगरेज़ी, दो भाषाएँ अलग-अलग बोली जाती हैं। आपके सब सूबे और सब रियासतें इस तरह क्यों नहीं मिल सकतीं कि उनका केन्द्रीय बातों में मत-भेद न रहे ? अशोक और अकबर आदि की केन्द्रीय सत्ताएँ क्या सन्तोषजनक न थीं ? वे भी तो चक्रवर्ती थे न ?" यह सब अन्ना उस "क्यों ?" के उत्तर में कह गई।

कमल को वह दिन याद आया जब कैथरिन ने भी ऐसा ही प्रश्न किया था कि अमरीका की अड़तालीस रियासतें मिलकर अपना केन्द्रीय शासन चलाती हैं तो हिन्दुस्तान वैसा ही क्यों नहीं कर पाता।

उस दिन वह चुप रह गया था। पर आज उसने एक लम्बी साँस खींचकर कहा—"कैनेडा के दोनों भागों के लोग गौराङ्ग हैं पर हम लोग रङ्गीन जातियों में से हैं। सफ़ेद जातियों को यह दावा करते अब तक लज्जा या संकोच नहीं है कि अन्य सभी जातियों का बोझा उन्हीं के कन्धों पर अपने आप आ पड़ा है और उन्हें उसे मजबूरी से ढोना पड़ता है।"

और आज अन्ना ने कहा—"सब लोगों का नहीं, केवल साम्राज्य-वादियों का यह दावा है। आप सबके साथ अन्याय क्यों करते हैं? क्या इतने दिनों में कैथरिन आपको इतना अधिक उदार नहीं बना पाई?"

कमल ने हँसकर कहा—"नहीं, पर उसकी कमी तुम पूरी कर सकती हो।"

१०

कैथरिन ने देखा कि दो तश्तरियाँ कामरोव के लिए अलग से आईं। लानेवाले ने कहा--"इनमें एक रूसी बावर्ची की पाक-कला-कुशलता का नमूना है।"

कैथरिन ने एक कोने में बैठी हुई बिल्ली के सम्मुख एक तश्तरी से थोड़ा सा सामान फेंक दिया। उसने कृतज्ञतापूर्ण आँखों से देखा और तुरन्त उसे खा गई। थोड़ी ही देर में उसकी हालत बुरी हो गई और उसकी आँखें निकल आईं।

कामरोव ने कैथरिन की ओर देखकर कहा—"क्या किसी न किसी का बलिदान तुमने ज़रूरी समझा?"

कैथरिन—नेकी के बदले बदी इसी का नाम है। बिल्ली की जान शायद अब भी बचाई जा सके; डाक्टर को बुलवाइए।

डाक्टर तक यह बात पहुँच चुकी थी और वे आ रहे थे। उन्होंने दोनों तश्तरियाँ उठा लीं और कहा—"रूसी बावर्ची अभी आपके सम्मुख आवेगा। मैं भी आपके कमरे में आऊँगा।"

कामरोव ने कैथरिन से कहा—"मैं तुम्हें किस तरह बतलाऊँ कि मैं तुम्हारा बहुत कृतज्ञ हूँ।"

कैथरिन—भला आपके मुँह से यह बात तो निकली। अभी तो आपने कहा था कि किसी न किसी का बलिदान आवश्यक समझकर मैंने बिल्ली की जान लेनी चाही—

कामरोव—एक जान के बदले जो ऐसी दूसरी जान दी जाती है उसके लिए कम कृतज्ञता न होनी चाहिए।

कैथरिन—तो क्या आप यह समझते हैं कि इस षड्यन्त्र में मेरा हाथ है?

कामरोव—छिः छिः तुम मुझे ऐसा नीच क्यों मान बैठती हो! जान पड़ता है, तुम्हें बलिदान के इतिहास का पता नहीं है। बलिदान अपने प्रिय का बचाने के लिए ही किया जाता है। मेरी सेक्रेट्री होने के कारण तुम्हारा ऐसा करना तो और भी उचित था।

कैथरिन ने समझ लिया कि अन्तिम वाक्य क्यों जोड़ा गया है। वह चुप रही।

कामरोव ने अपने कमरे में आने के कुछ समय बाद एक युवक को तेज़ी से अपनी ओर आते देखा। बात की बात में उसने उसका वह हाथ पकड़ लिया जिसमें एक लम्बा तेज़ चाक़ू चमचमा रहा था। तब तक कितने ही लोग वहाँ आ गये।

कामरोव ने उस युवक का बच्चे की तरह उठा लिया और बाहर जाकर पूरे ज़ोर के साथ उसे समुद्र की लहरों में फेंक दिया।

उसने उनकी दाहिनी कलाई में दाँतों से काट लिया था। उससे रक्त बह रहा था।

एक शब्दहीन हवाई जहाज़ जल में उतरता दिखाई दिया। उसने उस युवक को उठा लिया।

जहाज़ के कप्तान ने आकर बतलाया कि यह वही युवक था जिसने रशियन खाने की चीज़ें बनाई थीं और यह हवाई जहाज़ वह जहाज़ था जो कामरोव को रूस ले जाना चाहता था।

× × × ×

अपने कैबिन में वापस आकर कामरोव ने देखा—एक परचा पड़ा हुआ है। उठाकर उसने पढ़ा—"कामरोव रूस के और मानव मात्र के उस स्वार्थी दल के प्रतिनिधियों में प्रमुख हो रहा है जो मज़दूर-किसान-

राज्य और हँसिया-हथौड़ेवाले झंडे के ढोंग के ज़रिये महाजनी सभ्यता और व्यावसायिक शासन-पद्धतियों का साथ देना चाहते हैं। सच्चे साम्यवादी, अराजकवादी तथा स्वतंत्र धर्म और स्वतंत्र फ़ौज की आवश्यकताओं को माननेवाले इस बात में सहमत हैं कि रूस का यह अधिनायकत्व एक दल-विशेष की नीच वासनाओं और आधिपत्य-लालसाओं की पूर्ति का ही साधन बन रहा है। कैथरिन भी इसी शासन-पद्धति में एक यन्त्र बनने जा रही है। अतः कामरोव और कैथरिन, दोनों को चेतावनी दी जाती है कि इस संसार के सच्चे कल्याण के लिए उन्हें जल्दी से जल्दी मार डाला जायगा।"

उसने घण्टी बजाई और आदमी के आने पर कहा—"कैथरिन को यहाँ भेज दो।"

कैथरिन के आने पर उसने वह परचा उसके हाथ में रख दिया। कैथरिन उसे पढ़कर न जाने क्यों हँस पड़ी।

कामरोव ने यह देखकर कहा—"मुझे प्रसन्नता है कि तुम इसे पढ़कर हँस सकीं। मैं भी इस अज्ञानता पर हँसता हूँ, यद्यपि उस हँसी में वेदना भी भरपूर सम्मिलित हो जाती है। अज्ञानी शहीदों की संसार में कभी कमी नहीं रही। जनता वीरता या त्याग की वाहवाही करने से कभी नहीं चूकती। पर उसमें यह देखने की कितनी शक्ति होती है कि किसकी वीरता कल्याणमयी है या किसका त्याग वास्तविक अच्छाई उत्पन्न करनेवाला है? रूस जैसी पञ्चवार्षिक योजनायें संसार भर में चलनी चाहिएँ। सच्ची शिक्षा ही मानवता का उचित आधार होती है। अगर तुम इस क्षेत्र में मेरा साथ दे सको तो बहुत बड़ा काम हो जाय। क्या क्रप्सकाया के देश में तुम उन्हीं को आदर्श-रूप में रख सकने में समर्थ न हो सकोगी?"

कैथरिन ने सिर नीचा कर लिया। सोचा—"क्या ये महाशय अपने को लेनिन का आदर्शवाला मानकर यह प्रश्न कर रहे हैं? महान् लेनिन और उनकी सहधर्मिणी क्रप्सकाया! क्या उनको आदर्श-रूप मान लेने से ही

लोग वैसे हो सकते हैं ? नहीं, मेरा रास्ता दूसरा है। वह युग बीत गया। अब नवीन युग में नवीन कार्य-क्रम की ज़रूरत है। संसार भर की स्त्रियों के वास्तविक सहयोग के आधार पर ही मैं कुछ ठोस काम कर सकूँगी।"

उसने उत्तर दिया—"चलिए, रूस में ही इसका निर्णय होगा।"

११

कमल प्रतिमास अपने बड़े भाई को पत्र लिखता था और प्रति बीसवें दिन अपने 'हार्दिक मित्र' श्री 'मधुप' जी को। 'मधुप' उसी दिन उत्तर लिख देते थे और साथ में दो-तीन नई कविताएँ भी भेजते थे। पर इस बार जब कमल ने अपनी बीमारी, कैथरिन की सेवा-शुश्रूषा और उसके प्रस्थान की बातें एक लम्बे पत्र में लिखकर भेजी तब 'मधुप' उसी दिन उत्तर न भेज सके।

रात में अपनी सहधर्मिणी ललिता को उन्होंने वह पत्र पढ़ने को दिया और जब उसने पढ़ लिया तो पूछा—"क्या कहती हो, कमल यहाँ कैथरिन के साथ आयेंगे या अन्ना के ?"

ललिता ने गम्भीरता के साथ कहा—"अन्ना के; पर यह होगा बहुत बुरा।"

मधुप—किसके लिए बुरा होगा – तुम्हारे लिए ?

ललिता बोली—मेरे लिए नहीं, तुम्हारे लिए।

मधुप—इस दूरदर्शिता के लिए अनेक धन्यवाद। अब इस भविष्य-वाणी का कारण सुनूँ।

ललिता—कारण नहीं, प्रमाण। उसके लिए उनके बड़े भाई की दुर्गति देखिए। किस तरह पश्चिमी फ़ैशनों की ग़ुलामी और अफ़सरों की ग़ुलामी अमरीका की इस स्त्री की ग़ुलामी के साथ उन्हें करनी पड़ रही है। क़र्ज़ बढ़ता जा रहा है—थोड़े ही समय में धन और स्वास्थ्य, दोनों के दिवाले निकल जाने में शायद ही किसी जानकार को कुछ सन्देह अब हो।

मधुप—सब स्त्रियाँ एक सी नहीं होतीं। कैथरिन तो उच्च आदर्शों की उपासिका जान पड़ती है। अन्ना की भी उन्होंने प्रशंसा ही की है, पर उतनी नहीं। किन्तु वे किसी के साथ आवें उससे मेरी बुराई कैसे होगी?

ललिता—आप उनके सबसे घनिष्ठ मित्र हैं, इसी से।

मधुप—तब वे मुझे मित्र मानने में भी सकुचायँगे। देखती नहीं हो, उनके भाई ने सभी पुराने साथियों का बिलकुल त्याग कर दिया है। उनकी ओर देखना भी अपने लिए लज्जाप्रद समझते हैं। पर मैं कमल को सावधान कर देना चाहता हूँ कि वे इनमें से किसी के जाल में न फँसें।

ललिता—कैथरिन पर तो आप अभी से मुग्ध हो गये हैं।

"मैं?"

"हाँ, और क्या मैं? मैं तो कहती हूँ, कैथरिन तुम्हारे मित्र को लूटना चाहती रही होगी। सुना है, विदेशों में यहाँ के यात्रियों को या तो राजवंश का समझते हैं, या कुली-दल का। कमल को रईस समझकर ही उसने ऐसी सेवा की। तब उसे यह आशा कभी न रही होगी कि कामरोव उसकी ओर खिंच सकेंगे। पर जान पड़ता है, स्वाभाविक नियम ने अपना काम किया। कमल को उसकी ओर बढ़ते देख, कामरोव ने हाथ बढ़ाकर कैथरिन को अपनी पूरी साथिन बना लिया। अब यह अन्ना इनका पीछा करेगी—सम्भव है यहाँ तक पीछा करे।"

'मधुप' को अपनी स्त्री से ऐसी मनोवैज्ञानिक विवेचना सुनने की आशा न थी। उसने देखा कि इस मामले में उसकी स्त्री उससे स्वभावतः प्रवीणतर है। वह बोला—"मैं तुम्हारी ये बातें मान लूँ तो भी मेरा कर्तव्य वही है जो मैंने कहा है। हाँ, मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि कमल ऐसा रूखा-सूखा वैज्ञानिक और डाक्टर वहाँ की सौन्दर्य, रस और विलास में रत रहने की इच्छुक स्त्रियों को कैसे आकर्षित करने लगा है। रूस में वह चार साल रहा, पर वहाँ कभी

ऐसा नहीं हुआ। पर अपने भाई के अमरीकन सुन्दरी से विवाह कर लेने के बाद उसका दिल अपने घर से बिलकुल उचट गया था। शायद, अब पहली बार उसकी निर्जीवता दूर हो रही है।"

ललिता इस अन्तिम बात को सुनकर चिढ़ गई। कह उठी—निर्जीवता नहीं दूर हो रही है, भारतीय जीवन को तिलांजलि दे रहे हैं। जिस तरह इनके भाई को देश और राष्ट्र के कामों से भागता हुआ ही नहीं, बल्कि उनका विरोधी देख रहे हो, उसी तरह का अब इन्हें भी देखोगे। मैं तो ऐसे लोगों को बिलकुल छिछोरा और बेहया समझती हूँ—न अपने समाज के सम्मान का ध्यान, न देश की मान-मर्यादा या प्रतिष्ठा का। इस बार आप इन्हीं के ऊपर कविताएँ बनाकर भेजिए। आपका तो मित्र और कवि के नाते यह परम धर्म है।

मधुप ने हँसकर कहा—"इस बार तुम्हीं कविताएँ लिख डालो। मैं लिखूँगा तब तो कैथरिन और अन्ना दोनों का गुणगान ही करूँगा। कवि किसी सुन्दरी का विरोध कैसे कर सकता है। कुछ पुरुष लोग स्त्रियों के लिए, या स्त्रियों के नाम से, कविताएँ लिख रहे हैं। तुम मेरे लिए या मेरे नाम से लिख डालो।"

"उन्हें आप भेज देंगे?"

"ज़रूर! क्या इतना भी न करूँगा?"

१२

मोरटी कार्लो में पहले दिन काम करना किसी दिन ठीक करना नहीं कहा जा सकता, यह समझकर कामरोव कैथरिन को, एक क्लब में लिवा ले गये। उन्होंने उसे यह भी बतला दिया था कि यहाँ सभी प्रकार के 'दोषी' और 'अपराधी' लोग इकट्ठे होते हैं पर कोई किसी का दोष या अपराध प्रकट करना उचित नहीं समझता। यह स्थान एक ऐसा विशेष स्थान माना जाता है, जहाँ सब एक-दूसरे से बिना किसी ईर्ष्याद्वेष या शत्रुता के भाव के मिलते हैं। यहाँ प्रेमी लोगों का अपना प्रेम प्रकट

करना स्वाभाविक है—और स्त्रियों तथा पुरुषों, दोनों को, ऐसा करने की स्वतन्त्रता है। इसे कोई बुरा नहीं कह सकता, बल्कि ऐसा न करना ही बुरा माना जाता है। कामरोव ने यह भी बता दिया कि जुआ का यहाँ सबसे बड़ा अड्डा है। एक-एक रात में लाखों-करोड़ों के जुए होते हैं। संसार भर के अभिमानी जुआड़ी यहाँ आते हैं।

कैथरिन लड़कपन से अमरीका में रही थी अतः उसे यह भली भाँति मालूम था कि उस देश में स्त्रियों को स्वयं प्रेम-प्रदर्शन का सुअवसर किस समय मिलता है। अब वह यह भी जानती थी कि इस समय संसार में कौन-कौन विशेष स्थान ऐसे हैं जहाँ सदैव के लिए ऐसी स्वतन्त्रता उन्हें अब प्राप्त हो गई है। वह ऐसी अवस्था संसार के सभी स्थानों के लिए चाहती थी और उसे अपनी आँख से देखना भी चाहती थी। इसलिए उसे इस समय कम प्रसन्नता नहीं हुई। परन्तु यह प्रसन्नता थोड़ी ही देर तक रही। उसे कमल की रुग्णावस्था का ध्यान आया और वह चिन्तायुक्त हो गई।

कामरोव ने मानों उसे चिढ़ाने के लिए कहा—क्या सोच रही हो—यही कि कमल यहाँ न हुए?

कैथरिन चिढ़ी नहीं। उसने यथेष्ट गम्भीरता के साथ उत्तर दिया—हाँ, बिल्कुल यही।

इस उत्तर से स्वयं कामरोव चिढ़ा। उसने कहा—"वह कौन है? उसके लिए इस तरह सोचते हुए तुम्हें लज्जा नहीं आती? वह एक साधारण हिन्दोस्तानी है! क्या वह कभी रूसी हो सकता है या उनकी बराबरी कर सकता है?"

कैथरिन ने तनिक हँसकर कहा—"परीक्षा के अवसर पर उदारता के ढोंग को बनाये रखना ऐसा ही कठिन होता है। यही तो मैं कहती हूँ जो सिद्धान्त आपने अपनाये हैं और जिस पथ पर आप चल रहे हैं, उनके अनुसार आप कभी सच्ची समता, सच्चे न्याय या वास्तविक सत्य के लिए ठीक तरह काम करनेवाले हो ही नहीं सकते। आपका पथ असल

में संकीर्ण और प्राचीन परिपाटी पर चलनेवाला है। उसके साथ आपने नये नाम भर लगा दिये हैं, पर इस तरह नामों के बदलने से वस्तुओं की असलियत नहीं बदल जाया करती। निरंकुश राजा के स्थान पर असीम शक्तिधारी डिक्टेटर बैठ जाय तो उससे क्या अन्तर पड़ सकता है?"

कामरोव को क्रोध आया पर उसे दाबकर उसने कहा—"तुम नहीं जानती हो कि किससे क्या कह रही हो ? तुम्हारा अज्ञान दमनीय एवं क्षम्य है। रूस में चलने पर तुम नया प्रकाश पा सकोगी। क्लब में चलने के पहले मैं चाहता हूँ कि अपने पहनने के लिए कुछ चीज़ें तुम ख़रीद लो।"

कैथरिन—धन्यवाद ! मुझे कई कपड़े ज़रूर ख़रीदने हैं। क्या आप भी मेरे साथ चलेंगे ?

कामरोव—हाँ, पहले कपड़े की दूकानों की ओर ही चलता हूँ।

कैथरिन ने कई प्रकार के कपड़े ख़रीदे, फिर भी उसके मुख पर सन्तोष-पूर्ण प्रसन्नता की झलक न दिखलाई दी। यही नहीं, ऐसा जान पड़ता था मानों वह स्वयं अपने ऊपर रुष्ट हो रही हो और इन कपड़ों को लेने से उसके मन की अशान्ति और भी व्यापक हो गई हो।

कामरोव को यह अच्छा न लगा।

एकाएक उसने देखा कि कैथरिन एक कुत्ते का मोल-भाव कर रही है और उसकी सारी अप्रसन्नता दूर हो गई है। उसे यह बात बड़ी विचित्र मालूम हुई। कुत्ते का मूल्य आठ हज़ार रुपये के निकट माँगा जा रहा था। कुत्ते के मालिक ने उससे बतलाया कि बहुत समय पहले एक हिन्दोस्तानी राजा ने इसी प्रकार के पाँच सौ कुत्ते ख़रीदे थे और उनमें से प्रत्येक के रहने तथा दवा आदि का ऐसा सुन्दर प्रबन्ध किया था कि उसके बारे में अँगरेज़ी के कुछ पत्रों में उनकी विशेष प्रशंसा की गई थी।

कामरोव ने कैथरिन से पूछा—"क्या तुम इसे लेना चाहती हो ?"

कैथरिन ने कहा—"क्या आप ख़रीद देने को तैयार हैं ?"

कामरोव—रूस का अधिनायक तक अपने लिए पाँच सौ रुपये एक माह में व्यय नहीं करता। किन्तु अगर तुम्हारी अप्रसन्नता दूर रखने का

यही उपाय हो तो मुझे इसे ले लेने में आपत्ति नहीं है। हाँ, इससे तुम मुझे हिन्दुस्तान के किसी कर्तव्यहीन राजा की भाँति नहीं मान सकती हो।

कैथरिन मन ही मन हँसी। बोली—"पर क्या मैं इसे कल या परसों पसन्द न आने पर वापस कर सकती हूँ ?"

उत्तर मिला—हाँ, ख़ुशी से।

कुत्ता ले लिया गया।

दो दिन बाद वह स्वयं आकर उसे लौटा गई।

१३

क्लब में भी कामरोव के आमोद-प्रमोद के मार्ग में एक भयानक विघ्न उपस्थित हो गया। वे यथेष्ट प्रयत्न करके कैथरिन को नाचने के लिए राज़ी कर सके थे और कैथरिन एक बार उनके साथ नाची भी, लेकिन कामरोव की इच्छा उसके साथ फिर नाचने की थी। बाधा यह आई कि जर्मनी के प्राचीन राजवंश के एक राजकुमार से, जो इस समय एक सुप्रसिद्ध बैङ्कर थे, उनकी भेंट हो गई।

राजकुमार ने चाहा कि कैथरिन से भी उनका परिचय करा दिया जाय किन्तु केवल एक बैङ्कर के रूप में। "अब मुझे राजकुमार कहना मेरी हँसी उड़ाना है। जर्मनी में लोकतन्त्र की स्थापना जब से हो गई तब से हम सब जर्मनी के एक समान सेवक हैं। हममें अब न कोई राजा है, न रानी। इनके फिर कभी होने की आशा भी नहीं है।" उन्होंने स्वाभाविक स्वर में कहा।

कामरोव ने कहा—"किन्तु एक बैङ्कर और साधारण जनता में तो कुछ कम अन्तर नहीं है ! आप तो अब भी यथेष्ट प्रभुत्व के पद पर हैं।"

राजकुमार ने आँखें फाड़कर कहा—"यह आप क्या कहते हैं ! कहाँ एक बैङ्कर और कहाँ राजा ! दोनों को आप एक समान समझते हैं !"

कामरोव—नहीं, राजा को मैं असमर्थ समझता हूँ और बैङ्कर को समर्थ।

राजकुमार—यह तो आप इस समय की बात कह रहे हैं। राजा और उसके अधिकारों के बारे में अलग-अलग देशों की अलग-अलग व्यवस्था रही है। फिर भी बीसवीं शताब्दी को हम राजशक्ति के नाश और लोक-शक्ति के उचित विकास की शताब्दी कह सकते हैं। धर्म के नाम से लूट-मार या ठगी करनेवालों की पोल तो बहुत पहले ही खुल चुकी। उनकी शक्ति का ह्रास हुआ। अब बनियापन की सभ्यता के दिन भी गिने-गिनाये हैं।

पर नये फ़ौजीवाद, नये शस्त्रबल से हुकूमतें हटाने या क़ायम करने-वाले अपने देश के नाज़ीवाद को आप कैसा मानते हैं?

कामरोव का ख़याल था कि यह प्रश्न सुनकर राजकुमार लाल-पीले हो जायँगे पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ। वे हँसते हुए बोले—"मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि आप भी अपने देश में फिर ज़ार बन रहे हैं, केवल नाम भर का अन्तर है। अन्य प्रणालियों का अन्त होने के पहले कहीं आप ही का ढङ्ग समाप्त न हो जाय!"

यह सुनकर स्वयं कामरोव का मुख लाल हो गया। वह बोला—"मैं ज़ार बन रहा हूँ! आप उस असत्य प्रचार से प्रभावित हो गये हैं जो रूस के विरुद्ध ज़ोरों के साथ किया जा रहा है। मैं उस समय की निरङ्कुशता का उससे कहीं अधिक विरोधी हूँ जितना आप अपने यहाँ की प्राचीन राज-प्रणाली के हो सकते हैं।"

राजकुमार ने कहा—"इससे क्या? राजाओं में से भी सबके शासन का ढङ्ग एक सा नहीं होता। उनमें राजर्षि भी होते हैं, जो मनुष्य मात्र के लिए आदर्श समझे जाने चाहिएँ। वे निरङ्कुश नेता से तो कहीं श्रेष्ठतर होते हैं।"

कामरोव—अच्छा चलिए आपका कैथरिन से परिचय करा दूँ। तब वहीं और बातचीत होगी। क्या यह न बताऊँ कि आप राजकुमार थे?

उत्तर मिला—"राजकुमार मैं था यह आप बता सकते हैं।"

परिचय कराने का कार्य समाप्त होते ही कामरोव ने कैथरिन से कहा—"इनका यह विचार है कि मुझमें और ज़ार में अधिक अन्तर नहीं है। मैं इनसे यह जानना चाहता हूँ कि क्या मैं भी ज़ार की तरह अपने देश के लोगों का धन मनमाने ढङ्ग से ख़र्च करता हूँ या कर सकता हूँ? क्या मेरा शासन भी लोगों की शक्ति को वैसा ही चूसनेवाला, जनता के सुख और स्वास्थ्य की परवा न करनेवाला और अपने को, अपने सम्बन्धियों तथा इष्ट-मित्रों और कृपापात्रों को विलासिता तथा ऐश्वर्य के समुद्र में डुबोनेवाला है? क्या अब रूस में एक भी आदमी बेकार या भूखा रह सकता है? अथवा एक भी व्यक्ति को रोगी होने पर ओषधि के बिना रहना पड़ता है? क्या वहाँ किसी प्रकार जाति-भेद, कुल-भेद, धन-भेद आदि के आधार पर किसी के साथ कोई अन्याय हो सकता है? क्या सचमुच इनका यह विश्वास है कि ज़ार के समय इनमें से कोई भी बात सम्भव थी?"

कैथरिन ने कहा—"तब बेकारों की, भूखों की, ग़ुलामों की, वेश्याओं की, क़ैदियों की और राजनैतिक अपराधों में भाँति-भाँति के कठोर दण्ड पानेवालों तथा साइबेरिया के बरफ़िस्तान में निर्वासित किये जानेवालों की संख्या कितनी अधिक थी, यह या तो ये जानते ही नहीं या जान-बूझकर, अपने मन को पक्षपात और द्वेष से भरकर उस सबको भुला देना चाहते हैं। नहीं तो इनका यह मानना स्वाभाविक होता कि इस अवस्था की तुलना में वह सर्वथा नारकीय अवस्था थी और उस अवस्था के सामने इसे स्वर्गीय सुखप्रद कहना चाहिए।"

कैथरिन से अपनी बातों के समर्थन में कुछ सुनने की आशा कामरोव को न थी। वह कैसे भूल जाता कि स्वयं कैथरिन भी राजकुमार जैसी बातें उससे कई बार कह चुकी थी। इसी लिए उससे इस समय ऐसा सुनकर वह पुलकित हो उठा।

राजकुमार ने ये बातें धैर्य के साथ सुनीं, पर उनका कोई वैसा प्रभाव उन पर न पड़ा जैसा कामरोव और कैथरिन भी डालना चाहते थे। उन्होंने

अपने पहले ही शुष्क और व्यङ्गपूर्ण ढंग से कहा—"तो जो सैकड़ों पुस्तकें आप लोगों के विरुद्ध प्रमाण के सहित लिखी जा रही हैं उन सबको आप झूठी कहते हैं!"

कैथरिन मन ही मन सोच रही थी कि यद्यपि कामरोव को यह बात सह्य न होगी कि वे जर्मनी के एक बैंकर को अब भी राजकुमार कहें किन्तु वह उसे राजकुमार ही कहेगी, क्योंकि जब किसी में उसके प्राचीन पद के अनुसार योग्यता और शक्ति नहीं रह जाती या जब किसी पदाधिकारी का उच्च पद छिन जाता है तब उसे उसी पुराने ढंग से बुलाना या तो उसे चिढ़ाना होता है या ऐसी शान्ति देना होता है, जिससे, यदि वह उसे व्यंग्य न समझे तो, किसी की कुछ भी हानि नहीं हो सकती। अब उसने राजकुमार की ओर फिरकर कहा—"अच्छा, राजकुमार, सैकड़ों या हज़ारों पुस्तकें क्या केवल रूस की ही वर्तमान राज-प्रणाली और रूस के ही सार्वजनिक नेताओं के विरुद्ध लिखी गई हैं! संसार का ऐसा कौन सा देश जिसके लिए ऐसी पुस्तकें न हों! इँग्लैण्ड, जर्मनी, फ़ांस, अमरीका, जापान, चीन, हिन्दोस्तान आदि-आदि में से क्या कोई भी देश ऐसा है जो सब बातों में संसार भर के लिए आदर्श-रूप मान लिया गया हो। बल्कि यदि सत्य का संहार न किया जाय या उसे ज़बरदस्ती दबाया न जाय तो यही मानना होगा कि संसार की इस एक शताब्दी के इतिहास में दो ही देशों ने अपने-अपने ढंग से आदर्श की ओर जाने में सबसे बड़ा भाग लिया है—एक तो रूस ने और दूसरे हिन्दोस्तान ने।"

राजकुमार—अगर आप मुझे राजकुमार कहना चाहती हैं तो ख़ुशी से कहिए, मैं आपके ऐसा कहने से प्रसन्न ही हूँगा। पर आपकी यह बात मैं नहीं मान सकता कि संसार की इस समय की उन्नति में जर्मनी का हाथ कम है या वह किसी से पीछे है।

कैथरिन—वहाँ आप जिस प्रकार के बैंकर इस समय हैं उसे आपसे बढ़कर कौन जानता होगा! आपका देश आगे बढ़ा है पर उसने ऐसा

किया है जन-तन्त्र के उस आधार को हटाकर जिसके बिना वास्तविक संसार-सङ्घ नहीं बन सकता। यहूदियों को ही नहीं, संसार भर के अन्य सब देशों को वह नीचा दिखाना चाहता है; किन्तु इस जाग्रत् और वैज्ञानिक बीसवीं सदी में क्या यह सम्भव है? गोरे रंगवालों में भी केवल जर्मन जाति सर्वश्रेष्ठ आर्य जाति है—ऐसा कहना मनुष्य की मनुष्यता को—उसकी आत्मा को—कुचलकर वर्तमान अन्यायी वर्ण-व्यवस्था को पूरी तरह संकीर्ण कर देना है। सोवियट रंगीन जातियों को भी अछूत नहीं मानता।

"हम कुचल रहे हैं जनतन्त्र की आत्मा को! ख़ूब कहा आपने।" राजकुमार ज़ोर से हँसे, पर वह हँसी बहुत सूखी थी।

"शायद आप आत्मा को नहीं मानते।" कैथरिन ने कहा।

"जर्मनी सच्चे वैज्ञानिकों और सच्चे दार्शनिकों का देश है। विद्वत्ता में और वीरता में इस भूमण्डल में कोई उसकी बराबरी नहीं कर सकता। युद्ध में हार और जीत की बात व्यर्थ है, पर जर्मनी की आत्मा सदैव अजेय रही है और अजेय रहेगी। उसी की आत्मा का अस्तित्व मैं मानता हूँ।"

कामरोव ने हँसकर कहा—"तब आप प्राचीन ईसाइयों से भी आगे बढ़ गये हैं। वे स्त्रियों में आत्मा नहीं मानते थे, पर पुरुषों में से सब में मानते थे। आप केवल जर्मनी में आत्मा मानते हैं और कहीं नहीं।"

राजकुमार ने चिढ़कर कहा—"आत्मा का अर्थ समझ सकना रूस के लिए असम्भव ही है। उसके लिए तो यही ठीक है कि वह अपने विचित्र समाज-विज्ञान का नाम लेकर कह दे कि आत्मा का अस्तित्व इस युग में कहीं भी और किसी में भी सम्भव नहीं है। इस प्रकार वह अपने को सबसे आगे होने का सन्तोष भी पाना चाहे तो पा सकता है। पर असल में वह नास्तिक देश और धर्म-प्रेम से शून्य राज्य आत्मा का अर्थ अभी कैसे समझ सकता है?"

कैथरिन को जान पड़ा कि व्यर्थ में ही बातें बढ़ती जा रही हैं और कठिन अप्रियता की सीमा पर आ पहुँची हैं। उसने बातचीत की दिशा

दूसरी ओर मोड़ने के लिए कहा—"राजकुमार से मैं यह जानना चाहती हूँ कि वे यहाँ मोन्टी कार्लो में कब तक रहेंगे और क्या वे इतनी कृपा कर सकते हैं कि हम लोगों के ठहरने के स्थान पर आयें ?"

कामरोव ने कहा—"हाँ, यह तो बहुत अच्छा होगा। आप अगर कृपया वहाँ आयें तो सुभीते के साथ इस गहन विषय पर बातें हों।"

राजकुमार ने कहा—"यों तो चाहे जिस विषय को आप गहन कह सकते हैं पर वास्तव में अब ये सब साधारण जनता के समझने-समझाने योग्य बातें हो गई हैं। जर्मनी ने ही इनको ऐसा बना दिया है। हिन्दोस्तान ने भी एक समय ऐसा करना चाहा था और उसे कुछ सफलता भी मिली थी। पर उस युग का इस विकसित वैज्ञानिक युग से क्या मुक़ाबिला ? आज बेतार के तार, रेडियो, हवाई जहाज़ आदि ने सारे संसार को वैसा ही छोटा बना दिया है जैसा पुराने समय के लोगों के लिए उस समय के बर्लिन या लन्दन शहर। उनके पास इस समय के वैज्ञानिक साधनों का सर्वथा अभाव था। जिन ज्ञान-भाण्डारों की कुञ्जियाँ हमारे हाथ में इस समय हैं उनके दरवाज़े उनके लिए बिलकुल बन्द थे और उनमें से कई एक के अस्तित्व की वे कल्पना तक न कर सकते थे।"

सब चुप रहे।

सहसा राजकुमार ने कैथरिन से कहा—"आप मेरे साथ नाचेंगी ?"

कामरोव जब राजकुमार को यहाँ लिवा लाये तभी उनके मन में इस शङ्का ने स्थान पा लिया था कि राजकुमार कैथरिन से अपने साथ नाचने को अवश्य कहेंगे। कामरोव ने इस आशा को प्रश्रय देकर कि कैथरिन नम्रता-पूर्वक इनकार कर देगी, शांति पा ली थी। अब उन्होंने देखा कि कैथरिन राजकुमार के इस प्रस्ताव पर प्रसन्नतापूर्वक उठकर खड़ी हो गई और उनके साथ चल खड़ी हुई।

शान्ति की जगह, उससे कहीं बढ़ी-चढ़ी अशांति ने ले ली।

मनुष्य एक ओर प्रबल शक्तिशाली होते हुए भी दूसरी ओर कैसा दुर्बल होता है!

१४

कमल की तबीयत बिल्कुल ठीक हो गई। किन्तु वह यह निर्णय न कर सका कि अब उसे कहाँ जाना चाहिए। अन्ना से एक दिन उसने स्पष्टतः पूछा था कि उसका कैथरिन से क्या सम्बन्ध है, पर उसने 'ठीक' उत्तर न दिया। यह प्रश्न करना तो अनुचित ही होता कि कैथरिन का किस दल से कैसा सम्बन्ध है। अतः इधर-उधर की और राजनीति, समाज-शास्त्र, दर्शनशास्त्र आदि विषयों की बातें करके ही उसके मन का भेद जानने का कमल ने निश्चय किया।

अन्ना ने उससे एक दिन कहा था कि वह राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को अपना सर्वस्व नहीं समझती। कमल ने देखा कि उसका यह कथन झूठ नहीं है। वह अवस्था में कैथरिन से दो-ढाई वर्ष छोटी जान पड़ती है और उसका झुकाव राजनीतिक बातों की अपेक्षा अपने पश्चिमी दर्शनशास्त्र और सौन्दर्यशास्त्र की ओर कहीं अधिक है। कला को वह इन दोनों का प्राण मानती है। साहित्य और समाज-शास्त्र की बातों में उसकी बेहद रुचि है। विज्ञान-सम्बन्धी बातों को भी वह विशेष ध्यान से सुनती और समझती है। इसी लिए कमल थोड़े ही दिनों में उससे खुलकर बातें करने लगा और अब तो उसकी बातों का कभी अन्त ही नहीं होता—चाहे उनमें जितना अधिक समय व्यतीत हो। किन्तु जब उसे 'मधुप' का चेतावनीपूर्ण पत्र मिला तो वह जैसे जग पड़ा। उसने सोचा—"कैसे आश्चर्य की बात है कि मैं समझा नहीं कि मैं अन्ना से जितनी अधिक बातें करता हूँ और अन्ना की जितनी अधिक बातें सुनता हूँ उसके प्रति मेरे मन का आकर्षण उतना ही अधिक होता जा रहा है। मेरा उच्च दर्शन-शास्त्र और उच्चतम स्वार्थवाले समाज-शास्त्र का ज्ञान उतने प्रभावदायक नहीं रह गये। और तो और, यह विज्ञान भी मेरी यथेष्ट सहायता नहीं करता। कैथरिन इस 'भयङ्करता' के साथ मेरे मन को प्रभावित न कर सकी थी। अब तो वह और भी दूर हो रही है।"

एक दिन उसने विरक्ति के साथ अन्ना से कहा—"हम सब मूर्खता से अपने को शरीर मान बैठे हैं। शरीर क्या है? पानी, चूना, नमक, लोहा आदि से बना हुआ पदार्थ-विशेष ही तो है! यह चाहे जितना अद्भुत और जटिल हो पर इसका मोह घोर मूर्खता के सिवा और कुछ नहीं है। भारतीय लोगों ने इसके प्रति वैराग्य की जो बातें लिखी हैं वे बहुत ठीक हैं। पश्चिम के भौतिकवादियों ने हमारे देश के मायावाद की हँसी उड़ानी चाही पर असल में मनुष्य मात्र की वास्तविक रक्षा के लिए उससे बढ़कर कोई कवच नहीं। हमें जिस आनन्द की प्राप्ति करनी है वह विषयानन्द से बहुत परे है। तामसिक और राजसिक आनन्द ही हमें नीचे गिराते हैं। इनमें फँसकर हम अपने मानव-जीवन के लक्ष्य और सच्चे आनन्द से भी दूर हटते जाते हैं।"

अन्ना ने जान लिया कि यह कवच क्यों तैयार किया जा रहा है। उसने पहले चाहा कि कह दे कि ये बातें अन्य सभी प्राणियों की और मानव-प्राणियों की भी स्वाभाविक प्रवृत्तियों के विरुद्ध होने पर ढोंग या आत्म-प्रतारणा की ही मानी जायँगी पर वह यह कह न सकी। उसे ऐसा कहना लज्जापूर्ण जान पड़ा। क्या वह कमल से दुर्बलतर है? वह मन्द हँसी हँसकर चुप रही।

उसकी इस हँसी से अपनी दुर्बलता और स्पष्ट देखते हुए कमल ने फिर कहा—"दुर्बलता पर विजय पाना ही हमारा कर्तव्य है।"

तब अन्ना कह उठी—"और कोई दुर्बलता उतनी घातक नहीं होती जितनी अपने आपको या दूसरे को धोखा देने की कोशिश। अस्वाभाविक निग्रह से लाभ न होकर हानि ही होती है। त्वचा, हाड़-मांस और रक्त से हम अभिन्न नहीं हैं। इनके प्रति वैराग्य रोगियों के लिए ही शोभाप्रद है।"

अब कमल खुल पड़ा। तेज़ स्वर से कहने लगा—"ये सब आजकल के बहके हुए लोगों के भ्रामक सिद्धान्त हैं। दुर्बलता को स्वाभाविक मानना या ऐसा मानना कि पापी की अपेक्षा वह कहीं बढ़ा-चढ़ा है

जो अपनी दुर्बलता प्रकट कर देता है और साथ ही उसी के अनुसार खुल्लमखुल्ला करता है, ये सब आजकल के विकृत दिमाग़ों की उपज हैं। मैं डाक्टर होकर तुमसे कह रहा हूँ कि बुरी प्रवृत्तियों पर विजय पाने में ही मनुष्यत्व है। शारीरिक आकर्षण पर विजय न पाना ही कमज़ोरी और रोग है।"

अन्ना ने कहा—"आप इतने आवेश में क्यों जाते हैं? प्रश्न तो यही है कि बुरी प्रवृत्ति कौन है और कौन स्वाभाविक या लाभदायक प्रवृत्ति है। मान लीजिए कि संसार भर के पुरुषों के लिए यह सम्भव हो जाय कि वे स्त्रियों पर दृष्टि भी न डालें तो क्या इससे संसार का लाभ होगा या वह चलता रहेगा?"

कमल—उसके चलाते रहने का हमें ठाका मिला है क्या?

अन्ना ने तीव्र स्वर में कहा—"वहीं तो आप लोगों की मज़हबी और क़ौमी कमज़ोरियाँ, अस्वाभाविक दार्शनिकता और घोर असामाजिकता पद-पद पर प्रकट हो जाती हैं। बहुत समय तक योरप के सब देशों में पादरियों ने भी ऐसा ढोंग रचा था। छिप-छिपकर बच्चे पैदा करते थे और सबको आप जैसे ही उपदेश देते थे। धन्य हैं आप लोग और धन्य है आपका रोगी व्यक्तिवाद।"

कमल—अन्न और हवा की जीवन के लिए कितनी अधिक आवश्यकता है? फिर भी अत्यधिक अन्न या वायु से रोगों की वृद्धि और मृत्यु तक का सामना करना पड़ता है। प्रत्येक असंयम के लिए यही सत्य लागू है। पादरियों के ढोंगी या असंयमी हो जाने से असंयम को स्वाभाविक नहीं सिद्ध किया जा सकता। अन्ना ने हार न मानी। कमल ने जिस 'सत्य' की दुहाई दी वह उसे अपना समर्थक ही दीखा—"अत्यधिक समय को तो अस्वाभाविक सिद्ध किया जा सकता है?" उसने दृढ़ स्वर में कहा, मानों वह किसी बच्चे को पाठ सिखा रही हो!

कमल बोला—"पशुओं की भाँति खाने-पीने, सोने या अन्य वासना-पूर्ति में या यन्त्र की भाँति रुपयों के इकट्ठे करने आदि के कामों में

ज़िन्दगी बितानी रईसों का काम हो सकता है और व्यवसायियों और पादरियों का भी। पर हमारे सामने तो संसार के नव-विधान की समस्याएँ हैं। बच्चों जैसे खेलों, व्यर्थ के कामों या बक-बक में क्या ऐसे लोगों को भी लगे रहना चाहिए? एक दूसरे से धन और विषय-भोग में, जायदाद में, या प्रभुता के पदों में बढ़ने के प्रयत्नों को क्या हमें बच्चों जैसा अज्ञान ही नहीं समझना चाहिए?"

अन्ना खिलखिलाकर हँस पड़ी। बोली—"ख़ूब! अब मैंने वास्तविक हिन्दुस्तानी ब्राह्मण या मौलाना देखा है। यहाँ जो लोग पहले से रहते हैं उनमें से मैंने किसी से भी ऐसी बात कभी नहीं सुनी। आपका दावा सचमुच बड़ा मनोरञ्जक है। आप स्पष्टतः यह कह रहे हैं कि आपको न तो खाना चाहिए, न पानी, न कपड़े चाहिएँ न मकान। स्त्री और बच्चों आदि की तो बात ही क्या! धन, जायदाद और पद के लिए ठीक तरह कोशिश करना आप मूर्खतापूर्ण कहते हैं। यही भ्रामक विचार और असामाजिक भाव आत्म-प्रवञ्चना और कर्तव्यहीनता के आधार हैं। या आप निस्सन्देह वैसे मनुष्य हैं जो धर्म और मज़हब के नाम से विचित्र त्यागी बन संसार को चकमे में डालकर उसे उल्लू बनाने में समर्थ होते हैं। ऐसा हो तो मैं आपका साथ देने को तैयार हूँ। मैं तो यहाँ तक कहती हूँ कि हमें हवा तक न चाहिए, और रोशनी की तो क़तई ज़रूरत नहीं है। एक पहाड़ की गुफा में आँख, कान, मुँह बन्द करके पड़ा रहना ही मनुष्यत्व का चरम लक्ष्य है! ठीक है न?"

अब फिर वह ज़ोर से हँस उठी। कमल खिसिया सा गया। ऐसी 'धृष्ट' सुन्दरी से वह कहता तो क्या कहता! थोड़ी देर वह चुप रहा। फिर उसने कहा—"तुम मेरे साथ 'मोएटी कार्लो' चलोगी?"

अन्ना—अपने 'मायावाद' और ऊँचे उपदेशों को छोड़कर, एक साधारण मनुष्य की भाँति आप मुझसे यह चाहें तो मैं अवश्य चलूँगी। संसार भर के साधारण लोगों का दृढ़ संगठन ही हमारा परम उद्देश्य है।

असाधारण शक्ति का दावा करनेवालों से मैं घबराती हूँ। ऐसे लोगों को मैं देख चुकी हूँ।

कमल—कामरोव का एक हवाई जहाज़ यहाँ आ गया है। उसी से मैं चलना चाहता हूँ। मेरी प्रार्थना है कि तुम अवश्य चलो। मैं असाधारण लोगों में नहीं हूँ। असाधारणता में मेरा विश्वास भी नहीं।

अन्ना—तो आपकी यह प्रार्थना मैं सहर्ष स्वीकार करती हूँ और चाहती हूँ कि आप ऐसी ही साधारण अवस्था में रहा करें। सम्भव है, संसार में इने-गिने थोड़े से असाधारण शक्तिशाली लोग शताब्दियों में हुआ करते हों। हम लोग उनका अनुकरण करें तो कहीं के भी न रहेंगे और पछतावे के सिवा और कुछ हाथ न लगेगा। थोड़े-बहुत त्याग और साधारण साधना से ही हमें सन्तुष्ट रहना चाहिए।

कमल—किन्तु संसार भर की सेवा करने की तो तुम्हारी भी महत्त्वाकांक्षा है? एक देश दूसरे देश को या एक रंगवाले और रंगवालों को लूटते रहें यह तो तुम नहीं चाहती हो?

अन्ना—इसका कारण है—मैं जानती हूँ कि लूट का फल है स्वयं भी लूटे जाना। अपने जीवन की गति का सामञ्जस्य मैं देश, काल और संसार की गति के साथ इसी लिए रखना चाहती हूँ। अन्याय करनेवाले समूहों से—चाहे वे धर्म, राजनीति, समाज या किसी भी नाम से बने हों—मैं भागती हूँ। बस इतना ही—यह नहीं कि अपने को मिटा देना चाहती होऊँ। नाम रूप को आप 'माया' या 'लीला' माना करें, हमारे लिए तो वेही सर्वस्व हैं। सबके नाम और रूप एक से हो जावें तो संसार का खेल ही ख़तम हो जाय। अपने नाम और रूप को बनाये रखने के लिए ही तो व्यक्तियों, समाजों, देशों और भूखण्डों में तरह-तरह की लड़ाइयाँ हो रही हैं। इन भेदों को हटा देने का स्वप्न पागलपन में उस स्वप्न से भी बढ़ा-चढ़ा है जो भावुक लोग संसार भर से दीन, हीन और रोगियों को हटा देने के लिए देखा करते हैं। वे भी

अपने स्वप्न को भाँति-भाँति से वैज्ञानिक प्रमाणित करना चाहते हैं। मैं तो समता को मृत्यु और विषमता को ही जीवन समझती हूँ। आपमें और मुझमें विषमता है, इसी लिए हमारा आकर्षण स्वाभाविक है। है या नहीं?

कमल ने हँसकर कहा—है क्यों नहीं? इसे अस्वाभाविक कौन कह सकता है? पर मनुष्य का किसी भी मनुष्य या पशु-पक्षी के प्रति भी जो प्रेम होता है उसे अस्वाभाविक नहीं कह सकते। हम सबकी आत्मा एक है और वास्तविक खिंचाव आत्मा का ही है, शरीर या मन का नहीं, चलो बाहर घूम आवें। बाहर आसमान तक में खिंचाव है।

दोनों घूमने चल खड़े हुए। पर अन्ना ने कमल के इस संयम को उसकी असाधारण दुर्बलता समझा और इसका कारण समझा कमल का अभी तक पूर्णतः स्वस्थ न होना—जब कि स्वयं कमल परमात्मा को इसके लिए धन्यवाद दे रहा था कि वह अस्वास्थ्यकर आकर्षण एवं असंयम पर विजय पाने में किसी तरह समर्थ हो रहा है। इसके साथ ही कमल ने यह भी सोचा कि सेवाव्रती रूसी कैथरिन को छोड़कर इस विलासाभिलाषिणी अमरीकन अन्ना की ओर खिंचकर वह कहीं का न रहेगा। इससे वह अपनी इस सावधानी पर और भी अधिक प्रसन्न हुआ।

किन्तु अभी वह इन दोनों के भीतरी रहस्यों से अपरिचित ही तो है।

× × × ×

यात्रा की तैयारी हो रही थी कि कामरोव का एक तार कमल को मिला—मेरे मोन्टी कार्लो आते समय जिस हवाई जहाज़ ने मेरे ऊपर आक्रमण करनेवाले को समुद्र की लहरों पर से उठा लिया है उसके बारे में वहाँ गवर्नमेण्ट की ओर से जाँच हो रही है। विस्तृत बातें अलग पत्र से मालूम होंगी।

अतः कमल को रुक जाना पड़ा। किन्तु जब अन्ना ने सहसा यात्रा स्थगित करने का कारण पूछा तो वह यह निर्णय न कर सका कि ये बातें उससे बतला देना उचित होगा या नहीं। बतला देने से वह अन्ना से

इस जाँच की बातों के पता रखने आदि में सहायता पाने की आशा कर सकता था, पर साथ ही यह भी तो सम्भव था कि अन्ना यहाँ की गोपनीय बातों को किसी ऐसे व्यक्ति या व्यक्ति-समूह से कह देती जिसे उनसे लाभ उठाने की इच्छा होती। उसने हँसकर कहा—"मैंने यह निश्चय किया है कि तुम्हें अपने देश हिन्दुस्तान की अधिकांश जनता की भाषा हिन्दोस्तानी का कुछ ज्ञान करा दूँ तब मोन्टी कार्लो चलूँ।"

अन्ना उसके इस निश्चय से बहुत प्रसन्न हुई क्योंकि इसे उसने कैथरिन और कमल दोनों पर अपनी पूरी विजय मान लिया।

१५

एक मास बाद कमल और अन्ना और कमल के 'सहायक बागड़बिल्ला' जी हवाई जहाज़ से मोन्टी कार्लो में ज्योंही उतरे त्योंही एक मनुष्य ने उनके हाथ में एक लिफ़ाफ़ा रख दिया। कमल ने उसे फाड़ कर देखा, कैथरिन का पत्र है। कैथरिन उसके इस समय यहाँ इस तरह आने की बात पहले से ही कैसे जान गई, यह उसके लिए बहुत आश्चर्यप्रद हुआ। पत्र में लिखा था—"मैं आज ही इँग्लैएड के लिए प्रस्थान कर रही हूँ। आप पत्र-वाहक के साथ आकर मुझसे मिल लें। अन्ना को यह पत्र दिखलाने या यह बात बतलाने की आवश्यकता नहीं है। मिस्टर बागड़बिल्ला को भी यहाँ न लाइएगा।—कैथरिन" कमल ने पत्रवाहक से कहा—"अन्ना को ठहराने के बारे में तुमसे कुछ कहा गया है?"

पत्रवाहक—जी हाँ, जिस कमरे में कैथरिन रहती थी उसी में अब ये रहेंगी। एक दूसरी मोटर इनके लिए मौजूद है।

अन्ना ने आश्चर्य के साथ पूछा—"किसने मेरे ठहरने का प्रबन्ध किया है?"

कमल—कैथरिन ने।

अन्ना—वह इँग्लैएड चली गई न? मैं जानती ही थी। आपको पत्र में लिखकर यहाँ कितने ही काम करने को कह गई होगी।

कमल—हाँ, सबसे पहले तो एक व्यक्ति से अभी मिलना होगा। चलो पहले तुम्हें मोटर पर बिठा दिया जाय!

अन्ना हँसकर बोली—"क्या मैं बच्ची हूँ! मैं जाकर बैठी जाती हूँ। मिस्टर बागड़बिल्ला तो मेरे साथ रहेंगे। आप जाइए, पर जल्दी आइएगा।"

किन्तु कमल ने यह बात न मानी। जब अन्ना मोटर पर बैठकर चली गई तभी वह उस पत्रवाहक के साथ दूसरी मोटर पर बैठकर कैथरिन से मिलने के लिए चल सका।

कमल को लेकर मोटर एक 'महल' के द्वार पर आई। वहाँ कई स्त्रियाँ उपस्थित थीं। एक कमरे में कमल को एक कुरसी पर बिठाकर वह आदमी चला गया।

एक स्त्री बुर्क़े को ओढ़े हुए उसके पास आई और बोली—"क्या आप सोच सकते हैं कि मैंने आपको किस लिए यहाँ बुलाया है?"

कमल ने भौचक्के से होकर कहा—"मुझे कैथरिन ने बुलाया है। आपसे परिचित होने का सौभाग्य तो मुझे प्राप्त नहीं हैं।"

वह स्त्री बोली—"मेरा ही नाम तो कैथरिन है।"

कमल—तो फिर मुझसे ही भूल हुई। मैंने एक दूसरी ही कैथरिन का पत्र इसे समझा। आश्चर्य की बात है कि तुम भी बिल्कुल उसी की तरह के अक्षर लिख सकती हो।

स्त्री—आपसे भूल नहीं हुई, वह कैथरिन मैं ही हूँ।

कमल—अक्षरों की लिखावट की समता को तो स्वीकार कर सकता हूँ, पर यह कैसे मान लूँ कि इतने ही थोड़े समय में बोली के ढङ्ग में इतना अधिक परिवर्तन हो सकता है?

स्त्री—आप तो डाक्टर हैं। क्या इसे किसी तरह सम्भव नहीं समझते? शरीर रोगों का घर है। रोग के प्रभाव से स्वर में अन्तर हो जाता है या नहीं?

कमल—सम्भव है, पर प्रकृति में तो ऐसा अन्तर न हो जाना चाहिए कि अपने आपको इस तरह ढँकने की ज़रूरत पड़े।

स्त्री—आपके देश में तो बहुत समय से ऐसा रिवाज है। टर्की में कमाल पाशा ने इसे और मौलानाओं की लम्बी-लम्बी डाढ़ियों को ज़बरदस्ती दूर कराया। आप इससे बुरा क्यों मानते हैं?

कमल—मैं बुरा क्यों मानूँगा? पर तुम्हारी इस बात पर कि तुम वही कैथरिन हो, मैं इस तरह विश्वास नहीं कर सकता।

इसी समय उस कमरे में बुर्क़े में ही चार स्त्रियाँ और आईं। पहले से जो स्त्री मौजूद थी वह इन चारों की ओर फिरकर बोली—"मुझे ये कैथरिन नहीं मानते, इसलिए मैं तो जाती हूँ।" फिर कमल से बोली—"देखिए इन चारों में कोई वह कैथरिन है।" कमल ने एक का हाथ पकड़-कर कहा—"तुम यह क्या तमाशा कर रही हो? क्या यह तुम लोगों के लिए शोभाप्रद है?" शेष सभी स्त्रियाँ हँसती हुई चली गईं। उस स्त्री ने, जिसका हाथ कमल ने पकड़ा था, अपने बुर्क़े को उलट दिया और कहा—"मेरा दोष नहीं है। इन्हीं लोगों ने आपकी ऐसी परीक्षा लेनी चाही थी। कमालपाशा के पहले टर्की देश में वहाँ की स्त्रियाँ अपने बदन को जैसा ढँके रहने पर मजबूर थीं वैसा इन्होंने यहाँ हँसी में किया। आपके देश में, सुना है, ऐसा अत्याचार अब भी हो रहा है—विशेषतः मुसलमानों में। जो हो, आप परीक्षा में पास हो गये।"

कमल ने देखा, कैथरिन के ओठों पर शुभ्र चाँदनी की भाँति हँसी फैली हुई है। वह न जाने क्यों तेज़ी से उठ खड़ा हुआ, किन्तु फिर बैठ गया और बोला—"इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने का पुरस्कार क्या है?"

कैथरिन ने कहा—"वह समय आने पर मालूम होगा।"

वह भी एक कुरसी पर बैठ गई और बोली—"मैं आज जा रही हूँ पर असल में मैं अभी जाना न चाहती थी।"

कैथरिन—मेरा पत्र इस मोटर लानेवाले ने आपके बागड़बिल्ला को दे दिया होगा। अब अन्ना को मिल गया होगा, पर उससे वह यह नहीं जान सकती कि मैं अभी इँगलैण्ड नहीं गई। उसमें तारीख़ पहले की है।

कमल—इस सब झूठ की ज़रूरत तुमको क्यों पड़ी?

कैथरिन—वही तो कह रही हूँ। आपको चुपचाप अपने साथ इँग-लैंड में ले जाना चाहती थी और चाहती हूँ।

कमल—अच्छा, तुमको यह कैसे मालूम हो गया कि आज हम ...हुँच रहे हैं?

...रिन—यहाँ की स्त्रियों के पास रेडियो-सेट का अपना प्रबन्ध है। ...पका हिन्दुस्तान ...है, जहाँ पुरुषों को भी रेडियो-सन्देश भेजने ...स्वाधीनता न...

कमल—... झूठ नहीं बोल सकता। आज ही मैं उनसे ...

... झूठ बोल सकते हैं तो कामरोव से क्यों नहीं

...और ... हँसकर फिर कह उठी—"अच्छा, जाने ...अगर ... ले जायँ तो!आप बराबर यहीं रहिएगा। ...तो ..., नहीं तो अन्ना के साथ नाचने में यहाँ ...

... तुम्हें भी पसन्द आता?

... नहीं? नाचना तो बिलकुल निर्दोष कला है। ... के साथ और फिर राजकुमार के साथ कई बार नाच

...ल—अन्ना भी ख़ूब नाचती है! और कई बार अमेरिका के ... साथ नाच चुकी है!

दूसरे देशों के शासन में गड़बड़ न करना चाहेगा, उसे रूस के लिए मान लिया। अब इनमें और घनिष्ठ समझौता हो रहा है। इस सबका असली कारण क्या है?"

डाक्टर कमल ने देखा शोफ़र आ गया। बोला—"मैं यह कुछ नहीं जानता। अल्विदा—प्रणाम।"

१६

जब कमल उस मोटर पर फिर बैठकर कामरोव से मिलने चला तब उसके मन में तरह-तरह के भाव उठने लगे। पहले उसे जान पड़ा मानों उन बुर्क़ेवाली सुन्दरियों का छिपा हुआ परिहास उसे अभी तक विद्ध कर रहा है। फिर उसने कैथरिन की एक-एक बात सोची और कई एक शब्दों तक को दुहराया। उसकी नाच सीखनेवाली बात पर उसे हँसी आई और मन ही मन कह उठा—"यह जानकर कि मैं भी किसी समय यह कला सीख चुका हूँ, वह झेंप गई थी। ज़रूर झेंपी थी। चाहे जिस देश की स्त्री हो, किन्तु पुरुष के साथ नाचते-नाचते जिस प्रकार वासना उत्तेजित हो सकती है और जिस प्रकार का प्रेम-प्रदर्शन भी हो सकता है उनके बारे में किसी अन्य दक्ष पुरुष की बात सुनकर या उनके संकेत से भी वह झेंपे बिना रह ही कैसे सकती है। हाँ, बहुत ही नीचे गिर गई हो, अपनी आत्म-मर्यादा खो ही बैठी हो, तो बात ही दूसरी है। कैथरिन तो आत्माभिमानिनी युवती है। किन्तु समष्टि की सेवा में लगने पर भी व्यक्ति के प्रति इतना झुकाव या नाच-रंग का ऐसा शौक़ क्या उचित कहा जा सकता है?—उचित हो या अनुचित, है यह इन लोगों के लिए सर्वथा स्वाभाविक! इसे अनिवार्य प्रतिक्रिया समझना चाहिए। और नैपोलियन जैसे महत्त्वाकांक्षी वीरवर ने भी तो प्रेम-पत्र लिखे थे! आजकल के नेताओं में से ही कितने व्यक्तिगत प्रेम से बचनेवाले हैं? और बचें कैसे? मनुष्य तो मनुष्य ही है। विधाता ने ही उसे अपूर्ण बनाया है। वह कितना ही पूर्ण बनने का प्रयत्न करे पर कुछ न

कुछ अपूर्णता का—बल्कि कितनी ही अपूर्णताओं का—शेष रह जाना ही स्वाभाविक है। किन्तु मैं......और अन्ना......और यह कामरोव के समझौते का रहस्य ...। सहसा उसने मोटर चलानेवाले से कहा—"क्या कामरोव भी कभी यहाँ आये थे?"

मोटर चलानेवाले ने कहा—"हाँ, वे तो बहुत ही बेवक़ूफ़ बने थे। उनसे कैथरिन से विवाह करने को कहा गया था।"

विस्मय के साथ कमल ने पूछा—"किसने कहा था?"

"स्त्रियों की सभा ने।"

"फिर? कामरोव ने इन्कार कर दिया?"

"नहीं। उन्होंने स्वीकार कर लिया और कहा कि कैथरिन को वहीं प्लेटफ़ार्म पर भेज दिया जाय।"

"वह गई?"

"नहीं, वह नहीं गई?"

"उसने इन्कार कर दिया?"

"और क्या, यही समझना चाहिए। सम्भव है, वह आपसे अपना विवाह करना चाहती हो।"

"मुझसे? यह असम्भव है।"

"यहाँ मोण्टी कार्लो में असम्भव भी सम्भव हो जाता है। यह महल तो हिन्दोस्तान के ही एक राजा का बनाया हुआ है। उन्हें एक सुन्दरी ने बेहद लूटा था।"

कमल की आँखें क्रोध, घृणा और ग्लानि के भाव प्रकट करने लगीं। उसने कहा—"ज़िन लोगों की कठिन कमाई के पैसे दूसरे देशों में इस प्रकार बहाये जाते हैं वे लोग भी अब निद्रित अवस्था में नहीं हैं। उन पर राजा को, चाहे वह जैसा हो, ईश्वरांश समझने का जादू छाया था। पर वह भी अब उतर गया है। उनके उचित अधिकारों की अवहेलना अब नहीं की जा सकती।"

मोटर-ड्राइवर ने कहा—"स्त्रियों की उचित सहायता पाने पर ही सब कुछ हो सकता है। वे तो वहाँ अभी तक दूसरों की दया पर निर्भर हैं।"

कमल—यह झूठ है! वे भी अपने पैरों पर खड़ी होने में समर्थ हो रही हैं। स्वदेशी व्यवसायों की वृद्धि में उन्हीं का सबसे बड़ा हाथ है। फ़ैशन-परस्ती छोड़कर के स्वदेश-भक्ति की ओर अग्रसर हो चुकी हैं।

मोटर-ड्राइवर—सम्भव है आपका कहना सच हो, पर अभी इस सभा में कुछ रानियाँ भी आई थीं। उनका रङ्ग-ढङ्ग इसके बिल्कुल विपरीत था।

कमल—उन्हें अपवाद रूप ही समझना चाहिए। तुम मुझे अभी कितनी दूर और ले चलोगे?

"अभी दूर है। जहाँ अन्ना गई है और जहाँ कामरोव महोदय भी हैं वहीं तो चलना है न?"

"हाँ, वहीं। तुमने उनके 'सहायक' को कैथरिन का कोई पत्र दिया था?"

"हाँ, वह था तो अन्ना के ही नाम, पर कैथरिन ने मुझसे कह दिया था कि आपके नौकर यानी सहायक से कह दूँ कि वह उसे अन्ना को तब दे जब मोटर गन्तव्य स्थान पर पहुँच जाय!"

"क्या कैथरिन ने कह दिया था कि पत्र इस तरह देना जिसमें मैं देखने न पाऊँ?"

"यह तो स्पष्ट ही है। इसे आप क्यों पूछते हैं?"

तब कमल चुपचाप अन्ना और कामरोव के बारे में सोचने लगा।

जब मोटर पहुँच गई, मोटर-ड्राइवर उतर पड़ा। इन्हें साथ लेकर वह उस कमरे में गया जहाँ कामरोव थे।

कमल ने देखा कि कामरोव अन्ना के हाथ में हाथ मिलाये, हँसते हुए, टहल रहे हैं और कुछ बातें कर रहे हैं। अन्ना भी उन बातों का उत्तर हँस-हँसकर दे रही है।

और एकाएक दूसरी ओर से किसी ने आकर कामरोव पर आक्रमण किया।

उसी समय मोटर-ड्राइवर ने कहा—"मैं जा रही हूँ। मैं स्त्री हूँ और जिसने कामरोव पर हमला किया है वह भी स्त्री ही है।"

"घोर विश्वासघात!—कैथरिन, अन्ना आदि ने कामरोव के और शायद मेरे भी विरुद्ध हिंसक स्त्रियों का षड्यन्त्र तैयार किया है! किन्तु मुझे मार डालने का यह सुअवसर इन्होंने क्यों छोड़ दिया? शायद अभी मुझसे भी कोई काम निकालना चाहती हों।"—ये विचार कमल के मन में बिजली जैसी तेज़ी से दौड़ गये। तब तक वे कामरोव के पास पहुँच गये।

कामरोव को अपनी चोट अधिक न जान पड़ी और उन्होंने स्वयं ही आक्रमण करनेवाली पुरुष-वेषधारी स्त्री को पकड़ना चाहा, पर वे गिर पड़े। वह स्त्री तेज़ी से भागी।

कमल दौड़ा और अन्त में एक गली में कमल ने दौड़कर उस आक्रमणकारिणी को पकड़ लिया। उसे कामरोव के पास लाकर बोला—"यह स्त्री है। यह इन सबका षड्यन्त्र है। मेरी मोटर लाने-वाली भी पुरुषवेषधारिणी स्त्री थी। उसने मुझसे जाते-जाते कहा कि यह स्त्री है और वह भी स्त्री है। यह षड्यन्त्र क्यों? आपको चोट ज़्यादा तो नहीं आई?"

अन्ना उनकी जाँघ में पट्टी बाँध रही थी। कामरोव ने कमल के प्रश्न का उत्तर सिर हिलाकर दिया।

कमल ने कहा—"इसके लिए ईश्वर को धन्यवाद।"

यह सुनकर कामरोव धीरे से हँस पड़े।

दाहिनी जाँघ में पट्टी बँध जाने पर उन्होंने कहा—"चोट कितनी है, यह अब देखता हूँ। हाँ, मेरी बाईं जाँघ में एक गोली घुस गई है। पर वह आसानी से निकल जायगी।"

यह कहते-कहते वे बेहोश हो गये।

और थोड़ी ही देर में वह स्त्री भी यह कहते हुए बेहोश हो गई—"मेरे ऊपर, जान पड़ता है, गैस का प्रयोग किया गया है।"

अत्यन्त हिंसक और क्रूर आँखों से अन्ना ने कमल की ओर देखा मानों उसका बस चलता तो उन्हें अभी समाप्त कर देती। उसका यह रूप कमल और कैसे देख सकता था! दृढ़ता से कमल ने कहा—"यह बिलकुल झूठ है। यहाँ गैस कहाँ!"

१७

छद्मवेषिनी कैथरिन को जर्मन राजकुमार ने देखते ही पहचान लिया था। ज़ारवंश के दूर से दूर के सम्बन्धियों को भी वह जानता था और कैथरिन के दो साल पहले तक का फोटो उसके पास मौजूद था। पर इस राजकुमार ने कैथरिन के मन पर कामरोव के अनुचित प्रभाव पड़ चुकने के बारे में जो कुछ सोचा उसे कुछ अनुभव प्राप्त करने पर वह बदलने पर विवश हुआ। उसने देखा कि अब भी कैथरिन का एक अलग व्यक्तित्व है, वह कामरोव की छाया नहीं, वह कामरोव की वैसी साथिन भी नहीं जैसी उसे बाहरी लोग समझते हैं। वह अद्भुत रहस्यमयी है। तरह-तरह की स्त्रियों से और उनके दलों से वह मिलती है और थोड़ी घनिष्ठता हो जाने पर वह उनसे यह छिपाना नहीं चाहती कि पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों पर उसका अधिक विश्वास है। संसार का भविष्य वह पुरुषों के हृदय-परिवर्तन पर उतना अवलम्बित नहीं मानती, जितना स्त्रियों के इस कार्यक्षेत्र में उचित स्थान प्राप्त कर लेने पर। इस राजकुमार को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि कैथरिन का पूरा विश्वास है कि जब स्त्रियों का ही युद्ध की समस्त वैज्ञानिक सामग्रियों—अस्त्र-शस्त्रों, गैसों, वायुयानों आदि—पर आधिपत्य हो जायगा और इनमें से कोई भी वस्तु किसी भी पुरुष के हाथ में न रहेगी तब पुरुष-पशुओं की शक्ति बेकार हो जायगी और तभी संसार सच्ची शान्ति और सच्चे विकास की ओर ठीक तरह चलने में समर्थ हो सकेगा। नारियों में भी वैसी ही पशुता और दानवता हो सकती है, इसे वह असम्भव मानती

है। मातृत्व की ऐसी अहिंसामयी शक्ति को ही वह व्यावहारिक रूप में सर्वश्रेष्ठ और सबसे कल्याणमयी समझती है।

किन्तु अपने ऐसे विचार कैथरिन ने कमल और कामरोव में से किसी के आगे पूरी तरह अब तक प्रकट नहीं किये थे। इस राजकुमार से उसने इस बारे में क्यों खुलकर बातें कीं, यह वे न समझ सके। स्त्रियों से इस विषय में वह स्पष्ट बातें करती है, यह राजकुमार ने अपनी आँखों से कई बार देखा। परन्तु अपना भावी जीवन वह कैसा बिताना चाहती है—एकाकी या विवाहित रहकर? इस बारे में उसने राजकुमार को कभी कुछ न बतलाया था। वह इस बात को टरका गई और अगर राजकुमार ने ज़ोर दिया तो साफ़ कह दिया कि ऐसी बातों का उत्तर नहीं देना चाहती।

जर्मन राजकुमार ने यह समझ लिया कि कैथरिन के हृदय में एक प्रण है और सामने एक स्पष्ट कार्यक्षेत्र है।

उन्होंने उसके साथ नाच-घर में जाकर फिर नाचना चाहा तो इसके लिए वह तैयार न हुई। कारण पूछे जाने पर उसने कहा—"नाचना-गाना मैंने बहुत दिनों से छोड़ दिया था। पर एक हिन्दुस्तानी डाक्टर ने मुझे बहुत कुछ चङ्गा कर दिया है। मेरे जीवन में नया उल्लास और नया आवेग उन्हीं की कृपा के फल-स्वरूप आये। उस दिन आपको देखने पर मैं उन्हीं के लिए नाची।"

जर्मन राजकुमार ने आश्चर्य में आकर कहा—"इसका क्या मतलब? क्या वे तुम्हारे प्रेमी हो गये हैं और तुमने एक हिन्दुस्तानी का प्रेम स्वीकार कर लिया है?"

कैथरिन विद्रूपपूर्ण हँसी हँसी। बोली—"क्या कुछ हिन्दुस्तानी प्रोफ़ेसरों या ऐसे ही उच्चवर्गीय लोगों के प्रेम-प्रस्ताव को जर्मनी की कुछ कुमारियों ने स्वीकार नहीं किया है? कई एक उनकी सहधर्मिणी बन चुकी हैं। इसमें तो बेहद अच्छाई है और बुराई एक भी नहीं है। लेकिन इसका आशय यह नहीं है कि मैंने भी ऐसा बनने का निश्चय कर

लिया है। और मैं कर लूँ तब भी उन हिन्दुस्तानी डाक्टर के लिए अभी यह सम्भव नहीं है कि वे मुझे हिन्दुस्तान ले जायँ। वे विज्ञान-सम्बन्धी कुछ खोज रूस में कर रहे हैं।"

जर्मन राजकुमार ने हँसकर कहा—"मनचाही स्त्री की खोज में सफलता प्राप्त कर लेने पर कोई मनुष्य, चाहे वह जैसा बड़ा वैज्ञानिक हो, अन्य अनुसन्धानों में समय नष्ट नहीं करना चाहेगा। पर मुझे जान पड़ता है, तुमने अपने सामने जो श्रीमती एनी बेसेण्ट जैसा ऊँचा आदर्श रख लिया है वह तुम्हें विवाह-बन्धन से दूर रक्खेगा। तुम्हारे लिए मेरे प्रस्ताव को मानकर पहले जर्मनी चलना सर्वश्रेष्ठ होगा।"

कैथरिन—नहीं, खेद है, आपके साथ मैं कहीं नहीं जा सकती। और श्रीमती बेसेण्ट विवाहित जीवन का आनन्द भोगकर और उससे विरक्त होकर एक ऊँचे आदर्श के साथ हिन्दुस्तान गई थीं। उनकी अवस्था तब कम न थी। मैं उन जैसी अनुभूति, उनकी विद्वत्ता, उनकी प्रतिभा या उनका आदर्श अभी समझ भी नहीं सकती। अतः मैं अभी रूस में ही रहूँगी—देखूँगी उसका सच्चे विश्व-बन्धुत्व का दावा कहाँ तक ठीक है।

यह बातचीत कामरोव के आ जाने से दूसरी ओर मुड़ गई।

डाक्टर कमल जिस दिन आये उसके दूसरे ही दिन इन राजकुमार या बैङ्कर ने उनसे भेंट की और फिर जर्मनी चलने को कहा। उन्होंने कमल से मिलने से पहले ही वह सब जान लिया था जो इस एक दिन में घटित हुआ। बातों के सिलसिले में जब डाक्टर कमल ने कहा—"इस समय स्वतन्त्रता का सबसे अधिक लाभ पानेवाली स्त्रियाँ रूस देश की ही हैं। वहीं मूक जनता ने बोलने की शक्ति पाई और अन्धकार-पीड़ित स्त्रियों ने आत्मशक्ति का प्रकाश। ऐसा भावान्तर और कहाँ हुआ है?" तो भावावेश से नहीं वरन् गम्भीरता के साथ राजकुमार ने कहा—"क्यों? आपको जर्मनी की स्त्रियों की, इस समय की, स्थिति का सचमुच पता है? और पहले महायुद्ध या उसके बाद की दशाओं

से तो प्रभावित नहीं हैं ? याद रखिए, जर्मनी के कामों के कारण ही सदियों सूखी पड़ी हुई नदियों में बाढ़ आई है—संसार में एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक सब जगह जाग्रति हुई है। जीवन में एक नया वेग आ गया है। पराधीन लोगों के मन की जड़ता दूर हो गई है। जो दूसरों के पैरों तले लोट-लोटकर अपनी अवज्ञा आप कर रहे थे वे भी आत्म-सम्मान के भाव के साथ उठकर खड़े हो गये हैं। फिर भी आप ऐसा कहते हैं !"

राजकुमार के बोलने के मर्मस्पर्शी ढङ्ग से कमल को अपने मन में स्फूर्तिपूर्ण लहरों के सञ्चार का अनुभव हुआ। उन्होंने उत्साह के साथ कहा—"आप मुझे और कैथरिन को कहाँ ले जाना चाहते हैं ? किसी विशेष स्थान में—?"

राजकुमार ने कहा—"हाँ, मैं आप दोनों को जर्मनी के एक असाधारण सौन्दर्यशाली स्थान में ले जाना चाहता हूँ। सौन्दर्य और स्वास्थ्य मनुष्य के लिए बहुत अंश में पर्यायवाची हैं। रोगी का सुन्दर दिखाई देना कैसे सम्भव है ? वह अपनी सुन्दरता की रक्षा कर ही कैसे सकता है ? आपको मैं वोडेन वोडन स्थान में ले चलना चाहता हूँ। आपने इसका नाम ज़रूर सुना होगा और इसके बारे में कुछ न कुछ पढ़ा भी होगा।"

कमल ने कहा—"हाँ, वोडेन वोडन तो संसार के सुप्रसिद्ध स्वास्थ्य-स्थानों में है। मैंने कई ऐसे लोगों से, जो वहाँ यथेष्ट समम तक रह आये थे, बातचीत की है और कई बार यह भी चाहा कि मैं वहाँ कुछ समय के लिए अवश्य जाऊँ। एक बार तो कामरोव भी तैयार हो गये थे। किन्तु जाने का संयोग न मिला। वहाँ के 'अंगूरी इलाज', तरह-तरह के झरनों के विशेष प्रभावदायी जल और घाटी की नवजीवन-प्रद आबहवा के बारे में मैं काफ़ी जानता हूँ। सबसे अधिक प्रसन्नता तो मुझे यह जानकर हुई थी कि वहाँ हिन्दोस्तानी लोगों के साथ समता का बरताव किया जाता है—रङ्ग का भेद-भाव—काले गोरे में भेद—वहाँ

बिलकुल नहीं है। हिन्दोस्तानी ढङ्गों और हिन्दोस्तानी चीज़ों की हँसी न उड़ाकर वे उनके प्रति अपनी रुचि और आकर्षण प्रकट करते हैं। कैसा अच्छा हो, अगर समस्त योरप में और अन्यत्र भी, जहाँ गौराङ्ग लोग हैं, ऐसी स्वाभाविक विशालता उनके हृदयों में स्थान पा ले।

इसी समय कई खाद्य और पेय पदार्थ उन दोनों के सामने सजा दिये गये। उनका उपयोग करते हुए राजकुमार ने कहा—"आपको भी तो गौराङ्ग ही कहा जा सकता है। मैंने तो आपको इटैलियन समझा था। यह भी सच है कि जब आर्य लोग हिन्दोस्तान में पहले-पहल गये तब वे ऐसे ही गौरवर्ण के रहे होंगे जैसे तुर्क, इटैलियन या काकेशियन।"

कमल—चाहे लोग मुझे इटैलियन समझें या टर्की देश का, पर इससे मैं अन्य देश का तो न बनना चाहूँगा। मैं तो वर्णभेद—रङ्गों के पक्षपात—को दूर करने के लिए पूरा प्रयत्न करनेवालों में हूँ। फ्रांस के लोगों को देखिए। वे हब्शियों से नफ़रत नहीं करते। दक्षिण अमरीका में भी पुर्तगीज़ और हब्शी बिलकुल मिल-जुल गये।

राजकुमार—फ्रांस के लोग अपने क्लबों में सब को एक सा स्थान नहीं दे सकते। मैंने तो सुना है कि आपके देश में ही वर्ण-भेद सबसे अधिक है। वहाँ कुछ लोगों को आम रास्तों पर भी चिल्ला-चिल्लाकर चलना पड़ता है जिससे उच्चवंशीय लोग उससे दूर रह सकें—उनकी छाया तक से अलग रहें। मैंने यह भी सुना है कि सबसे ऊँचा समझा जानेवाला वर्ण किसी और की छुई हुई रोटी-दाल तक नहीं खाता। सभी मुसलमानों को आप लोग तुर्क कहते हैं, यद्यपि उनमें से शायद ही कोई टर्की देश का हो। असल में वे सब आपके ही देश के निवासी तो हैं। क्या यह सब सत्य नहीं है? क्या वहाँ के मुसलमान और ईसाई फ़ारस, टर्की के और योरप या अमेरिका के माने जा सकते हैं?

कमल—यह सब बहुत ही दुःखद सत्य है। इसमें दोष हम दोनों का है कि हिन्दू-मुसलमानों में हिन्दुस्तानीपन का भाव सर्वोपरि नहीं है। किन्तु इसका कारण रङ्गभेद नहीं है। वहाँ आर्य, अनार्य, तुर्कादि एक रङ्ग हैं। छाया की बात एक सूबे की है, फिर भी वह सूबा छोटा नहीं, लेकिन 'तुर्क' समझने और कहने की बात प्रायः सभी सूबों के लिए है। किन्तु अब ऐसे लोगों की संख्या बहुत अधिक हो रही है जो इन सब अस्वाभाविक बातों और ढङ्गों के माननेवाले नहीं हैं। वे लोग जानते हैं कि हम सब केवल हिन्दोस्तानी हैं और कुछ नहीं। हाँ, मनुष्य को हम मनुष्य ही समझना चाहते हैं—चाहे वे जहाँ के हों। उनमें किसी के प्रति अनादर या उपेक्षा का भाव हममें नहीं है। अच्छा, तो आप हमें कब वोडेन वोडन ले चलेंगे?

राजकुमार—मैं तो तुरन्त ही चलता—अगर आप इस तरह के चकमे के शिकार न हो गये होते। अगर कैथरिन आपको चकमा देकर इँगलैण्ड न चली गईं होती तो हम लोग आज ही वहाँ के लिए रवाना हो जाते। अब तो आपकी इच्छा की पूर्ति के लिए मुझे पहले कैथरिन को वहाँ से यहाँ लाना पड़ेगा।

कमल ने मन ही मन कहा—"ख़ूब! यह तो पूरे घाघ से पाला पड़ा है। ये महाशय भी 'सच्चे—बिल्कुल सच्चे लोकतन्त्र' की स्थापना के बहाने दूसरों का राज्य हड़प जानेवालों में हैं।" तब पूछा—"आप मेरे लिए ऐसा क्यों करेंगे?"

राजकुमार—बिल्कुल आपके ही लिए करूँगा—ऐसा दावा मैं नहीं कर सकता। किन्तु मुख्य लाभ तो आपको ही होगा?

कमल—और आपको?

राजकुमार—कुछ लाभ मुझे भी होगा। उसे आप समय आने पर स्वयं देख लेंगे। आर्य संस्कृति की विजय ही हमारा ध्येय है। 'स्वस्तिका' का तो आपके यहाँ भी पूरा सम्मान होता है न?

कमल मन ही मन बहुत चिढ़े। बोले—"अब तो हमारा एकमात्र झण्डा तिरङ्गा झण्डा ही है।"

राजकुमार—तिरङ्गा झण्डा तो फ्रांस का भी है पर उसकी वहाँ के कम्यूनिस्ट लोगों को कितनी परवा है ? दुनिया भर के कम्यूनिस्ट अपना 'लाल झण्डा' रखना चाहते हैं ! आपके यहाँ भी ऐसे ख़ब्ती या स्वप्न-दर्शी जरूर होंगे। इसके सिवा वहाँ मुसलमान लोग अपना अलग झण्डा फहराते होंगे। वह कैसा है ?

कमल ने समझ लिया कि ईंट का जवाब पत्थर से मिला है। अगर उसके यहाँ अन्य स्वाधीन देशों की भाँति सब ने एक ही राष्ट्रीय झण्डे को अपना लिया होता, अगर सब में सच्चा राष्ट्रीय भाव सर्वोपरि हो गया होता तो दूसरे देशों में उस देश के विरुद्ध ऐसा बुरा प्रचार तो न हो सकता। वह और न जाने क्या सोचता, पर राजकुमार ने कहा—"हमारे देश के एक पत्र 'फ्रैंक फ़रटर-जीटुङ्ग' (Frank-furtur-Zeitung) ने बहुत पहले तुम्हारे सर्वश्रेष्ठ नेता को दूसरा ईसा कहा था और यह आशा प्रकट की थी कि उनका ढङ्ग संसार भर को फ़ौजी अत्याचार से छूटने का रास्ता दिखा देगा और चाहे वे स्वयं सफल न हो सकें पर संसार उनका सदैव एक सच्चे उद्धारकर्ता के रूप में स्मरण किया करेगा। विश्वास मानो मजबूरी से हम लोगों को चाहे जो करना पड़े पर तुम्हारे देश को—उस देश को जिसने एक ही समय में एक महान् विज्ञानवेत्ता को एक महान् कलाकार को, एक महान् योगी को और एक महान् कर्म-योगी महात्मा को संसार के सामने रखने का गौरव प्राप्त किया—हम लोग कभी साधारण देश नहीं मान सकते !"

कमल इस प्रशंसा के प्रवाह में बह गया।

इसका फल यह हुआ कि जिस दिन राजकुमार ने इँगलैण्ड के लिए प्रस्थान किया उस दिन तक उसने अनेक ऐसी बातें जान लीं जिनको उसने कमल से जानना चाहा।

१८

जिस स्त्री ने कामरोव पर हमला किया था उसने बतलाया कि वह दो दिनों से सीढ़ियों के क़रीब एक बहुत भद्दी जगह बिना खाये-पिये छिपी रही थी। आज असावधानी के साथ कामरोव यहाँ आये और उसने आक्रमण के लिए यही अवसर उपयुक्त समझा। उसे इसका तनिक भी रंज न था कि वह पकड़ी गई और उसे कठिन से कठिन दण्ड मिलेगा। उसने यही आशा प्रकट की कि जिस काम में उसे सफलता नहीं मिली, उसमें निकट भविष्य में ही कोई दूसरा अवश्य सफल होगा।

अपने बारे में उसने बतलाया कि वह रूस के ही एक स्कूल में अध्यापिका थी। उसने कहा—"कामरोव ने अन्तर्राष्ट्रीय समाज-संघ के प्रति जो विश्वासघात किया है, उसका बदला लेने के लिए और उस संघ की राह का रोड़ा हटा देने के लिए यह आक्रमण किया गया है। अमरीका पूँजीपतियों—विशेष रईसों—का देश है। उससे पूँजीवाद के विरोधी नवीन रूस का समझौता कैसा?"

अपने हवाई जहाज़ पर रूस के लिए रवाना होने के पहले कामरोव ने क़रीब आध घंटे तक कमल से एकान्त में बातचीत की। कमल ने उसे कैथरिन की ओर से फिर सावधान किया और उसने कमल को अन्न की ओर से।

इसके दूसरे दिन जब कमल की भेंट अन्ना से हुई तब उसने देखा कि अन्ना के मुख पर किसी प्रकार की लज्जा या ग्लानि का कोई भी चिह्न नहीं है। अन्य बातें करने के बाद कमल उससे पूछ बैठा—"तुम कामरोव के साथ रूस क्यों नहीं गईं?"

अन्ना ने निर्मल हँसी हँसते हुए कहा—"मैं क्यों जाती? मैं तो आपके कहने से आपके साथ यहाँ आई हूँ। क्या आप मुझे यह इसी लिए लिवा लाये थे कि मैं उनके साथ रूस जाऊँ? ऐसा तो आपने मुझसे कभी न कहा था, नहीं तो मैं शायद आती भी नहीं।"

कमल—क्यों ? क्या तुम रूस नहीं लौटना चाहती ?

अन्ना—लौटना ! आपसे यह किसने कहा है कि मैं कभी रूस में थी ? मैं तो आज तक वहाँ कभी नहीं गई, न जाना चाहती हूँ ?

कमल—क्या तुम रूसी नहीं हो ?

अन्ना—ख़ूब ! आप अमरीका में रहनेवाली सभी स्त्रियों को, जान पड़ता है, रूसी समझने लगे हैं। मैं रूस की नहीं हूँ, न बनना चाहती हूँ। मैं संसार-प्रसिद्ध हब्शी महात्मा जार्ज बेकर की शिष्या हूँ जो अमरीका में खुल्लमखुल्ला कह रहे हैं कि वे स्वयं सर्वशक्तिशाली जगदीश्वर हैं। आपको उनके दर्शन पाने का सौभाग्य प्राप्त न हुआ होगा, तब भी आपने उनके बारे में सुना तो होगा ही। पाँच-पाँच हज़ार आदमियों को मनमाना खिलाते-पिलाते रहना उन्हीं का काम है। गवर्नमेंट भी उनका कुछ बिगाड़ नहीं सकती।

कमल—कामरोव से तो तुम ख़ूब घुल-मिलकर बातें कर रही थीं। मुझे महात्मा, स्वामी या देवता-स्वरूप और परब्रह्म-स्वरूप लोगों की बातों से नहीं, कामरेड कामरोव की बातों से ही मतलब है।

अन्ना ज़ोर से हँसी। बोली—"तभी ! आपको स्वाभाविक ईर्ष्या हुई है। पुरुषों की यही सबसे बड़ी कमज़ोरी है, किसी स्त्री को पुरुष से बातें करते देखते ही वे कह देते हैं—'ख़ूब घुल-मिलकर बातें होती हैं।' वे उनमें मनमाने सम्बन्ध समझने लगते हैं। घुल-मिलकर बातें संसार की अनेक समस्याओं के बारे में हो सकती हैं। इस समय की नारियाँ पुरुषों की भाँति ही बुद्धि और ज्ञान रखने का दावा कर सकती हैं। वे पुरुषों से सभी विषयों पर बातचीत किया करती हैं। आप उनका क्षेत्र, पशुओं के क्षेत्र की भाँति, सीमित क्यों मानते हैं ?"

कमल ने कह दिया—"इस तरह पुरुष के हाथ से हाथ मिलाकर तो संसार की गम्भीर समस्याओं पर विचार नहीं किया जाता।"

अन्ना ने तीखे स्वर में कहा—"आपके देश में न किया जा सकता होगा। वहाँ तो पर्दे से बाहर निकलने में ही स्त्रियों के सतीत्व का नाश

समझा जाता है। फिर आपका ऐसा विचार क्यों न हो ! ईश्वर को धन्यवाद है कि मैं ऐसे अशिक्षित और जंगली देश में पैदा नहीं हुई जो अपनी स्त्रियों के प्रति इतना अधिक अविश्वास रखता है। मेरा कामरेव से हाथ मिलाना तक आप अनुचित मानते हैं।"

कमल को क्रोध आया। उसकी आँखें लाल हो गईं। पर उसने इस समय अन्ना से इस विषय पर तर्क-वितर्क करना ठीक न समझा। वह उठकर चुपचाप टहलने लगा।

अन्ना ने ही फिर कहा—"सभी पुरुष ऐसे ही हृदयहीन जान पड़ते हैं। कामरेव को देखो, मेरी एक बहन को यह कहकर अपने साथ पकड़ ले गया है कि अगर उसे संसार-प्रसिद्ध जोन डी आर्क की तरह वीराङ्गना बनने का शौक़ है तो वैसा ही दण्ड पाने के लिए भी तैयार हो जाना चाहिए। नृशंस, अत्याचारी ! वह उसे रोज़ मनमाने ढङ्ग से पिटवा-येगा—ख़ूब पिटवायेगा, न जाने क्या क्या यन्त्रणाएँ देगा, तब उसे धूम-धाम से फाँसी पर चढ़वा देगा।"

और वह दोनों हाथों से अपना मुँह ढककर सिसक-सिसककर रोने लगी !

कमल स्तब्ध और किंकर्तव्यविमूढ़ सा खड़ा रहा, फिर बोला—"मैं तुम्हें रोने से नहीं रोकता, क्योंकि मुझे स्पष्ट दिखलाई दे रहा है कि भीतर ही भीतर कोई ऐसा भयानक षड्यन्त्र तुम सब लोग मिलकर रच रही हो, जिसका परिणाम किसी के भी लिए सुखद नहीं हो सकता। तुम्हें यह पहले से ही मालूम हो गया था या नहीं कि जिस व्यक्ति ने कामरेव पर हमला किया था वह स्त्री है ? क्या वह सचमुच तुम्हारी बहन—सगी बहन—है ?"

अन्ना ने उठकर कहा—"नहीं, कदापि नहीं, पर क्या आपने नहीं सुना कि कामरेव ने गोली लगते ही उसे सज़ा देने के लिए जोन डी आर्क से उसकी तुलना की थी। आप कुछ न सुनना चाहें, और हर एक को षड्यन्त्रकारिणी ही मान लें तो हमारा कौन बस है ? वह मेरे

देश की नहीं बल्कि रूस की ही है लेकिन हम तो स्त्री मात्र का सङ्घ मानती हैं।"

वह फिर बैठ गई। इस बार कमल ने उसके मुँह की ओर ध्यान से देखा। वह मुख उन्हें भोला और छलहीन ही दिखाई दिया। उसके नेत्र अब भी सजल थे। पर उनमें सच्ची मानवता का भाव कितना था, यह कोई कैसे जान सकता!

फिर भी सान्त्वना के दो-चार शब्द भी न कहना कमल को अनुचित जान पड़ा, पर इस बारे में क्या कहें यह वह सहज ही सोच न सका। अतः उन हब्शी महात्मा के बारे ही में बातें करके अन्ना को प्रसन्न कर लेना उसने ठीक समझा। महात्माओं के प्रति अन्ध-भक्ति रखने के बारे में भी तो सभी देशों में हिन्दुस्तान को बेहद बदनाम किया गया है। अपनी आँख की फूली, व्यक्तियों की भाँति, देश भी तो देख नहीं पाते। उसने 'महात्मा जार्ज बेकर' के सम्बन्ध में सब कुछ जान लेना इस दृष्टि से भी आवश्यक समझा। पर उसे शीघ्र मालूम हो गया कि अन्ना का साथ छोड़ बाहर जाने में ही कल्याण है।

१९

कैथरिन और अन्ना—इन दोनों के बारे में विचार करने के लिए एक बार 'मधुप' ने अपनी सहधर्मिणी को फिर से वे पत्र दिखाये जो इस बीच उसके पास कमल ने भेजे थे। ललिता उन्हें पढ़कर अपनी हँसी न रोक सकी। उनमें कैथरिन की अनेक वस्तुओं और बातों के आकर्षण का, उसके लम्बे छरहरे शरीर, नीली आँखों और कुंचित केश-राशि तक का विशद वर्णन था। पूर्णिमा की चाँदनी छिटक रही थी। छत पर वे दोनों बैठे थे। ललिता सफ़ेद खद्दर की एक साधारण सारी और वैसा ही एक जम्पर पहने हुए थी। बदन पर कोई गहना न था। पर उसके सुगठित तथा संयमशील शरीर से सौन्दर्य फूटा पड़ता था। और

जब वह हँसी, मधुप को जान पड़ा चन्द्र की शीतल चाँदनी उसी की अनुपम शोभा प्रदर्शित करने के लिए खिली हुई थी।

मधुप के मन में एक तुलना आई। कभी कमल भी अपनी सह-धर्मिणी के साथ किसी छत पर बैठेगा। अगर वह सहधर्मिणी हिन्दु-स्तानी न होकर कोई विदेशी होगी तो क्या वह ललिता की किसी प्रकार बराबरी कर सकेगी ? एक सच्चे साहित्य-सेवी की स्त्री के नाते ललिता को अपनी उस अवस्था में, जो उमङ्गों और लालसाओं की मानी जाती है, रूखा-सूखा खाकर, मोटा-पुराना पहनकर अपने दिन काटने पड़े हैं और अभी न जाने कब तक काटने होंगे; किन्तु क्या कभी एक दिन भी उसके मुख पर शिकायत या उलाहने का कोई भाव दिखाई दिया है ? इतना ही नहीं, समय-समय पर जब स्वयं मधुप का मन इस कठोर साधना से भागने लगता है और परेशानियों से बेचैन होकर वह भी उस कला और उस साहित्य के पथ पर जाने को इच्छुक हो जाता है जिस पर उसके अधिकांश साथी सरपट भागे जा रहे हैं और जिसमें न धन की कमी है, न सामयिक वाहवाही की, तब ललिता ही के सुन्दर नेत्रों में मोती से भी बहुमूल्य आँसू उसे छलकते दीखते हैं और उसी के हृदय की सम्पूर्ण मिठास के साथ सुनाई देता है—"ऐसा नहीं हो सकता। आपका रास्ता यह नहीं है। हम और कुछ नहीं कर सके, और कुछ नहीं कर सकते, तो क्या हम इससे भी विचलित हो जायँ ? नहीं, आप ऐसा आघात सहन न कर सकेंगे। मैं आपको जानती हूँ।"

वह क्या जानती है ? क्या नहीं जानती है ? पर यदि वह ऐसा न कहकर इसका उल्टा कहती, अपने वर्तमान जीवन का सदैव रोना रोया करती, तो ?—अच्छा, क्या कमल की कोई विदेशी सहधर्मिणी ऐसी हो सकती है ? उसने ललिता से कहा—"कमल का पतन हो गया। उसने रूसी सुन्दरी कैथरिन की सेवा के वश होकर उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट की, यह स्वाभाविक था। उसके प्रति आकर्षण भी अस्वाभाविक नहीं कहा जा सकता था। पर जब वह रूस के अधिकारी कामरोव के

साथ चली गई और अपनी जगह अन्ना को रख गई तो अन्ना के प्रति उपेक्षा या खिंचे रहने का जो भाव कमल ने दिखाया वह, जान पड़ता है, अन्ना को अपनी ओर विशेष रूप से खींचने के लिए ही था। और अब वह अन्ना के पीछे पागल प्रेमी की भाँति दौड़ रहा है।"

ललिता ने मन्द हास्य के साथ कहा—"मुझे तो आपके मित्र में प्रेम-नेम की जगह ढोंग ही ढोंग दिखाई देता है। असल में रईस लोग सच्चा प्रेम कर ही नहीं सकते। उन्हें अपने पद और धन का घमंड ऐसा अधिक होता है कि वे समझने लगते हैं कि स्त्री-मात्र इन्हीं के कारण उन पर लट्टू हो सकती हैं। कैथरिन को उन्होंने लालची समझा होगा—यह उसे बुरा लगा होगा। अब धन की धाक से अन्ना को भी खींचते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि जिसे धन से खींचा जाता है, उसका खिंचाव धन की ही ओर होना स्वाभाविक है, न कि और किसी के प्रति। आप एक बार अपने मित्र के भाई के पास जाकर उनसे सलाह लीजिए और तभी कुछ लिखिए। उनके पास जाकर आप यह फिर से देख आवेंगे कि यहाँ के लोग विदेशी स्त्रियों को अपनी ओर करने में कहाँ तक समर्थ होते हैं।"

मधुप ने हँसकर कहा—"एक-दो ऐसे लोगों को देखकर ऐसा निर्णय कर बैठना तर्कशास्त्र के नियमों से अज्ञानता प्रकट करना ही होगा। लेकिन मैं कल जाकर देखूँगा कि अब कमल के भाई साहब का क्या हाल है। शायद उन्हें उस समय की तो अब याद तक न हो, जब कलकत्ते के मोहनबगान की खिलाड़ी-पारटी में कमल को और मुझे शामिल करने के लिए वे स्वयं कितने ही खेलों में भाग लेने लगे थे।"

दूसरे दिन मधुप घर से बाहर निकलकर अपने एक पड़ोसी को दौड़ के लिए बुला रहे थे कि एक आदमी एक लिफ़ाफ़ा लिये उनके पास आकर बोला—"मैं कल रात में आया हूँ। रात बहुत हो जाने से आपको आवाज़ न दी।"

लिफ़ाफ़ा खोलने पर कमल के भाई का पत्र पढ़ उन्हें आश्चर्यपूर्ण आनन्द हुआ। उन्होंने कवि को 'सपरिवार' बुलाया था। कमल के

बारे में 'विशेष बातचीत करने' और आगामी प्रान्तीय चुनाव में खड़े होने के लिए अभी से आवश्यक प्रबन्ध करने की आवश्यकताएँ पत्र में लिखी थीं। अन्त में सूचना थी—"आदमी एक दिन पहले भेजा जा रहा है, दूसरे दिन कार जायगी।"

लौटकर जब कमल आया तो देखा कि मोटरकार मौजूद है।

× × × ×

'कवि-केहरी को नमस्कार' कहते हुए कमल के बड़े भाई, हँसते हुए, उसके पास आये और उससे हाथ मिलाया।

ललिता ने दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार किया। उसका उन्होंने वैसे ही उत्तर देते हुए कहा—"आप डरिए नहीं, मैं आपसे हाथ न मिलाऊँगा।"

और वे हँसने लगे।

ललिता संकोच से सिर नीचा किये खड़ी रह गई।

इतने में मेम साहबा भी आ गईं।

कवि ने उनसे हाथ मिलाया। ललिता ने उनसे भी वैसे ही प्रणाम किया। पर मेम साहबा ने उसका हाथ पकड़कर उसे झकझोरते हुए कहा—"आप से मिलकर हम बहोट ख़ुश हुआ।"

ललिता को हाथ झकझोरना बुरा न लगा, पर यह 'बहोट' शब्द चुभा। उसने सोचा—"हिन्दुस्तानी भाषा का ऐसा अनादर! ये साहब लोग और मेम लोग चाहे जितने साल इस देश में रहें पर कभी हमारी भाषा ठीक तरह बोलना नहीं सीखते।"

फिर भी उसने शांत भाव से उत्तर दिया—"मुझे भी आपसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई।"

वह हँसकर चुप रही। कमल के भाई सबको अपने सुसज्जित प्रासाद के भीतर ले गये।

× × × ×

मधुप से कमल के बड़े भाई ने अपने जीवन के नये अनुभव जिस तरह बिना किसी सङ्कोच या छिपाव के भाव के प्रकट किये उससे मधुप

को बहुत आश्चर्य हुआ। उसे उनसे मालूम हुआ कि कमल के बारे में सबसे पहले कामरोव ने एक पत्र भेजा था। उसे तीन साल हो गये। इधर एक पत्र उनका फिर आया था। उसके बाद जर्मनी के किसी महाशय ने मोन्टी कार्लो से एक पत्र भेजा। उसमें यह शङ्का प्रकट की गई थी कि कमल की सम्पत्ति अब हिन्दोस्तान में कुछ भी शेष नहीं है। इसी के साथ, किन्तु अलग, कमल का भी एक पत्र मिला जिसमें जर्मन महाशय के पत्र का क्या उत्तर दिया जाय, यह भी लिखा था। उनके इच्छानुसार उत्तर भेज दिया गया कि सचमुच कमल की किसी प्रकार की सम्पत्ति यहाँ नहीं बची। यह सब बतलाकर ये भाई साहब हँसकर बोले—"मैं कमल की सम्पत्ति का एक पैसा भी नष्ट नहीं कर सकता। असल में कमल की सम्पत्ति दूनी हो गई है; क्योंकि अब इस अमरीकन महिला ने भी अपने फ़ैशन के पश्चिमी और अमरीकन ढंगों को छोड़कर पूर्वी रास्ते की अच्छाई समझ ली है—अब उसे शौक़ है तो यही कि आगामी चुनाव में अपना एक दृढ़ दल बनाकर शासन-परिषद् में स्थान प्राप्त किया जाय।

'मधुप' ने, यह सब कुछ जानकर, अपने सहयोग की शर्तें बतला दीं। तब वहीं उन्होंने कमल को पत्र लिखा। उसका आशय यही था कि अगर कैथरिन एक हिन्दोस्तानी का अपमान करके और उसे चकमा देकर चली गई है तो यही ठीक होगा कि वह हिन्दोस्तानी उसके पीछे न दौड़कर अन्ना जैसी सुशील सुन्दरी को अपना ले।

२०

शरीर का जितना अधिक भाग सम्भव हो उतना खोलकर सूर्य-स्नान करने का फ़ैशन योरपीय देशों में फैला हुआ था। उसने कई एक के मस्तिष्क पर तो ऐसा विचित्र प्रभाव डाला था कि वे सर्वथा नङ्ग-धड़ङ्ग होकर धूप में लेटने लगे। इँग्लैण्ड में भी समुद्र के किनारे पहले प्रकार के सूर्य-स्नान करनेवालों की कमी न थी। जब कैथरिन अपना वह काम

कर चुकी जिसके लिए उसे कामरोव ने वहाँ भेजा था तब एक दिन वह भी समुद्र के किनारे जाकर इस 'तमाशे' को देखने लगी। स्त्रियों और पुरुषों का पास ही पास 'सूर्य-स्नान' करना उस जैसी 'फ़ैशन-प्रिय' युवती को भी पसन्द न आया। पर वह जानती थी कि इसके विरुद्ध कुछ कहना 'मूर्खता' मानी जायगी। जब 'सुशिक्षित' कहलानेवाले लोग अन्धविश्वासों में फँसते हैं तब यही समझना चाहिए कि उस युग में भीतर ही भीतर जड़ता बढ़ रही है और वासनाएँ उस सुअवसर से मनमाना लाभ उठा रही हैं।

कैथरिन ने समुद्र में देर तक स्नान किया, पर इस सूर्य-स्नान में वह सहयोग न दे सकी। लोगों से कुछ दूरी पर जाकर वह बैठ गई।

सहसा उसने देखा, राजकुमार चले आ रहे हैं।

वे आते ही बोले—"उफ़, कितना परेशान किया, तुमने जान ही ले ली। बाक़ी क्या रहा? तुम ठहरी कहाँ थीं? सब जगहों की ख़ाक छान डाली पर तुम्हारा पता न लगा—न लगा। अन्त में आज बड़ी कठिनाई से यह मालूम हुआ कि तुम यहाँ आई हो और ईश्वर को धन्यवाद कि यहाँ तुम्हारे दर्शन हो गये। तुम्हारा वह काम ख़तम हो गया जिसके लिए तुमको यहाँ तक आने का कष्ट दिया गया था।"

कैथरिन—धन्यवाद—आपके यहाँ तक आने और इस तरह की मीठी बातें करने के लिए मुझे धन्यवाद अवश्य देना चाहिए, पर साथ ही मैं यह कहे बिना भी नहीं रह सकती कि आपका यह काम भद्रजनोचित नहीं हुआ। आपका मेरे पीछे इस तरह पड़ जाना शोभाप्रद नहीं!

राजकुमार—अच्छा, तो अब तुम मुझे इस बारे में भी प्रथम पाठ पढ़ाना चाहती हो! वाह! क्या तुम्हें इन सब युवकों और युवतियों का, जो एक दूसरे के निकट अर्ध नग्न से भी बढ़ी अवस्था में सूर्य-स्नान में मग्न हैं, मेरे व्यवहार से कहीं गया-बीता व्यवहार नहीं जान पड़ता? पर इसे तो कोई बुरा नहीं कहता! उल्टे, इनके फोटो समाचार-पत्रों में छपते हैं और अन्य लोगों से इनका अनुकरण करने को कहा जाता है।

कैथरिन—यह सब जाने दीजिए, आप यह तो जानते थे कि मैं कामरोव के काम से यहाँ आई हूँ। वह राजनैतिक काम है।

राजकुमार हँस पड़े। बोले—"अरे, यह सब कामरोव की चालबाज़ी है! कोई गम्भीर राजनैतिक काम वह किसी स्त्री के—और विशेषत: तुम जैसी के—कभी सिपुर्द कर सकता? अमरीका में और किसी को न भेजकर वह स्वयं क्यों गया था? वह तुम्हें बेवक़ूफ़ बना रहा है और तुम ऐसी बन रही हो। मुझे तो तुम्हारी यही दशा बड़ी दयनीय दिखाई देती है।"

कैथरिन—मैं आपकी इस अयाचित सहानुभूति के लिए आपको फिर धन्यवाद देती हूँ किन्तु आप मुझे मुझी पर छोड़ दीजिए। हाँ अगर मुझे कभी आपकी सहायता की आवश्यकता होगी तो मैं आपकी इस कृपादृष्टि से अवश्य लाभ उठाऊँगी।

राजकुमार—तुम्हें सहायता की—सबसे बड़ी सहायता की—ज़रूरत इसी समय है, चाहे तुम इसे जानती हो, या न जानती हो। मैंने तुमसे जिस स्वास्थ्य-स्थान पर चलने के लिए कहा था वहाँ तुम्हें अवश्य चलना चाहिए।

कैथरिन—क्या आप जानते हैं कि रूस देश के एक पिछले बादशाह, निकोलस के पास उस समय जब कि उन्हें कोई रोग हो गया था दो रूसियों को इसलिए रक्खा गया था कि उनकी पीठ भर में दवा लगाया करें और वे पेट के बल लेटे रहें, और तब निकोलस ने अपने साले को लिखा था—"मैं रूसियों का विश्वास अपनी आँख के सामने कर सकता हूँ, पीठ पीछे नहीं। तुम दो और आदमियों को दवा लगाने के लिए भेज दो!"

राजकुमार—इसका मतलब?

कैथरिन—मैं स्वयं बताने जा रही थी कि मेरी इस बात का अर्थ क्या है। जिस प्रकार निकोलस अपनी आँखों के सामने अपने देश वालों का विश्वास करते थे उसी तरह दूसरे देशवालों का विश्वास मैं

तभी तक करती हूँ जब तक वे अपने देश से दूर और मेरी आँखों के सामने रहते हैं।

राजकुमार—क्या तुम जर्मनी के वाल्टर को जानती हो जिसने रूस और जर्मनी की रेपेलो में पिछली लड़ाई के बाद नई सन्धि कराई थी और जिसे जर्मनी के राष्ट्रीय दल के एक सदस्य ने मार डाला था?

कैथरिन—उसकी याद मुझे आप क्यों दिला रहे हैं? मैं तो वैसा कोई काम करना नहीं चाहती।

राजकुमार—तुम? तुम उससे कहीं बढ़ा-चढ़ा काम करने योग्य अपने आपको समझती हो, यही तुम्हारी भयङ्कर भूल है। मैं जानता हूँ कि स्त्रियों ने राजनैतिक षड्यन्त्रों में भाग लेना प्रारम्भ किया है, पर यह कोई अच्छी बात नहीं है। उन्हें शान्ति की ओर ही सदैव रहना चाहिए। उनका स्थान घर ही है, जहाँ वे बच्चों की ही नहीं पुरुषों की भी उचित संरक्षिका बनी रह सकती हैं।

कैथरिन—मैं इसे मानने को तैयार हूँ—शर्त यही है कि पुरुषों का सम्माननीय स्थान भी घर ही समझा जाय और प्रत्येक पुरुष अपने घर में अपने ऐसे कर्तव्यों का पालन करता जाय जिनका उसके घर, अड़ोस-पड़ोस, गाँव या मुहल्ले और देश से ही नहीं बल्कि संसार के सभी देशों की मानवीय आवश्यकताओं से सामञ्जस्य हो।

राजकुमार—ठीक, बिल्कुल ठीक! अब तो हममें कोई मतभेद इस बारे में हो ही नहीं सकता। अब तुम मेरा प्रेम-प्रस्ताव स्वीकार कर लो और मेरे साथ वोडेन वोडन चली चलो।

कैथरिन—मैं सोच रही हूँ। सम्भव है आपकी बात मान लूँ।

राजकुमार के मुँह पर प्रसन्नता छा गई। उन्होंने कैथरिन के हाथों को पकड़ कर उन्हें चूम लिया और कहा—"धन्यवाद! धन्यवाद! चलो, यहाँ हम लोग भी सूर्य-स्नान कर लें।"

कैथरिन ने अपना हाथ ज़ोर से खींच लिया और आश्चर्य से पूछा—"क्या यह फ़ैशन आपके यहाँ भी फैल गया?"

उसका विद्रोही मन चिल्ला रहा था—कामरोव को नहीं, इसी राजकुमार को सबसे पहले ठीक करना चाहिए। देर का फल फिर संसारव्यापी महा-युद्ध होगा। राजकुमार ने कैथरिन के इस ढंग पर विस्मय का भाव प्रकट किया। बोले—"क्या तुम ऐसा स्नान पसन्द नहीं करती हो? यह तो सबसे अच्छी प्राकृतिक चिकित्सा है। जर्मनी में तो व्यक्तियों के समूह के समूह बिल्कुल नग्न होकर ऐसा स्नान कर रहे हैं और उससे बेहद फ़ायदा उठा रहे हैं।"

कैथरिन—किसने कहा है आपसे कि उनमें से एक ने भी ऐसा असीम लाभ प्राप्त किया है?

राजकुमार—ओह! तुम तो सब बातों में तर्क और प्रमाण चाहती हो। यह तो विज्ञान से सिद्ध हो गया है—

कैथरिन ने उनकी बात काटकर कहा—"विज्ञान का नाम तो सभी बातों और कामों के लिए लिया जाता है। पर कितने लोग हैं जो सचमुच वैज्ञानिक बातों को समझते हैं और ठीक-ठीक उनके अनुकूल कुछ किया करते हैं। मुझे तो अधिकतर ज्ञान-विज्ञान का ही नहीं, साधारण स्वतन्त्रता का भी, भयानक दुरुपयोग होता दिखाई देता है।"

राजकुमार—अच्छा, ये सब बातें बाद में मैं भी समझ लूँगा, पर आज इस समय तो तुम यह स्नान अवश्य कर लो।

कैथरिन—मैं समुद्र में स्नान कर चुकी हूँ, ख़ूब तैरी भी हूँ। आपको पसन्द हो तो आप जाइए और जिस तरह चाहिए उस तरह सूर्य-स्नान कीजिए। मैं भी देख सकूँगी तो देखती रहूँगी।

राजकुमार को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि कैथरिन ने उसके सूर्य-स्नान के समय दूसरी ओर मुँह फेर लिया था।

२१

कमल से सभी चिढ़ गये।

कैथरिन ने मोन्टी कार्लो आकर देखा कि कमल का अन्ना के प्रति विशेष सहृदयता का बर्ताव है। उसने मन ही मन कहा—"ऐसे व्यवहार को प्रेम के अन्तर्गत न समझना भूल होगी।"

कैथरिन स्वयं अपने लिए यह विश्वास करने लगी थी कि वह कामरोव को अपनी ओर यथेष्ट खींचने में असफल नहीं रही और वह यह देख रही थी कि एक जर्मन राजकुमार उसके पीछे दीवाना बना दौड़ रहा है। फिर भी कमल का अन्ना की ओर आकर्षण उसके लिए ईर्ष्या-जनक हुआ। वह कमल से चिढ़ गई।

कदाचित् इस संसार के सभी साधारण मानव प्राणियों के मन की ऐसी ही संकीर्ण अवस्था साधारणतः रहती है। अपने प्रति प्रेम, श्रद्धा और भक्ति हम सबसे चाहते हैं, पर यदि दूसरे में वैसी ही चाह देखते हैं तो उससे चिढ़ जाते हैं।

कमल वेडेन वेडन स्वास्थ्य-स्थान में जाने को तैयार न था। इस लिए राजकुमार उससे चिढ़े।

और तो और, स्वयं अन्ना भी उससे मन ही मन चिढ़ी हुई थी। उसे कमल का यह डाक्टरी और वैराग्य का कवच कायरता तथा ढोंग का सूचक जान पड़ता था। वह प्रेम का ज्वलन्त प्रदर्शन चाहती थी—जैसा योरप और अमरीका में बराबर दिखलाई देता है।

कमल जानता था कि उससे ये तीनों प्रसन्न नहीं हैं और वह उनकी अप्रसन्नता के कारण भी जानता था।

वह प्रसन्न था—उसे जीवन में एक नया आनन्द आ रहा था। संयम में, विषयाकर्षण पर विजय पाने में, इतना अधिक आनन्द है, इसका वह मानों पहले-पहल सच्चा अनुभव कर रहा था। साथ ही उसे जान पड़ता था मानों उसके सामने संसार के किसी गूढ़ रहस्य की ग्रन्थि छिन्न-भिन्न होती जा रही थी और उससे उसके मस्तिष्क का बहुत समय से ऊसर की भाँति पड़ा कोई प्रदेश अपने आप उर्वरा-शक्ति पाता जा रहा है।

इसके सिवा, पहले वह मानव प्राणी में पूर्णता ढूँढ़ता था और उसको कहीं भी न पाने से घोर निराशा के दलदल में फँस गया था। अब वह देख रहा था कि इस संसार में सभी प्राणी अपूर्ण हैं और वह स्वयं भी बहुत अपूर्ण है। अपनी ओर भी इस प्रकार उसने

कभी देखा न था। ऊपर-ऊपर से ही वह लोगों को और अपने आपको भी देखता रहा। उसे जान पड़ा, मानों अब उसे एक नया दृष्टिकोण मिल गया है। सब वस्तुओं को ऐसे तुलनात्मक ढङ्ग से देखने पर उसे एक अद्भुत शान्ति मिली और अपनी अपूर्णता पर विजय पाने के नये प्रयत्न में अनिर्वचनीय आनन्द का बोध हुआ।

उसने सोचा—

कामरोव महान् है, फिर भी वह कितना कमज़ोर है!

कैथरिन का साहस, उसकी सङ्गठन-शक्ति, उसका उत्साह सब अद्भुत और अदम्य हैं। किन्तु उसमें भी कितनी साधारण दुर्बलतायें हैं।

यह प्रेमी राजकुमार! कैथरिन इससे माँग करे तो निस्सन्देह यह अपना सब कुछ उस पर निछावर कर दे, किन्तु नहीं, कुछ ऐसा भी है जिसे वह भी किसी तरह किसी को नहीं दे सकता।

और अन्ना! रङ्ग-बिरङ्गी तितलियों की तरह उड़नेवाली यह अन्ना, अभी वासनाओं के आवरण को और उनके कुफल को कुछ समझ नहीं पाई। पर, सम्भव है, धर्म और राजनीति में उसे कैथरिन की तरह सारा संसार भविष्य में भी कभी हरा-भरा न दीख पड़ता हो। साधारण लोगों में मनमाने सुधार और तरह-तरह के संगठन कर लेना उसे वैसा खेल कभी नहीं समझ पड़ता है। और वह संसार में साम्यवाद का व्यावहारिक होना सम्भव ही नहीं मानती। पर कैथरिन समझती है कि मुट्ठी भर स्वार्थियों और अज्ञानियों के कारण ही इस संसार की उचित प्रगति में बाधा पड़ रही है। वह नहीं जानती कि यह उसका कैसा भयानक अज्ञान है और संसार के व्यावहारिक क्षेत्र में उसे कैसी निराशाओं का सामना करना पड़ेगा। स्वप्न-जगत् में रहनेवाले सभी व्यक्तियों का भाग्यफल ऐसा ही हुआ है। वे स्थिर स्वार्थों की ओर कठिन मोह तथा यश की कामनाओं की गुरुता समझ ही नहीं सकते।

वह कैसे जानता कि कैथरिन ने अपने मन ही मन निश्चय कर लिया है कि वह कमल को अपने हाथ से बाहर न जाने देगी। वह उसी के

साथ रूस जायगी क्योंकि बिना ऐसा किये, कामरोव से भी उसका वैसा सम्बन्ध नहीं रह सकता, जैसा वह बनाये रखना चाहती है।

दो दिन बाद कैथरिन ने कमल के साथ बाहर घूमने जाकर वहाँ एकान्त में उससे कहा—"कामरोव से कहिए हवाई जहाज़ का प्रबन्ध शीघ्र करवा दें, जिससे अब हम लोगों को वहाँ चलने में देरी न हो।"

कमल ने पूछा—"क्या अन्ना भी वहाँ चलेगी?"

कैथरिन—आप उससे उसी तरह प्रार्थना करेंगे जैसे आपने यहाँ आने के लिए की थी या कोई नया ढङ्ग सोचा है?

कमल—मैंने तो समझा था कि इस बार वही मेरी प्रार्थना करेगी।

कैथरिन—यह आशा निर्मूल है! आज वह राजकुमार से इस तरह बातचीत कर रही थी मानों उससे वर्षों से घनिष्ठता हो।

कमल—तो ठीक तो है, वह राजकुमार के साथ चली जाय और मैं तुम्हारे साथ चला चलूँ। जोड़े तो बने-बनाये हैं।

कैथरिन—जी नहीं, वह किसी के साथ इस तरह न जा सकेगी। मैं उसे अपने काम में लगाना चाहती हूँ। वह भावी संसार-शासन में स्त्रियों का उचित भाग होने के लिए उसी दल का काम करेगी जिसका सङ्गठन इस समय हो रहा है।

कमल—यह नई सनक है। पहले इसी तरह कुछ लोगों ने संसार भर में मजदूरों और किसानों के शासन का स्वप्न देखा था। पर अन्त में मज़दूरों और किसानों ने देखा कि उन्हें शासक बनाने के बहाने असल में वे लोग अपनी ही प्रभुता के लिए प्रयत्नशील हो गये। उन्हें जो कुछ मिला वह यही है कि उस देश में प्रधान मन्त्री या सभापति के स्थान पर 'अधिनायक' हो गया और घर में या अपने खेतों पर काम करने के स्थान पर लोग 'सार्वजनिक' कहे जानेवाले क्षेत्रों और कार्यालयों में काम करने लगे। किन्तु हुकूमत 'अधिनायक' की रही और अनुशासन कहीं कठोरतर! युद्ध बन्द न हुए, न बन्द होंगे और उनके लिए उन्हीं सर्व-साधारण लोगों को सब से अधिक कष्ट सहने होंगे। इसी तरह तुम

'स्त्रियों का राज्य' 'स्त्रियों का राज्य' चिल्लाकर और उसके लिए प्रयत्न कर जो कुछ अभी स्त्रियों को प्राप्त है वह भी उनसे अलग कर दोगी और उनमें भी सर्वस्व अशान्ति ही अशान्ति छा जायगी। कार्यालय को अशान्ति-घर कुछ महापुरुष लोग बना चुके अब घर ही बचा है। उस पर भी चलते-पुरज़े लोगों की शनिश्चरी दृष्टि पड़ चुकी है! उन्हीं के बहकावे में आकर तुम जैसी स्त्रियाँ स्वयं स्त्रियों की भलाई और उनके उद्धार के नाम पर उन की भी पूरी दुर्गति किये बिना न छोड़ेगी।

कैथरिन—हिन्दुस्तानी स्त्रियों को बन्दिनी और .गुलामों की सी दुर्गति में डाले रहनेवाले, स्वयं मनमानी ऐयाशी और मनमाने विवाह करने और स्त्रियों को पूर्ण पातिव्रत्य का उपदेश देने और उन परअत्याचार करनेवाले हिन्दुस्तानियों की आप जैसी राय होनी ही चाहिए। स्त्रियों की यह श्मशान की-सी शांति .गुलाम, निर्लज्ज, कायर लोग ही पसन्द करते हैं। आपकी बातें नितान्त पक्षपातपूर्ण और एकाङ्गी हैं। एक डाक्टर को ऐसा बुरा और हानिकारक पक्ष ग्रहण करना शोभा नहीं देता। कामरोव मानव-स्वभाव से ईर्ष्या-द्वेष अभी नहीं हटा सके तब भी सोवियट शासन-प्रणाली के क्रान्तिमूलक परिवर्तन से सम्पूर्ण समाज में गहरा सुधार तो हो ही गया है।

कमल—अमरीका आदि देशों की कितनी ही गौराङ्गनाएँ अपने देशों के अनेक अनाचारों से परेशान हैं। गहरा सुधार कहाँ हो गया है! वही मारकाट, वही उन्मत्त वासनाएँ, एक दूसरे का पद लेने, नीचा दिखाने आदि के वे ही गर्हित कार्य, वही राग-रङ्ग की तृष्णा। सुन्दरता के पीछे वही पागलों की सी दौड़। कैसा सुधार हो गया है? सुधार का तो बीज ही नहीं पड़ा। फिर उसमें ऐसा फल होता कहाँ से? वासना, हिंसा और घृणा का फल, वासना, हिंसा और घृणा रूपी ही होगा, शांति, अहिंसा और प्रेम-मय नहीं। यह वैज्ञानिक सिद्धांत है या नहीं?

कैथरिन—इसे तो मैं भी मानते हूँ—तभी तो मैं स्त्रियों के शासन के लिए काम कर रही हूँ। इँग्लैंड के 'शान्ति-समाचार' ने और स्त्रियों

की सस्थाओं तथा पत्रों ने मुझे पूरी सहायता देने का विश्वास दिलाया है। अमरीका की अनेक स्त्रियाँ तो सर्वस्व समर्पण करने को तैयार हैं। सारे संसार—दो अरब व्यक्तियों—के वास्तविक उद्धार का यही सच्चा साधन है।

कमल—न तो तुम यह देख पाती हो कि तुम्हारी बातों और तुम्हारे कामों में परस्पर कैसा विरोध है और न तुम उस भ्रम को समझ पाती हो, जिसमें तुम स्वयं फँस गई हो और दूसरों को भी फँसा रही हो। जिस तरह संसार भर के मज़दूर और किसान कभी अपना शक्तिशाली सङ्गठन नहीं कर सकते—न ऐसा सङ्गठन करना पसन्द ही कर सकते हैं, क्योंकि रूप-रङ्ग, जाति और देश के पक्षपातों और द्वेषों पर तथा सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और धार्मिक भेदों की गहरी समस्याओं पर विजय पाना सम्भव नहीं है—उसी तरह स्त्रियाँ भी ऐसा न कर सकेंगी। किसी देश-विशेष में भी तो स्त्रियों का सम्पूर्ण सहयोग किसी भी सुधार के लिए सम्भव नहीं हुआ। जो आन्दोलन उनके नाम से चलाये जाते हैं उनमें से किसी को सब लोगों का सहयोग कभी मिला है या मिल सकता है? अच्छा यही है कि विशेषज्ञों और विशेष चरित्रवान् विद्वानों तथा विशेष त्यागी और साथ ही विदुषी स्त्रियों पर ही समाज-सङ्गठन और मानव-संसार-संघ आदि गम्भीर और जटिल कामों की व्यवस्थाएँ छोड़ दी जायँ। शेष सब लोग अपने-अपने सीमित क्षेत्र में ही अपना कर्तव्यपालन करें और एक-दूसरे के प्रति उदारता एवं मानवता का व्यवहार करें। इसी से सब कुछ ठीक रहेगा।

कैथरिन—ये बातें बहुत पुरानी हो गई हैं।

कमल ने हँसकर कहा—"पुराना होने से ही सत्य, असत्य नहीं हो जाया करता।"

कैथरिन—निस्सन्देह ऐसा होता है, क्योंकि काल और देश की उपेक्षा करके कोई सिद्धांत ठहर नहीं सकता। सत्य भी काल और देश से सीमित होता है।

कमल—इसे तो मैं भी मानता हूँ। तभी तो मैं कहता हूँ कि हमारा संसार और मानव-प्राणी ऐसे अपूर्ण हैं ही—ये कभी पूर्ण नहीं हो सकते। हाँ, संसार में खाने-पीने की वस्तुओं की कमी नहीं है। दो अरब व्यक्ति यहाँ हैं, इनसे दूने हो जायँ तब भी उनके पालन-पोषण और उनकी आवश्यक सुविधाओं का सब प्रबन्ध अच्छी तरह किया जा सकता है।

कैथरिन ज़ोर से हँस पड़ी। बोली—"आख़िर आ गये रास्ते पर आप! ऐसा प्रबन्ध आपका देश अभी कर सकता है! इसके लिए चरित्रवान् और यथेष्ट उदार मनवालों की ही तो ज़रूरत है। बस, ऐसी ही स्त्रियों को सब से अधिक शक्तिशालिनी बनाना चाहिए। इसी में संसार का कल्याण है।

कमल—क्या पुरुष ऐसे चरित्रवान् और अन्य-गुण-सम्पन्न संसार में हैं ही नहीं?

कैथरिन—आप अपने को ऐसे ही लोगों में गिनते होंगे।

कमल—ऐसा मिथ्याभिमान मुझमें नहीं है।

कैथरिन—कामरोव को?

कमल—कामरोव को कौन ऐसा न मानेगा?

कैथरिन—आपको क्यो न मानेगा?

कमल—तुम चाहोगी तो शायद मान ले।

कैथरिन—हाँ, मैं चाहूँगी और सब मानेंगे भी। आप मेरा पूरा साथ तो दें। अभी आप हमारे प्रयत्नों को समझ नहीं पाये। हम पुरुषों को भी रक्खेंगी, पर बहुमत स्त्रियों का ही रहेगा—जैसा अब तक पुरुषों का रहता आया है।

इसी समय राजकुमार ने अन्ना के हाथ में हाथ मिलाये हुए वहाँ आकर कहा—"हम लोग आज वोडेन वोडन जा रहे हैं।"

कमल ने उत्तर दिया—"मेरा हार्दिक अभिनन्दन!"

कैथरिन—मेरा भी अभिनन्दन! मैं यह पूरे दिल से चाहती हूँ कि अन्ना को आपके साथ पूरी सफलता मिले।

और उसने तीव्र कटाक्ष के साथ कमल की ओर देखा।

अन्ना ने कहा—"मिस्टर बागड़बिल्ला भी हम लोगों के साथ जाना चाहते हैं। क्या आप उन्हें आज्ञा दे सकते हैं?"

कैथरिन ने आश्चर्य के साथ कहा—"तुम उसे ले जाना चाहती हो क्या?"

अन्ना—क्या हर्ज है? कुछ मनोरंजन ही होगा।

कमल—मैं उसे ऐसे मनोरंजनों का साधन नहीं समझता। पर वह स्वयं जाना चाहता हो तो मैं न रोकूँगा।

दूसरे दिन वे तीनों चले गये। पर जाने के पहले कैथरिन ने अन्ना को उस ओर से सावधान कर दिया, जिस ओर से अन्ना स्वप्न में भी कोई ख़तरा न समझ सकती थी और जाने के पहले अन्ना कमल से फिर मिली।

२२

जर्मन राजकुमार के साथ जर्मनी जाने से पहले अन्ना ने कैथरिन से एकान्त में भेंट करके उससे अनेक बातें हृदय खोलकर कीं। इस समय अन्ना की पोशाक ऐसी चटकीली-भड़कीली थी कि कैथरिन तक विस्मित रह गई।

अन्ना ने कहा—"राजकुमार तुम्हारे काम में पूरी सहायता देने को तैयार हो गये हैं, पर अब मुझे यह सब काम स्त्रियों को शोभा देनेवाला नहीं जान पड़ता।'

कैथरिन उसकी पोशाक से जितनी विस्मित हुई थी अब इस बात से उससे कहीं अधिक आश्चर्यान्वित हुई और बोली—"तो स्त्रियों को शोभा देनेवाला काम क्या है? वही पुरुषों की ग़ुलामी करते जाना। उन्हें ही अपना सर्वस्व—देवता और परमात्मा—मानकर और बेवकूफ़ बनकर उनके लिए तन, मन, धन सबकी आहुति करते रहना और इस तरह उन्हें स्त्रियों के प्रति अधिक से अधिक अनीति, अन्याय और अत्याचार करने के अवसर देते रहना। तुम्हारा राजकुमार या कमल के प्रति भावुक और मूर्खतापूर्ण प्रेम तो नहीं हो गया?"

अन्ना—क्यों ? हूँ तो मैं भी स्त्री ही। तुम्हारी तरह असाधारण स्त्री होने का दावा तो मैंने कभी किया नहीं। हम लोगों का रक्त एक तरह का नहीं है, शायद इसी लिए हमारे स्वभावों में भी आकाश-पाताल का अन्तर है। तुम उच्च कुल की रूसी स्त्री हो—राजवंश से तुम्हारा सम्बन्ध था—मैं अमरीका के उस भाग में उत्पन्न हुई और बढ़ी जहाँ की लड़कियाँ न तो अमरीका के उत्तर भागवाली लड़कियों की तरह की होती हैं, न उसके पश्चिमवाली लड़कियों की भाँति की। पश्चिम भाग में वैसी कठोरहृदयता है जैसी तुम चाहती हो। वहाँ की स्त्रियों की शक्ति कहीं अधिक होती है। वे पचास-पचास मील तक घोड़े की पीठ पर चली जायँ तब भी थक नहीं सकतीं। उनके साथ कोई धृष्टता का व्यवहार करे तो वे उसी कोड़े से उसकी भी ख़बर ले सकती हैं जिसको घोड़े के लिए रखती हैं। उनका कोई ज़बरदस्ती आलिङ्गन कर ले तो उसके गाल पर थप्पड़ जमाये बिना वे नहीं रह सकतीं, चाहे ऐसा उस समय और उस स्थान के रिवाज के अनुकूल ही कोई आदमी करे जब उसे ऐसा पुरस्कार न मिलना चाहिए।

कैथरिन को उसकी इन बातों में मज़ा आ रहा था। वह जानती थी कि मोटरों से भरे शहरों में इस बार घोड़ों पर चढ़ने का तो नहीं, हवाई जहाज़ों का शौक़ ज़ोर मार रहा है। मानों मोटरों से लोगों का मन भर गया है, और वे उनसे ऊबकर कुछ न कुछ परिवर्तन अवश्य चाहते हैं।

उसने हँसते हुए कहा—"पश्चिमी भाग की प्रशंसा तो मैंने सुन ली। उत्तरी भाग का क्या हाल है ? और क्या तुम अब भी किसी में रक्त की पवित्रता मानती हो, जब कि वैज्ञानिकों ने पूरी तरह इस ऐतिहासिक सत्य को प्रमाणित कर दिया है कि संसार की कोई जाति ऐसी विशुद्ध नहीं। सबमें मिश्रण है और इस मिश्रण से ही सबके जीवन में शक्ति है।"

अन्ना—मैंने अपनी दशा बताने के लिए ही यह सब कहा है। हम लोगों की दशा पश्चिमी भाग के सर्वथा विपरीत है। हमें किसी न किसी के सहारे की ज़रूरत हमेशा जान पड़ती है। जैसे लता किसी वृक्ष य

उसकी शाखा को पाकर लहरा उठती है और बढ़ती चली जाती है, वैसी ही हमें भी समझिए। उत्तरी भाग की लड़कियाँ हमारे और पश्चिम भाग की लड़कियों के बीच की हैं। उनमें वैसी तेज़ी नहीं, तो ऐसी नरमी भी नहीं। पश्चिमी स्त्रियाँ पुरुषों का अर्द्धाङ्ग और लाभदायक अर्द्धाङ्ग हो सकती हैं, पर दक्षिण भाग की हम लोग उनका आभूषण हैं। उत्तर भागवाली मन पर चाहे जो प्रभाव डालें पर पुरुषों के हृदय पर उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता। उनमें बुद्धि है, पर हृदय नहीं है।

कैथरिन—तो अब तुम सहृदया और पुरुषों का आभूषण होकर मेरे रास्ते से दूर भागना चाहती हो ! इन राजकुमार के साथ आनन्द करने लगोगी। पतिता, दलिता, दुःख-पीड़िता, नरक-यन्त्रणाओं को झेलने के लिए बेबस की जानेवाली संसार की करोड़ों बहनों को तुम भूल जाना चाहती हो ! उनके लिए कुछ करने-धरने का कष्ट सहन करना व्यर्थ मानने लगी हो ! भूली जा रही हो तुम कि जैसे मार्क्स, क्राप्टकिन, बाकूनिन, लेनिन, त्रात्सकी, गान्धी आदि ने दीन-हीन लोगों, शोषित और पीड़ित समाजों, पराधीन देशों, ग़रीब किसानों और मज़दूरों आदि के लिए तपस्या की है, वैसे ही स्त्रियों का उद्धार करने, उनको आर्थिक आज़ादी दिलाने और उनको पुरुषों के असंयम के शिकार बनने से छुड़ाने के लिए भी कितनी ही बहनों और कुछ भाइयों ने भी कठिन तपस्या की है। अगर मताधिकार पाने के लिए इँगलैण्ड की स्त्रियों ने अपना ऐसा दृढ़ संगठन न किया होता और ऐसे काम न किये होते जिन्हें 'उपद्रव और अशान्तिकारक' काम कहते हुए भी अन्त में उस देश को उनकी माँग स्वीकार ही करनी पड़ी तो क्या तुम प्रसन्न होतीं ? क्या सचमुच अमरीका के किसी भाग की स्त्रियाँ ऐसी साहसहीन, ऐसी कायर, हो रही हैं जैसी तुम बन रही हो ! मेरी बहन ! यह तुम्हें शोभा नहीं देता। झूठे मोह को छोड़ दो। सिद्धान्तों—उच्च सिद्धान्तों— से प्रेम करने और उन्हीं के लिए काम करने में मनुष्य को सच्चा आनन्द

मिल सकता है। मनुष्यों के क्षुद्र रूप और उनकी मायावी मीठी-मीठी बातों में रक्खा ही क्या है? मेरा साथ तुम न छोड़ना चाहो।

अन्ना—साथ तो आपने ही छोड़ दिया। आप रूस जाने को बेचैन हैं। चाहे कामरोव के प्रति हो या कमल के—इन दो में से किसी न किसी के प्रति अपका सच्चा अनुराग अवश्य हो गया है और वही आपको उच्च सिद्धान्तों से हटाकर नीचे खींच रहा है—करोड़ों को या दुनिया भर को छोड़कर आप एक को बुरी तरह पकड़ रही हैं।

कैथरिन हँस पड़ी।

अन्ना इस हँसी का आशय न समझ सकने के कारण उसकी ओर देखती रह गई।

कैथरिन ने कहा—"ऐसा सन्देह मन में जम रहा था तो किसी दिन उसे साफ़-साफ़ कहा क्यों नहीं? प्यारी अन्ना! तुमने अभी कहा था कि मैं अपने को असाधारण मानती हूँ। तुम्हारा यह कहना झूठ नहीं। बिना ऐसा माने कोई भी व्यक्ति असाधारण उच्च कामों में पड़ ही नहीं सकता। प्रत्येक व्यक्ति को ऐसा मान सकने का अधिकार है क्योंकि यह असाधारणत्व किसी की बपौती नहीं है; इसका किसी जाति, वंश, धर्म, नस्ल आदि ने ठेका नहीं ले रक्खा है। अमरीका में बहुत पहले स्वामी विवेकानन्द और स्वामी रामतीर्थ आदि हिन्दोस्तानी सन्यासियों ने हम सबको समझाना चाहा था कि वर्तमान ईसाई-धर्म में कोई मुख्य तत्त्व न रहकर गिर्जाघर जाने की जीवनहीन प्रणाली भर शेष रह गई है, 'क्रिश्चिएनिटी' को हमने प्राणहीन चर्चीएनिटी में बदल दिया है। चाहिए कि सच्ची ईसाइयत या वेदान्त के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति अपने को सर्वशक्तिशाली समझकर नवीन जीवन प्राप्त करे। उस समय न जाने कितने व्यक्तियों ने इन हिन्दोस्तानी उपदेशकों के उपदेशों को ग्रहण कर सचमुच नई ज़िन्दगी पाई थी। इनमें से कुछ की संगति अपने लड़कपन में सौभाग्य से मुझे भी मिल गई थी। उससे मैंने भी अपूर्व शक्ति पाई। मैं चाहती हूँ कि तुम्हें भी आज वैसी ही शक्ति मैं दे सकती।"

अन्ना—वही तो ! अन्त में अपने धर्म में बुराई और हिन्दुस्तान के वेदान्त में अच्छाई आपको दिखलाई देने लगी है। कमल से मैंने तो यह बतलाया है कि मैं उस हब्शी महात्मा की शिष्या हूँ जो अपने को अमरीका में शक्तिशाली ईश्वर कहता है। कमल—

कैथरिन—कमल-कमल क्यों बकती हो अन्ना ! कमल के रूप या गुणों पर मैं पागल नहीं हुई हूँ। उससे कहीं सौन्दर्यशाली और गुणवान् लोग मेरे प्रेम के भिक्षुक हुए पर मैं उनकी ओर नहीं खिंची। जर्मनी के प्रसिद्ध दार्शनिक शोपनहर की पुस्तकें पढ़ी हैं तुमने ? उन्होंने तक लिखा है—"उपनिषदों से मैंने जीवन में शान्ति पाई और मरने पर भी उन्हीं से शान्ति पा सकूँगा।" क्या शोपनहर का भी कमल के रूप के प्रति अनुराग था ! हिन्दुस्तान के प्रसिद्ध विद्वान् राधाकृष्णन् महोदय का, जिनसे अँगरेज़ों को भी विश्वविद्यालय में पढ़ना पड़ता है, कोई पुतस्क नहीं पढ़ी तुमने ! उन्होंने आधुनिक ढंग से इन बातों को कई पुस्तकों में समझाया है, और वहाँ के संसार-प्रसिद्ध वैज्ञानिक जगदीशचन्द्र बोस ने आधुनिक वैज्ञानिक ढंग से सर्वत्र एक जीवन सिद्ध कर दिया है। 'क्रेस्कोग्राफ' यन्त्र बनाकर उन्होंने पेड़ों और पौधों तक की नाड़ियाँ देखने की शक्ति हमें दी है। इसी लिए सबसे बड़े वैज्ञानिक ईन्सटीन ने कहा है कि उनकी मूर्ति इँग्लैण्ड में खड़ी की जानी चाहिए। अन्ना, हमें ऐसे ही उदार और त्यागी वैज्ञानिकों की ज़रूरत है। एक आत्मा सब में, सोचो तो—ईसाई-धर्म स्त्रियों में आत्मा ही न मानता था।

अन्ना—हटाइए भी। कमल ने आपसे ही नहीं, मुझसे भी कम बातें नहीं कीं। अरविन्द, गान्धी, रवीन्द्र आदि तक के कामों और उनकी रचनाओं के बारे में मैं उनसे अनेक बार सुन चुकी हूँ। पर उनसे क्या ? अगर ऐसी बातों से हम सब एक हो सकते तो संसार का सुधार कभी हो गया होता। हममें-उनमें असली अन्तर तो यह है कि गोरों की प्रभुता रङ्गीन जातियों पर है। यही ठीक है।

कैथरिन—नहीं, अभी सब एक हो सकें या न हो सकें, पर उसके लिए प्रयत्न करके हमें-तुम्हें वह दिन निकटतर तो लाना चाहिए। अपनी व्यक्तिगत, मानसिक और आत्मिक उन्नति इसी से सुलभ हो सकती है। और पथ है ही क्या? जाओ, राजकुमार के साथ जाओ, पर अपने काम को पूरा करने के लिए, न कि विलास-वैभव में फँसकर मन और आत्मा को नष्ट कर देने के लिए। व्यक्तिगत नैतिक उन्नति करके ही यथार्थ सामाजिक उन्नति करने की शक्ति मिलती है।

अन्ना—अमरीका के ऋषि एमर्सन की भाँति आप भी हिन्दुस्तान में न होकर दूसरे देश में उत्पन्न हो गईं—यह विधाता की भूल है। एमर्सन केवल वैसी स्वच्छ—अहिंसक—क्रान्ति में विश्वास करते थे जैसी हिन्दुस्तान में महात्मा ने चाही है। अधिकांश लोग उन्हें स्वप्नदर्शी कहते हैं, फिर भी शायद आप यही मानती हैं कि स्त्री-पुरुष दोनों के एक साथ उद्धार का—और उचित उद्धार का—और कोई मार्ग नहीं हो सकता। पर मैं अपने को इस पथ पर बढ़ने में समर्थ नहीं पाती।

कैथरिन—सामाजिक उन्नति के कामों में सच्चाई से लगकर ही ऐसी क्षमता पाई जाती है। अच्छा, यह बागड़बिल्ला तुम लोगों के पीछे क्यों लगना चाहता है?

अन्ना हँसी। बोली—"उसे विश्वास है कि मैं असल में उसे ही चाहती हूँ।"

कैथरिन—यह तो वह मेरे लिए भी समझने लगा था।

अन्ना—कुछ लोग होते ही ऐसे बुद्धू हैं। आपने उसका बागड़बिल्ला नाम उचित ही रक्खा है। उससे मेरा मनोरञ्जन यथेष्ट होगा और और बहुत सा काम भी वह किया करेगा।

कैथरिन—ऐसा न हो कि वह किसी ऐसे देश के आदि-निवासियों की सन्तान हो, जहाँ के ऐसे अधिकांश लोगों को योरपवालों ने समाप्त कर दिया। अब भी वे लोग, जो वहाँ शेष बचे हुए व्यक्तियों की सन्तानें हैं, उस व्यवहार को भूले नहीं। उनके हृदय में एक आग सी जलती

रहती है। अवसर पा जाने पर वे बदला लेने से नहीं चूकते। न जाने कितनी ऐसी दुर्घटनाएँ हो चुकी हैं। क्यूबा, फिलीपाइन्स आदि के ऐसे लोग तो अमरीकावालों से भी बहुत कटुता रखते हैं। क्यूबा के बारे में शायद तुमने वह घटना सुनी हो जो उसके एक आदि-निवासी सरदार हेटुई के पकड़े जाने पर घटी थी।

अन्ना—मैंने इन लोगों के बारे में कभी किसी से एक बात तक नहीं की।

कैथरिन—यह उपेक्षा-भाव कम हानिकारक नहीं है। समाजनीति में ऐसी उपेक्षा को कोई भी स्थान नहीं मिल सकता, नीति-शास्त्र की बात ही क्या! हेटुई को ज़िन्दा जलाया गया था। जब वह जलाया जाने के लिए जा रहा था तब पादरी साहब ने उससे कहा—"विजेता स्पेनवाले अच्छे हों या बुरे, किन्तु उनका धर्म—ईसाई-धर्म-ही ऐसा है जिसे मानने से तुम स्वर्ग जा सके हो।" इस पर हेटुई ने कहा—"अगर ईसाई-धर्म मानने से स्वर्ग मिलता है तो मैं उसे मान लूँगा पर मैं यह जानना चाहता हूँ कि हमारा सर्वस्व छीन लेनेवाले स्पेन के लोग भी वहाँ जा सकते हैं या नहीं?" पादरी ने उत्तर दिया—"क्यों नहीं? ईसा उनके अपराध क्षमा कर उन्हें भी स्वर्ग भेजता है।" हेटुई ने तुरन्त कहा—"तब मैं ऐसे धर्म को कभी नहीं मान सकता। ऐसे लोगों के साथ स्वर्ग में रहने की अपेक्षा मैं नरक में रहना कहीं ज़्यादा पसन्द करूँगा।"

अन्ना की आँखें लाल हो गईं। बोली—"ऐसा? ऐसा उत्तर उसने दिया! अच्छा, तब अपनी रक्षा क्यों न कर ली उन लोगों ने! कायर कहीं के।"

कैथरिन—कायर वे नहीं थे, शस्त्रों में पिछड़े हुए ज़रूर थे। इसी तरह फिलीपाइन्सवालों को भी तुम कायर नहीं कह सकती हो। ईसाई बना लिये जाने पर भी वहाँ के सब लोगों ने जो एक करोड़ से अधिक नहीं, स्पेनवालों से अपनी स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए बराबर युद्ध किया और अन्त में उस देश को वहाँ से हटना ही पड़ा। हाँ, अमरीका 'मानवता'

के नाम पर उनका उद्धार करने की प्रतिज्ञा कर वहाँ गया और फिर उसके सहारे एशिया में अपना व्यापार क़ायम रखने और स्वयं वहाँ से मनमाना रबर आदि प्राप्त करने के लालच में उसने उसे छोड़ना न चाहा।

अन्ना—यह आप क्या कहती हैं ! वहाँ एक राष्ट्र था ही नहीं, तो अमरीका क्या करता ! आप मुझसे चिढ़कर मेरे देश की बुराई मुझसे क्यों करना चाहती हैं ! क्या यह उचित है !

उसकी उत्तेजना देखकर कैथरिन को हँसी आई। पर उसने उस हँसी को दबाकर कहा—"सभी देशों में इस तरह अनेक राष्ट्र सिद्ध किये जा सकते हैं। कौन देश है जहाँ कई नस्लें, कई धर्मवाले, कई बोलियाँ न हों ! अमेरिका के शिकागो शहर में ही कितने आइरिश, कितने इटालियन, कितने यहूदी, कितने हब्शी और कितने अँगरेज़ आदि मौजूद हैं ! एक राष्ट्र न होने के बहाने की पोल सभी देशों में समझदार समझ गये हैं। इसमें कुछ भी सार नहीं है। यह तो हिन्दुस्तान आदि के ही लोगों को उल्लू बनाये रखने का ढङ्ग है।

अन्ना—जब आप मुझसे रुष्ट होकर मेरे देश भर को ऐसा बुरा कहने लगी हैं तब रूस जाकर तो शायद उस बहन को जिसने कामरोव पर हमला किया था, अगर वह अभी तक बची होगी तो, फाँसी ही दिलवा देंगी ! मुझे ऐसी आशा न थी आपसे ! आपका यह नया ही रूप मैं देख रही हूँ। आप पर तो जादू जैसा कुप्रभाव पड़ गया है। रङ्ग, देश सबका प्रभाव दूर हो गया।

इस कुप्रभाव की बात पर हँसकर कैथरिन ने कहा—"तुम कुछ भी नहीं देख पा रही हो। जब स्त्रियों के अन्तर्जातीय सङ्गठन का तुम पर इतना भी सुप्रभाव नहीं पड़ सका कि तुम एकदेशीयता के बाहर खड़ी हो सको तब तुमसे मैं क्या आशा करूँ ? अगर प्रत्येक देश में अपने-अपने प्रान्त की उन्नति को या अपने प्रान्त की भाषा, वहाँ के धर्म और वहाँ के नेताओं को ही सर्वोपरि समझा जाय और सम्पूर्ण देश की उन्नति के लिए इस संकीर्ण भाव का त्याग न किया जा सके तो फिर

उस देश की उन्नति कैसे हो सकती है ? प्रत्येक प्रान्त में कुछ लोग तो इतने अधिक प्रभावशाली होने ही चाहिएँ कि वे प्रान्तीयता के प्रश्नों से लोगों को ऊपर उठाकर उन्हें सारे देश के सवालों की तरफ़ भी लगा सकें। इसी तरह जातीयता से ऊपर उठने की आवश्यकता है और इसी तरह सम्पूर्ण संसार के लिए देश के भाव से ऊपर उठने की भी।

अन्ना—वह सब मैं मानती हूँ। मेरा तो यही कहना है कि इस तरह ऊपर उठने के योग्य मैं नहीं हूँ। मुझे नीचे ही पड़ा रहने दीजिए।

अब कैथरिन अपने को सँभाल न सकी।

उसने तेज़ी से कहा—"यह कहने का समय क्या आज है ? पहले किसी सेना में सम्मिलित होकर, उसमें शिक्षा पाकर और उसके अनेक रहस्यों को जानकर क्या कोई अपनी असमर्थता प्रकट कर देने से ही छोड़ा जा सकता है। उसे दण्ड के लिए तैयार रहना चाहिए, क्योंकि यह विश्वासघात है।"

अन्ना—क्या दण्ड होगा ?

कैथरिन ने शान्त भाव से कहा—"मौत—इससे कम हो ही नहीं सकता।"

अन्ना मौत के नाम से न तो चौंकी न घबराई। उसने भी शान्त स्वर में कहा—"विचारों की स्वतन्त्रता या कार्य की स्वतन्त्रता का आप कुछ भी मूल्य नहीं समझतीं ?"

कैथरिन—एक सीमा तक ही इसका मूल्य रहता है। किसी को आत्मघात करने की स्वतन्त्रता नहीं दी जाती, न दूसरों को लूटने, ज़हर देने, धोखा देने आदि की। सबको मनमाना बकने या मनमाना करने की सदैव स्वतन्त्रता रहे तो समाज चल ही नहीं सकता। ऐसी आज़ादी से चारों ओर लूट-मार और गाली-गलौज के ही दृश्य दिखाई देने लगेंगे। समाज-विज्ञान, राष्ट्र-विज्ञान, संसार के नवविधान पर बोलनेवालों के लिए व्यावहारिक अनुभव, त्याग, कष्ट-सहन आदि की वास्तविक कसौटियाँ हैं।

अन्ना—व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के लिए ही आप सब कुछ करना-धरना चाहती हैं और उसी की विरोधिनी बन रही हैं।

कैथरिन—फ़ौजें आज़ादी पाने या दिलाने के लिए ही लड़ती हैं, तो क्या प्रत्येक सिपाही को मनमानी करने की स्वतन्त्रता दे दी जानी चाहिए ? मेरी समझ से वे ही लोग बड़े काम कर सकते हैं जो क्षुद्रता को हटाकर किसी महान् व्यक्ति का अनुशासन मानें। सभी देश इसी तरह बढ़ते हैं। संसार की स्त्रियों के बढ़ने का यही ढङ्ग हो सकता है।

अन्ना—पर कोई अपने को हीन और दूसरे को महान् क्यों माने ?

कैथरिन—जैसे ऊँट पहाड़ के नीचे जाकर देख लेता है कि कौन ज़्यादा बड़ा है, वैसे ही अनुभव का पहाड़ तुम जैसे व्यक्तियों को इस प्रश्न का उचित उत्तर दे देता है।

अन्ना कुछ देर चुप रही, जैसे कोई कठिन समस्या हल कर रही हो, फिर सहसा पूछ बैठी—"अगर मैं कमल को अपने साथ लिवा ले जाऊँ तो आप मेरा विश्वास करेंगी कि गौरवर्ण का निम्न से निम्न व्यक्ति हिन्दुस्तानियों आदि रङ्गीन वर्णवालों के उच्च से उच्च व्यक्ति से जन्म से ही श्रेष्ठतर है। हम ईश्वर का सिर हैं तो वे सब उसके पैर हैं।" कैथरिन ने हँसना चाहा पर हँस न सकी। बोली—"कमल ने कभी तुम्हारे साथ जाने को कहा ?"

अन्ना—अभी तक कभी ऐसी बात मेरे मन में ही नहीं आई।

कैथरिन—उनके मन की बात के बारे में मैं पूछ रही हूँ।

अन्ना—मैंने नहीं पूछा इसी लिए उन्होंने कभी कुछ नहीं कहा। मुझे विश्वास है कि मैं चाहूँगी तो वे मेरे साथ ज़रूर जायँगे।

कैथरिन—इस विश्वास का कुछ आधार है ?

अन्ना—प्रार्थना करके मुझे वे यहाँ लिवा लाये थे।

कैथरिन—पर जो आशा तुमने की थी वह तो कभी पूरी नहीं हुई। उन्होंने किसी दिन तुमसे प्रेम-प्रस्ताव नहीं किया।

अन्ना—आपके ही कारण ऐसा हुआ। आपको देखकर वे फिर ढुल-मुल हो गये। कुछ निश्चय न कर सके कि उन्हें आपसे प्रेम-प्रस्ताव करना चाहिए या मुझसे ?

कैथरिन—तुमने तो मुझसे कहा था कि तुम विवाह करना चाहोगी तो कामरोव से करोगी, न कि कमल से। क्या तुम अपना रङ्ग-भेद भूलकर कमल से विवाह कर सकती हो ?

अन्ना—कामरोव को मैं आपके लिए छोड़े देती हूँ। जो उस बहन को इस तरह पकड़कर ले गया उसके साथ मेरा सम्बन्ध चिर-शत्रुता का ही रहेगा। कमल से भी मैं विवाह नहीं कर सकती, पर उसे शूद्र की तरह, पैर की तरह समझते हुए, उल्लू बना सकती हूँ।

कैथरिन—तो तुम जर्मन राजकुमार को नहीं चाह सकती ?

अन्ना—उन्हें ! कभी नहीं। जर्मनी के नाम से ही मुझे नफ़रत है। वहाँ तो मैं तुम्हारे ही काम से जा रही हूँ और इसलिए भी कि मैं अभी और कहीं कोई स्थान अपने लिए नहीं देखती।

कैथरिन—तब अच्छी बात है, कमल से बातें करके देखो। मुझे आशा नहीं है कि तुम्हें सफलता मिलेगी।

अन्ना—आपको धन्यवाद ! मैं अब आपसे न मिलूँगी। वे जायँगे तो हम लोगों के साथ चले जायँगे, नहीं तो मैं आपका काम वहाँ करूँगी।

कैथरिन—मैं तुम्हें कुछ पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाएँ देना चाहती हूँ। बागड़बिल्ला को मेरे पास भेजकर मँगा लेना। उनमें कुछ पत्र-पत्रिकाओं के जिन लेखों पर विशेष निशान लगे हैं उन्हें तुम बीच-बीच में ज़रूर पढ़ना।

जब कैथरिन चली गई तो अन्ना ख़ूब हँसी—मुझे उल्लू बनाना चाहती है। मैं एक भी लेख न पढ़ूँगी और कमल को ले जाऊँगी।

२३

वैसी ही साज-शृङ्गार की अवस्था में अन्ना ने एक सुसज्जित होटल के विशेष कमरे में कमल से भेंट करनी चाही। यह स्थान जर्मन

राजकुमार के इच्छानुसार रक्खा गया। कमल ने मिलना स्वीकार कर लिया और ठीक समय पर वहाँ आ गया। हिन्दोस्तान में, नहीं हिन्दोस्तानियों में, कोई युवती कैसी ही बनी-ठनी किसी के सामने आवे पर उससे यह कह देना कि 'आप तो आज अद्भुत सुन्दरी दिखाई दे रही हैं—कौन इस सौन्दर्य पर मोहित होने से बच सकता है।' उस सुन्दरी के लिए कभी प्रशंसात्मक नहीं माना जा सकता, न उसे इससे आनन्द हो सकता है। इससे वह लज्जा ही नहीं, ग्लानि का अनुभव करेगी। पर योरप, अमरीका की युवतियों को नई वेष-भूषा में देखकर किसी का ऐसा न कहना ही उन्हें अपने लिए अपमानप्रद जान पड़ता है। कमल जब अपने देश से बाहर आया था तब उसे ऐसे आरोप और अभियोग का सामना कई बार करना पड़ा। पर अब ऐसा अपराध उससे नहीं होता। उसने अन्ना को देखते ही कहा—"वाह, क्या मनोहर छवि है! सुन्दरता इसी का नाम है। उस पर इस शृङ्गार-कुशलता ने मानो चार चाँद लगा दिये हैं।"

अन्ना कुरसी पर बैठती हुई बोली—"सचमुच मेरी सुन्दरता आपको आकर्षक जान पड़ती है? इसमें आपको खींचने की शक्ति हो तो यह सफल है।"

इतना स्पष्ट कथन! कमल सँभल गया, हँसकर बोला—"इसने तो जर्मनी के एक राजकुमार तक को अपना शिकार बना लिया है।"

अन्ना—शिकार! बस इसी दृष्टि से तो आप लोग स्त्री-पुरुषों के नैसर्गिक प्रेम को देखते ही हैं। जहाँ परस्पर एक दूसरे को एक सा प्रेमानन्द प्राप्त हो सकता है उसकी तुलना शिकार-शिकारी से कैसे की जा सकती है?

कमल ने कहा—"अत्यन्त भ्रमपूर्ण वह प्रेमानन्द है, हानिकारक भी कम नहीं, इसी से मुझसे यह अपराध हो गया कि मैंने ऐसी सच्ची तुलना कर दी।" अन्ना ने अपने दोनों हाथों की हथेलियों को देखते हुए उन्हें कमल की ओर बढ़ा दिया और बोली—"अच्छा, मेरे

हाथों की रेखाएँ देखकर यह बतला दीजिए कि मेरा आपका पूर्ण प्रेम-सम्बन्ध हो सकता है या नहीं और यदि हाँ तो कब और कहाँ?"

कमल ने अपनी कुरसी थोड़ी पीछे खींची। फिर कहा—"तुम भी हिन्दुस्तानियों में से प्रत्येक को ज्योतिषी समझती हो?" इस अन्धविश्वास में और अन्य अन्धविश्वासों में भी अमरीका आदि देश किसी पूर्वीय देश से पीछे नहीं हैं। मैं डाक्टर हूँ, न कि ऐसा ज्योतिषी। प्रकृति की हस्त-रेखाएँ पढ़ना मेरा काम है। किन्तु तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर मैं बिना फलित-ज्योतिष के ज्ञान के ही दे सकता हूँ। पर जो सत्य कटु हो और अप्रिय लगे—विशेषतः किसी ऐसी सुन्दरी का—उससे दूर रहना ही बुद्धिमानी है। अतः दण्ड-स्वरूप मैं पहले स्वयं चाय ले करके तुम्हारे लिए लाता हूँ। या लो, पहले बतलाये ही देता हूँ, मेरा तुम्हारा आत्मिक प्रेम-सम्बन्ध स्थापित हो चुका है और यही उचित तथा सम्भव है।

कमल उठा। अन्ना ने रोका, पर उसने न माना। जब लौटकर आया, अन्ना ने उसके हाथ से एक प्याला चाय लेकर कहा—"आपके कहने से मैं यहाँ आई थी और अब कैथरिन के काम से जर्मनी में राज-कुमार के साथ जाना चाहती थी। पर मुझे जान पड़ा कि मैं बिना आपके रह न सकूँगी, इसी लिए मैं आपसे यह कहने आई कि आप भी मेरे साथ वहाँ चलें। राजकुमार तो आपसे कई बार ऐसा आग्रह कर चुके हैं। किन्तु आपसे ऐसे उत्तर की मुझे आशा न थी, इसी लिए मैंने आपसे अपने साथ चलने का आग्रह करना चाहा। मुझे पता न था कि कैथरिन को देखकर आप फिर दूसरे हो जायँगे।

चाय का सामान मेज़ पर सजाकर कमल ने चाय का एक प्याला मेज़ पर से लेते हुए कहा—"देखिए, अमरीका, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका आदि देश यह नहीं चाहते कि वहाँ कोई काली-पीली आदि रङ्गीन जातियों-वाले आकर बसें। वे अपने यहाँ हम लोगों के आने के विरुद्ध क़ानून बना चुके हैं। इससे हम लोग यहाँ आने या बसने का साहस न कर

सकेंगे। जापान और चीन अगर आपस में न लड़कर मिल जाते तो एशिया भर का शक्तिशाली सङ्घ बना इन बातों का उचित रीति से सामना कर सकते थे। मैं कहता हूँ, आप भी रूस क्यों नहीं चलतीं? अपने देश तो मैं अभी जा नहीं सकता, नहीं तो मैं आपको अपने साथ अवश्य ले चलता।"

अन्ना—रूस मैं ऐसे कभी नहीं चल सकती। आप जाइए, पर मैं कैथरिन के बारे में एक रहस्य आपको बताये देती हूँ। वह साधारण वंश की नहीं है—उसका सम्बन्ध भी गत शाही वंश से है।

कमल ने आश्चर्य में आकर कहा—"अच्छा! पर वह तो उस वंश की विरोधिनी बन गई है।"

अन्ना—उसका कारण स्पष्ट है। क्या रूस के प्रिंस क्राप्टकिन अपने वंशवालों के विरोधी नहीं बन गये थे? क्या आपके देश में बुद्ध, महावीर आदि ऐसे ही नहीं हुए? जब कोई व्यक्ति अपना विकास अत्यधिक कर लेता है तब वह किसी संकीर्ण क्षेत्र में नहीं रह पाता—और ऐसे संकीर्ण लोगों से जिनका स्वार्थ जनता के स्वार्थ के साथ मेल नहीं खाता उसका विरोध अपने आप हो जाता है। सभी देशों में देश का काम करनेवालों का विरोध अपने परिवार और जातिवालों से ऐसे ही हो जाता है न? कैथरिन समस्त स्त्री-जाति के उद्धार का स्वप्न देखती है—उसी स्वप्न को सत्य में परिणत कर देने के लिए वह निरन्तर कार्यशील रहती है। फिर वह पुरानी, जीर्ण-शीर्ण परिपाटीवालों का साथ कैसे दे सकती है? उसका स्वप्न तो बुद्ध, ईसा, गान्धी आदि के स्वप्नों की भाँति मानव-मात्र के उद्धार और मानव-मुक्ति की चिरन्तन युक्ति का है और उन्हीं की भाँति वह इसे स्वप्न नहीं वरन् सर्वथा व्यावहारिक सत्य समझती है।

कैथरिन के नाम के साथ बुद्धि आदि जिन महापुरुषों के नाम अन्ना ने लिये उन सब के प्रति कमल की असीम श्रद्धा होने से उसने अन्ना को कड़ा उत्तर देना चाहा, पर वह रुक गया। अन्ना गम्भीर चिन्ता में मग्न जान पड़ती थी। उसकी इस मुख-मुद्रा की ओर वह देखने लगा।

यह देखकर अन्ना ने फिर कहा – "देखिए, आप कैथरिन के प्रेम-जाल में फँसकर कहीं के न रहेंगे। आप अपने देश क्यों नहीं चलते? वहाँ तो आपको कुछ कमी नहीं। आपके पिता तो यथेष्ट धनी हैं न?"

कमल—तुम मेरे साथ चलना चाहती हो?

अन्ना—अगर सम्भव हो।

कमल – खेद है, मैं वहाँ नहीं जा सकता। मैं डाक्टरी औषधियों को ऐसे ढङ्ग से बनाना चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान को अपने लिए बाहर से इनमें से कई एक को मँगाना न पड़े। हमारे प्रसिद्ध वैज्ञानिक और देश-प्रेमी श्री प्रफुल्लचन्द्र राय के रसायन-कार्यालय के बारे में तुमने सुना होगा। एक अँगरेज़ अफ़सर की यह बात सुनकर कि अगर आप अपने को योग्य समझते हैं तो कोई ऐसा कारख़ाना क्यों नहीं खोल लेते जिससे आपको वेतन से कहीं अधिक आमदनी हो, उन्होंने अपने कार्यालय का प्रारम्भ किया था। अब वह साधारण कार्यालय नहीं है। पर वैसे कई कार्यालयों की अभी वहाँ आवश्यकता है। अभी कई करोड़ एक-एक दवा के लिए उस देश से बाहर फेंके जाते हैं। यहाँ के डाक्टरों को योरप और अमरीका की दवाइयों का एक बड़ा एजेन्ट ही कह सकते हैं। एक-एक दवा लाखों-करोड़ों की वहाँ जाती हैं। यहाँ नई-नई खोजें होती जाती हैं—नई-नई दवाइयाँ बनती जाती हैं। हमें वैसा करने की पूरी सुविधाएँ वहाँ प्राप्त नहीं हैं। इसी लिए मैं रूस में पड़ा हूँ।

अन्ना—आपकी खोजों की तो कामरोव तक बड़ी प्रशंसा करते हैं। जितना आप सीख चुके वह कम नहीं है। असली कारण शायद आप हम लोगों से या विशेषतः मुझसे छिपा रहे हैं।

कमल—प्रशंसा कामरोव 'तक' की नहीं, कामरोव 'ही' की है। मेरी एक दवा से उन्हें एक बार ऐसा लाभ हो गया कि उन्होंने मुझे इस प्रकार अपना लिया। उन्हीं ने मेरे लिए अनेक सुविधाएँ कर दीं।

अन्ना—तो क्या स्वास्थ्य से सम्बन्ध रखनेवाली किसी योजना के लिए ही कामरोव आपको इँग्लैण्ड भेजनेवाले थे?

८

कमल—नहीं, जब तक वास्तविक संसार-संघ नहीं बन जाता, तब तक ऐसी योजनाओं से क्या लाभ हो सकता है? राष्ट्रों के उस संघ ने, जिसे पहली बड़ी लड़ाई यानी पिछली लड़ाई के बाद बनाया गया था, कुछ कम योजनाएँ नहीं बनाईं। हिन्दुस्तान को भी कई लाख रुपये प्रति वर्ष उस संघ को दे देने पड़ते हैं। पर वह संघ अपनी योजनाओं को कार्य में परिणत करने की शक्ति रत्ती भर भी नहीं रखता, इसे सभी जानते हैं और असली योजनाएँ जो कार्य में लाई जा रही हैं दुनिया भर के तेल के कुओं, रबर और तरह-तरह की धातुओं आदि पर आधिपत्य जमाने की हैं। इनमें आपका देश भी किसी से पीछे नहीं है।

जब अन्ना ने अपने हाथ कमल को दिखाने के लिए उसकी ओर फैलाये, जर्मन राजकुमार ने एक ऐसी जगह से जिसे वे देख न सकते थे उनका फोटो ले लिया। पर उन दोनों में से कोई यह जान न सका।

अन्ना कमल की सब बातें चुपचाप और ध्यानपूर्वक सुन रही थी। अब बोली—"सच बतलाइए, क्या आप और कैथरिन दोनों मिलकर मेरे देश के विरुद्ध आपस में कोई योजना बना रहे हैं? और क्या ये मैक्सिम कामरोव इसी लिए अमरीका पधारे थे?"

कमल को इन प्रश्नों से बहुत आश्चर्य हुआ और दुःख भी। उसने कहा—"क्या मेरी बातों का यही अर्थ निकलता है?"

अन्ना—हाँ, और कैथरिन ने भी मुझे कुछ ऐसी बातें सुनाई हैं। फिलीपाइन्स को आठ वर्ष के भीतर पूरी स्वाधीनता देने का अमरीका निश्चय कर रहा है। ऐसा निश्चय जो संसार भर के लिए अद्वितीय और आदर्श-रूप है। इसी अमरीका को वह साम्राज्यवादी समझने लगी है। सम्भव है, यह भी मानती हो कि वहाँवालों की कुछ वस्तुओं की व्यापारिक प्रतियोगिता से हारकर ही अमरीका उसे अपने से अलग कर स्वाधीनता देना चाहता है। कहनेवाले सभी कुछ कह सकते हैं। पर किसी देश की नीति पर ऐसा हमला करना नीचता है। आपका देश इँग्लैंड में वैसी समानता से अपनी वस्तुएँ कभी बेच सकता है जैसी

फिलीपाइन्सवालों को प्राप्त है ! आप अपने देश के दो-ढाई अरब रुपयों के सोने के बहाव के लिए हमारे देश को दोषी ठहराते होंगे, पर इसी देश ने पिछले महायुद्ध के अन्त होने पर प्रत्येक राष्ट्र के लिए स्वभाग्य-निर्णय के अधिकार पर कितना ज़ोर दिना था ? काफ़ी हिन्दुस्तानी इस देश में बसे हुए हैं और प्रोफ़ेसरी आदि के पदों पर भी हैं। वेदान्ती महन्तों के अड्डे तक यहाँ बन गये हैं। फिर भी आप इस देश के प्रति सन्देह रखते हैं ? यह सब कुप्रभाव आपके मन पर कैथरिन ने ही डाला है न ?

कमल—आप कैथरिन के साथ अन्याय कर रही हैं। जिस 'स्वभाग्य-निर्णय' का सिद्धान्त कभी ठीक तरह काम में न लाया जा सका उसके झूठे बड़प्पन का गीत गा-गाकर किसे सन्तोष दिया जा सकता है ? क्या चीन का 'स्वभाग्य-निर्णय' यही है कि अमरीका के व्यवसायी जापान को तैल आदि की सहायता देकर एशिया के उस महान् राष्ट्र को इस तरह पराधीन बनाते जायँ और जनतन्त्र की महत्ता तथा प्रत्येक देश की स्वतन्त्रता का सिद्धान्त माननेवाले आपके अधिकारीगण चुप रहें ?

अन्ना ने हँसकर कहा—"और कुछ !"

कमल—कहाँ तक कहूँ ? स्वभाग्य-निर्णय का अधिकार एशिया में किसको मिला ? हिन्दुस्तान को कुछ भी मिला ? अच्छा, जाने दीजिए, मैं डाक्टर हूँ, मेरे मुँह से राजनीति के कटु सत्यों को सुनकर आप व्यर्थ चिढ़ेंगी। मैं ऐसा नहीं चाहता। हाँ, मैं यह विश्वास आपको दिलाना चाहता हूँ कि मेरे मन पर जो भी सुप्रभाव या कुप्रभाव पड़ा हुआ है उसका कैथरिन से कोई सम्बन्ध नहीं है। जिसे हिन्दुस्तान में उच्च शिक्षा कहते हैं उसे पाकर और उसका व्यावहारिक क्षेत्र में सम्पूर्ण खोखलापन तथा हानिकारक प्रभाव देखने के बाद मैं वहाँ से भागा था। सौभाग्य से मेरे भाई के पास इतने पैसे थे कि मैं ऐसा कर सका और संसार में घूमकर सचाई को अपनी आँखों से देख सका पर मेरे कितने भाई ऐसा कर सकते हैं ? एक हज़ार में एक भी तो नहीं; दस हजार में एक निकल आवे इसमें भी सन्देह है। तुम्हारे विश्वविद्यालयों की व्यावहारिक विषयों की

पढ़ाई और उनके परीक्षा-फल देखकर—करोड़ों अरबों रुपये मूल्य के तुम्हारे मोटरों, जहाज़ों और अन्य हज़ारों वस्तुओं को प्रति वर्ष बाहर जाते देखकर—किस हिन्दुस्तानी को अपने मुल्क के लिए ख़याल न आयेगा! साधारण ध्यान ही नहीं, अगर रक्त के आँसू भी निकल आवें तो आश्चर्य क्या! यहाँ का मज़दूर पन्द्रह-बीस रुपये रोज़ क्यों पाता है और मेरे देश के आधे से अधिक भूखों मरते हैं।

अन्ना—हटाइए, हटाइए यह सब पचड़ा। मुल्कों के बारे में बातें करने के लिए मैं आपके पास नहीं आई। मैं तो यह कहती हूँ कि अगर आप मेरे साथ चल न सकें तो आपसे यह वादा पाकर ही मैं जर्मनी जा सकती हूँ कि आप मेरे हो चुके।

कमल को जान पड़ा, उसके मन के भीतर बैठी हुई कैथरिन चिल्ला रही है—"सावधान, सावधान। ऐसी प्रतिज्ञा न करना। ऐसी मूर्खता ठीक नहीं। अपने-आपको मैंने तुम्हें समर्पित कर दिया है—चाहे मैं साधारण वंश की हूँ या राजवंश की, पर मैं हूँ तुम्हारी ही।"

वह चुप रहा। अन्ना ही बोली—"हमारे इन देशों में ईश्वर का नाम लेकर जन्मजात वर्ण-व्यवस्था नहीं बनाई गई है और सोवियट-राज्य में तो आपको भी समानता का पूरा अधिकार है; अतः आप जिसे अपनाना चाहेंगे उसमें किसी को भी आपत्ति नहीं हो सकती। रूस में ही समानता का पूरा राज्य है। सम्भव होता तो मैं तुरन्त वहीं आपके साथ चलती।"

अब कमल बोला—"मेरे साथ तुम सुखी न हो सकोगी। मैं वैसा बड़ा आदमी नहीं हूँ। जर्मन राजकुमार का प्रेम-प्रस्ताव स्वीकार करके तुम सचमुच सुख पा सकती हो। मेरी सम्पत्ति का भी मेरे भाई अपनी अमरीकन सहधर्मिणी की विलासिता के कारण दिवाला निकाल रहे हैं।"

अन्ना ने जिस स्वर में उत्तर दिया उसे दबी हुई चिल्लाहट के सिवा कुछ नहीं कहा जा सकता—"किसने कहा है कि किसी राजकुमार ने मुझसे प्रेम-प्रस्ताव किया है! झूठ है, बिल्कुल झूठ है। मैं केवल

कैथरिन के काम से जर्मनी जा रही हूँ। आप रूस जाइए, लेकिन एक दिन मैं वहाँ आकर प्रमाणित कर दूँगी कि आपकी सच्ची प्रेमिका कौन है—मैं, या कैथरिन ? मैं धन नहीं, केवल सच्चा प्रेम चाहती हूँ।"

और वह तेज़ी से चल खड़ी हुई।

बेचारा कमल ! एक बार उसके दिल में आया, वह दौड़कर अन्ना को रोक ले। क्या जाने इस राजकुमार के साथ रहने पर फिर एक हिन्दुस्तानी के प्रति उस अद्भुत सुन्दरी में ऐसा प्रेम-भाव न रह जाय, पर उसे अन्ना का अमरीका-सम्बन्धी प्रश्न याद आ गया। ऐसा देश-प्रेम, जिसमें अपने देश का अन्याय न दीखे, इन लोगों के लिए सर्वोपरि है। यह सोचकर वह चुपचाप बैठा रह गया।

२४

मोण्टी कार्लो जुए का सबसे बड़ा अड्डा ही नहीं है, वहाँ का सब प्रबन्ध ही जुएवालों के टैक्स से चलता है।

इसी स्थान को कैथरिन ने स्त्री-प्रधान-संसार-सङ्घ के मुख्य दफ़्तरों के लिए पसन्द कर लिया ! उसे यह विश्वास है कि जब ये दफ़्तर यहाँ पूरी तरह काम करने लगेंगे तब इन जुएवालों का नामोनिशान भी न रहेगा। स्त्रियों की जीवन की बाज़ी वह इस काम के लिए भी लगा देगी।

इस दिशा में उसने स्त्रियों की सभा के समय कुछ काम करके सफलता भी पाई। यह कहना कठिन है कि उस सफलता का कारण उन जुआड़ियों का हृदय-परिवर्तन था या उन स्त्रियों की जो उन्हें 'सुधारने' गईं, बातों का अजीब जादू।

मोण्टी कार्लो में भी नग्न-स्नान करनेवालों की कमी न थी। पर इस विषय में कुछ करना-धरना कैथरिन ने अभी व्यर्थ समझा। इसके सिवा एक दिन इस विषय पर कमल से बातें करते हुए उसने उनकी यह राय सुनी कि हमारे शरीर के तन्तुओं में एक प्रकार का रासायनिक पदार्थ है जो सूर्य-स्नान से 'विटामिन डी' में परिवर्तित होकर हमें लाभ पहुँचाता

है; इसलिए सूर्य-स्नान बुरा नहीं। बुरा यह है कि इसे फ़ैशन बनाकर अत्यधिक समय तक पड़ा रहा जाता है।

कमल से यह सुनकर उसने पूछा—"क्या आप ऐसा सूर्य-स्नान समुद्र-तट पर कर सकते हैं?"

कमल ने कहा—"नहीं, सूर्य-स्नान अकेले में ही करना ठीक है। यह तो उसका दुरुपयोग करना है।"

कैथरिन ने कहा—"तो आप अकेले में ही किया कीजिए।"

कमल—मुझे तो अपने लिए कोई ज़रूरत नहीं मालूम होती।

कैथरिन—नहीं, अभी आपको स्वास्थ्य-लाभ पूरी तरह नहीं हुआ। आपको इससे फ़ायदा होगा।

कमल ने हँसकर कहा—"अच्छा मैं कल से ऐसा स्नान करूँगा।" किन्तु संयोग से उसी दिन रूस से कामरोव का भेजा हुआ हवाई जहाज़ आ पहुँचा। कमल और कैथरिन दोनों को उन्होंने बुलवाया था।

जब वे जहाज़ पर बैठ गये और जहाज़ चल खड़ा हुआ तब कैथरिन ने कहा—"अन्त में मुझे इस प्रकार आपके साथ रूस आना पड़ेगा, यह मैं जानती, तो आपसे कभी बात भी न करती।"

कमल हँसकर बोला—"मैं भी यही कहना चाहता था।"

कैथरिन ने कहा—"आप ऐसा क्यों कहते? आपके ही इच्छानुसार तो मैं कामरोव के साथ आई।"

कमल—नहीं तो क्या करती?

कैथरिन—अपने टाइप-ब्यूरो में लौट जाती और जैसा काम वहाँ आनन्द से किया करती थी वैसा ही करती रहती।

कमल—कब तक?

कैथरिन—सदैव—जन्म भर।

कमल—तो सत्य के अन्वेषण और स्त्री-मात्र बल्कि मानव-मात्र की सेवा का दम क्यों भरती हो तुम? क्या वहाँ रहते हुए ये काम हो सकते थे?

कैथरिन—क्यों नहीं ? मुख्य काम तो प्रत्येक अवस्था में हो सकता है।

आश्चर्य के भाव से कमल ने कहा—"प्रत्येक अवस्था में। तो क्या तुम यहाँ तक मानती हो कि हत्या करने का काम करनेवाला भी सत्य का अन्वेषण कर सकता है ?"

कैथरिन—नहीं, ऐसा मेरा मतलब नहीं है। अगर किसी को ऐसा अनुभव होने लगे कि उसका दैनिक काम सत्य के प्रतिकूल है, तो उसे निस्सन्देह उस काम को छोड़ देना चाहिए। पर मेरा काम ऐसा न था।

कमल—टाइप-ब्यूरो में काम करने के बहाने किसी समाज और देश के भीतरी भेदों को जानने और सब देशों में स्त्रियों के षड्यन्त्रों के प्रचार करने के काम को 'सत्य' का अन्वेषण कैसे कहा जा सकता है ? अपना यह छद्म-वेष अपने देश को लौटते समय तो तुम्हें छोड़ ही देना चाहिए। अब कामरोव से तो यह छिपा न होगा कि वस्तुतः तुम किस वंश की हो।

कैथरिन—अच्छा, तो क्या अन्ना ने मेरे साथ ऐसा विश्वासघात किया है ! आपको या कामरोव को कैसे मालूम हुआ कि मैं किस वंश की हूँ ?

कमल—क्या आप के ही पास गुप्त काम करनेवालों का बल है कामरोव के पास नहीं ?

कैथरिन—अमरीका में उनके गुप्त दूत थे ?

कमल—थे क्यों नहीं ? जब तुमने होटल में जाकर फोन पर यह कहा कि कामरोव पर हमला न किया जाय, जब तुमने अपने ब्यूरो में जाकर अन्ना से कहा कि तुम कामरोव को ज़हर देकर मार सकती हो, जब तुमने—

कैथरिन—बस, रहने दीजिए। क्या कामरोव ने बदला लेने के लिए ही मुझे रूस बुलवाया है ?

कमल—तुमने तो उनका कुछ बिगाड़ा नहीं, फिर बदला लेना कैसा ?

कैथरिन—पर इँग्लैण्ड में मैंने क्या-क्या किया, यह भी वे जानते हैं ?

कमल—जी हाँ, वहाँ उनके काम के अतिरिक्त प्रधान मन्त्री की स्त्री से मिलकर तुमने स्त्रियों की संसार-क्रान्ति की अपनी योजना उन्हें समझा

दी, वे उससे बड़ी प्रसन्न हुईं। उन्होंने तुमको जो चेक दिया वह छोटी रक़म का न था!

"फिर?"

"फिर क्या! अब आपने अन्ना को जर्मन राजकुमार के साथ भेजा है। बस, यहीं से आपकी योजना अपने आप नष्ट होती जायगी।"

"क्यों?" कैथरिन ने आश्चर्य के भाव से पूछा।

कमल ने उत्तर दिया—"जर्मनी जिस 'आर्य' सभ्यता की बातें करता है, उसके अनुसार उसने स्त्रियों को मुख्य-मुख्य पदों से भी अलग कर दिया है। वह उन्हें गृह-कार्यों में लगा रहा है।"

पर कैथरिन ने तुरन्त कहा—"जर्मनी की स्त्रियों को मैं जानती हूँ। उनमें उसी भाँति की दुर्दम्य लालसा है जैसी वहाँ के पुरुषों में। एक लड़ाई में परास्त होकर, अब वे ऐसा प्रबन्ध करने में पूर्ण सहायता स्वदेश को देना चाहती हैं जिसमें कभी वैसा अवसर न आ सके। पर वर्तमान रूस उस देश को समझ नहीं पाया। उससे कई पीढ़ियों से रूसी राजवंश का सम्बन्ध था। हम लोग जिनका अब भी रूसी राजवंश से सम्बन्ध समझा जाता है—जर्मनी को भली भाँति पहिचानती हैं। वह हमें संसार-व्यापी स्त्री-क्रान्ति में कम सहायता न देगा।"

कमल—बड़ा मज़े का स्वप्न है तुम्हारा! याद रक्खो, एक दिन तुम्हारा यह स्वप्न बुरी तरह टूट जायगा। मेरे देश के, इसी क़िस्म के, लोगों ने 'आर्य' सभ्यता के गीत गाते हुए ही स्त्रियों और शूद्रों को पढ़ाने तक के विरुद्ध व्यवस्था दे दी; सहस्रों अन्धविश्वासों की उनके मन में स्थापना करके उन्हें हीन प्रवृत्ति से पूर्ण कर दिया। वे यदि तुम्हारे स्वप्न की एक बात भी सुनते तो तुमको पागलख़ाने में बन्द करा देते। जर्मनी वैसा तो न करना चाहेगा, पर वहाँ तुम्हारी यह योजना रद्दी की टोकरी में फेंक दी जायगी। केवल धोखा देने के लिए तुम्हारे साथ सहयोग किया गया है।

कैथरिन—आपका देश तो अब स्त्रियों पर अन्याय नहीं करता!

कमल—देश का प्रगतिशील भाग ऐसा नहीं चाहता। स्वामी दयानन्द, राजा राममोहन राय, विद्यासागर, ईश्वरचन्द्र, महात्मा गान्धी आदि ने वहाँ नई विचार-धाराएँ प्रवाहित की हैं—उन्हें एक तरह से प्राचीन भी कह सकते हैं; क्योंकि इन लोगों के अनुसार वहाँ पहले भी ऐसे अत्याचार न हो सकते थे, बीच में ही ऐसे अन्याय होने लगे—पर प्रतिक्रियावादी दलों की वहाँ अब भी कमी नहीं है।

कैथरिन—अब उपयुक्त समय आ रहा है स्त्रियों को सामूहिक रूप से संघटित होकर पुरुषों की इस दानवता के सामना करने का। स्त्री ही कह सकती है कि मैं अपनी सन्तानों को एक-दूसरे को मारते नहीं देख सकती। यह प्रभुत्व की इच्छा, चाहे वह जिस देश की भी हो, शैतानी और राक्षसी इच्छा है। स्त्रियाँ ही इसका ठीक तरह से सामना कर सकती हैं।

अत्यधिक उत्तेजना से वह उठकर खड़ी हो गई थी।

कमल ने उसकी उत्तेजना देखी और उसे हँसी आई। उसने सोचा—"इस संसार के कट्टर स्वार्थी दलों को कौन समझा सकता है! जर्मनी कुछ न करे तब भी साम्राज्यवादी और स्थिर स्वार्थियों की संख्या में कमी नहीं। गोरी जातियाँ संसार भर की रङ्गीन जातियों का भार अपने कन्धे पर ढोती हुई उन जातियों का शोषण और दोहन अपना जन्मजात अधिकार समझ रही है। जो जाति ईसा की बलिदान-भावना का भी अपनी स्वार्थ-साधना के लिए उपयोग कर सकती है, जो सुन्दर से सुन्दर नियमों की अपनी सहायता के लिए दुहाई दे सकती है, उससे इस भीषण हत्याकाण्ड के विरुद्ध विवाद करके कौन पार पा सकता है!"

उसने और कहा—"केवल एक काम तुम लोग कर सकती हो—पुरुष लोग आपस में लड़-लड़कर एक दूसरे को मारें और तुम लोग आहतों को उठा लाकर उनकी सेवा-शुश्रूषा करो। बहुत पहले श्रीमती फ्लोरेंस इस पुण्य-पथ की प्रदर्शिका हो चुकी हैं। उनके सङ्गठन-कार्य को ही पूरी तरह व्यापक बना दीजिए।"

कैथरिन ने कहा—"नहीं, नहीं, मैं पीड़ित मानवता-मात्र को स्त्री-सङ्घों द्वारा नव जीवन दान देने की साधना में संलग्न होना चाहती हूँ। यह साधना अवश्य सफल होगी। जर्मनी के राजकुमार ने मुझसे कहा था कि इसमें सबसे अधिक सहायता मुझे आपके ही देश से मिल सकती है, पर आश्चर्य है कि आप उसके विरुद्ध बात करते हैं।"

कमल—ईश्वर तुम्हारी सहायता करे। पर क्या तुम इसमें कामरोव से पूरी मदद पाने की आशा रखती हो?

कैथरिन—कामरोव को ऐसा करना ही पड़ेगा, नहीं तो रूस का यह अधिनायकत्व समाप्त हो जायगा। रूस ने संसार के सामने एक प्रकाश रखने का प्रयत्न किया, किन्तु वह प्रकाश तभी अग्रणी हो सकता है और तभी ठहर सकता है जब उसका आधार विश्व-प्रेम और अहिंसा हो।

कमल—इसे तो कितने ही पुरुष भी मानने को तैयार हैं।

कैथरिन—कभी नहीं। व्यावहारिक रूप से इसे मानने को एक भी पुरुष तैयार नहीं है, सिद्धान्त रूप से चाहे जो कह दें। पर ऐसे आधार के लिए ही हमारे संघ की स्त्रियों ने सङ्कटों और कष्टों के सामना करने का दृढ़ संकल्प किया है जिससे संसार के प्रत्येक देश में, व्यापक रूप से, प्रत्येक स्त्री के हृदय में क्रियात्मक सहानुभूति की ज्वाला जाग उठे। हम चाहती हैं कि प्रत्येक स्त्री प्रत्येक पुरुष को स्पष्ट दिखा दे कि अब संसार का शासन फ़ौजों से न होगा। अब तो केवल एक ही उपाय है संसार के प्रत्येक देश, प्रत्येक समाज और प्रत्येक गृह में फिर से न्याय, प्रेम, सत्य और स्वतन्त्रता की ऐसी प्रतिष्ठा जिसमें स्त्रियों का उनकी संख्या के अनुसार पूरा हाथ हो। पुरुषों की पशुता से ही संसार नरक बन रहा है। अब स्त्रियाँ आगे बढ़कर ऐसे कार्य करेंगी कि पुरुष लोग मानवीय अधिकारों की अवहेलना कदापि न कर सकेंगे।

कमल मन्त्र-मुग्ध सा, उसकी ओर एकटक देखता हुआ, चुप बैठा रहा। इतने महान् विश्वास के विरुद्ध वह एक शब्द भी न बोल सका।

कैथरिन ने कमल की ओर देखकर फिर कहा—"युग युग से स्त्रियाँ दीन हीन, मूक और अन्धों की भाँति अपना जीवन बिता रही हैं। धर्म और व्यवस्था के नाम से, उन्हें जितना पीसा गया है उस सबको हम पुरुषों की पाषाणहृदयता और पशुता का परिणाम ही समझती हैं ? बुद्ध, ईसा, राम और कृष्ण जैसे अनगिनत महात्माओं में से किसी से यह नहीं हो सका कि स्त्रियों के प्रति पुरुषों के अन्यायों को रुकवा सके। अब इस संसार में स्त्रियाँ अपने ही पैरों पर खड़ी हो जाना चाहती हैं कि वे संसार को सदैव के लिए सुधार सकें। वे पापियों पर नहीं, पापों पर प्रहार करेंगी, शक्तिशालियों की अनुचित शक्ति को समाप्त करेंगी और सैनिक शासन को असम्भव कर देंगी।"

कमल स्थिर दृष्टि से कैथरिन के पवित्र उत्तेजना से पूर्ण चेहरे को देखता रहा।

कैथरिन चुप हो गई। उत्तेजना से उसके सभी अङ्ग काँप रहे थे।

उसने फिर कहा—"सबसे पहले रूस में ही स्त्रियों का आश्चर्यप्रद स्वत्व-संग्राम छिड़ेगा और आपको मेरी पूरी सहायता करनी पड़ेगी।"

कमल ने कहा—"भला मैं रूस में आपकी क्या सहायता कर सकता हूँ ? अगर मेरे देश में—"

कैथरिन ने बीच में ही कहा—"इसमें देश-विदेश की सीमा बाधक न होगी। इसमें आवश्यकता है केवल साहस और आत्मबल की। आपमें इनकी कमी नहीं।"

कमल—संसार के पुनरुद्धार के प्रश्न के प्रति मेरे और आपके दृष्टिकोण में बहुत अन्तर है। सोचिए तो जिस अमेरिका से आप आ रही हैं उसमें हम हिन्दुस्तानियों को वहाँ के किसी तरह नागरिक बनने की भी सुविधा नहीं है।

कैथरिन—आप के ही कारण रूस को अपना कार्य-क्षेत्र बनाने का निश्चय मैंने किया। इसे तो आप नहीं भूले जा रहे हैं। रूस और अमेरिका में बहुत अन्तर है।

कमल ने कहा—"मैं जहाँ तक जान पाया हूँ, तुमने कामरोव को अपनी ओर खींचने में कोई कोर-कसर नहीं की। इससे मेरे हृदय पर चाहे जितना असह्य आघात हुआ, किन्तु मैंने मन ही मन परमात्मा को धन्यवाद भी दिया। शायद मैं तुमको सुखी न कर सकता। मैं कामरोव का व्यक्तिगत रूप से ऋणी भी हूँ। यदि वे तुमसे अपना विवाह करना चाहते हैं तो मैं उसमें बाधक कैसे बन सकता हूँ? मुझे तो प्रसन्नता ही होनी चाहिए।"

कैथरिन—होनी चाहिए या है?

कमल—'होनी चाहिए' ही मैं कह सकता हूँ।

कैथरिन—और यह कहना झूठ बोलना नहीं है कि कामरोव मेरे साथ विवाह करना चाहते हैं?

कमल—मैंने तो यही कहा है कि 'अगर' वे ऐसा चाहते हैं, लेकिन क्या यह झूठ है कि वे ऐसा चाहते हैं?

कैथरिन—बिलकुल झूठ। वे ऐसा चाह ही नहीं सकते। जिस दल को लेकर उन्होंने शक्ति पाई और यह पद प्राप्त किया वह दल, अगर वे मुझसे विवाह कर लें तो, उनकी एक-एक बोटी नोच डाले।

कैथरिन—अच्छा, आप अन्ना को चाहते हैं?

कमल—नहीं, मैं तो उसके चमकीले आकर्षण से डरता हूँ!

अब दोनों खुलकर हँस पड़े।

२५

"मिस्टार बागड़बिल्ला! यहाँ आओ।"

जर्मनी में मिस्टर को मिस्टार बोलते हैं। जर्मन राजकुमार ने भी 'मिस्टार बागड़बिल्ला' कहकर ही उसे बुलाया। स्वयं बागड़बिल्ला को 'मिस्टार' बहुत ही बुरा मालूम होता था। वह राजकुमार के प्रत्येक शब्द से और स्वयं राजकुमार से मन ही मन बेहद कुढ़ रहा था। फिर भी उसे आना तो पड़ा ही। उसने आकर कहा—"कहिए!"

राजकुमार—'कहिए' मत कहाकर, मूर्ख! मैं कितनी बार बतला चुका कि आकर पूछा कर—"क्या काम है, श्रीमान्!"

बागड़बिल्ला—ऐसा तो मैं नहीं कर सकता। मैं आपको 'श्रीमान्' नहीं कह सकता।

राजकुमार की आँखें लाल हो गईं। बोले—"क्या कहता है? मुझे 'श्रीमान्' नहीं कह सकता?"

बागड़बिल्ला—जी नहीं। और अगर आप अपने को श्रीमान् समझ बैठे हैं तो मैं सदैव के लिए इसका अन्त किये देता हूँ।

यह कहकर उसने जेब से रिवाल्वर निकालकर छोड़ दिया।

राजकुमार वहीं गिर पड़े और समाप्त हो गये।

बागड़बिल्ला ने देखा, अन्ना दौड़ी आ रही है। वह अपनी ओर रिवाल्वर तान चुका था, पर रुक गया। बोला—"श्रीमती जी, मिस्टर कमल से कह देना कि मैंने अपना बदला ले लिया। मैं जर्मन-अ़फ्रीका का रहनेवाला हूँ। मेरे पिता और पितामह का अन्यायपूर्वक वध किया गया था। इसी राजकुमार के पिता मेरे पिता के दण्ड के समय वहाँ के गवर्नर थे।"

और फिर रिवाल्वर की आवाज़ हुई। अपनी भी हत्या करके वह भी उसी पृथ्वी पर गिर पड़ा।

अन्ना का मुँह पीला पड़ गया। आज ही सबेरे उसने कमल के नाम एक पत्र लिखा था। उसने सोचा—"कहीं इस दुर्घटना के बाद कमल यह न मान ले कि मेरा हाथ इस हत्या में रहा है।" बागड़बिल्ला को इस तरह मरते देख वह ज़ोर से चिल्लाई। कई लोग दौड़ते हुए आये।

अपने पत्र में अन्ना ने लिखा था—

मेरे प्यारे कमल, आशा है, आप बहन कैथरिन के साथ अब आनन्द-पूर्वक रूस पहुँच गये होंगे। मुझे वोडेन वोडन आने से सचमुच बहुत लाभ हुआ। अगर मुझे कोई दुःख है तो यही कि आप मेरे साथ न आ सके। पर मैं जानती हूँ कि आप मुझे भूल नहीं सकते।

बहन कैथरिन से मुझे तनिक भी डर नहीं, न उनके प्रति किसी प्रकार की ईर्ष्या है। मैं जानती हूँ कि अन्त में कामरोव को उनके साथ अपना विवाह करना ही पड़ेगा। मेरी इच्छा आपके मुल्क, हिन्दुस्तान, चलने की हो रही है। आपके देश के प्रत्येक गाँव से अगर पाँच-पाँच स्त्रियाँ भी हमारे सङ्घ में शामिल हो सकें तो उनकी संख्या तीस लाख हो जायगी। इतनी बड़ी स्त्री-सेना और कहाँ मिल सकती है? हर एक गाँव इतना तो करेगा ही कि इन पाँच बहनों के उचित पालन का भार अपने ऊपर ले सके।

इन बहनों को सच्ची समाज-सेविका बनने के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन दूसरे व्यक्तियों से सिवा रोगियों के या आहतों के अलग रखना होगा। इन्हें वे ही काम करने होंगे जिनमें हमारा सङ्घ इन्हें लगाये। यश-प्राप्ति उन्हें होगी, पर यश के पीछे दौड़ना न होगा। यह उन सबको समझना होगा।

चालीस करोड़ लोगों के आपके विशाल प्राचीन देश के बारे में जब मैं सोचती हूँ, पुलकित हो जाती हूँ। आप उसके प्रतिनिधि के रूप में मेरे मन में बस गये हैं न? कारण कुछ भी हो, मैं एक बार आपके साथ वहाँ चलूँगी ज़रूर। राजकुमार अच्छे हैं और मुझे पूरी सहायता दे रहे हैं, पर जर्मनी वस्तुतः दूसरी ही ओर जा रहा है। यह आकर बतलाऊँगी।

आपकी—अन्ना।

पर इस पत्र के पहुँचने के पहले ही कमल को बागड़बिल्ला द्वारा राजकुमार की हत्या होने और फिर उसके स्वयं अपनी हत्या करने का हाल मालूम हो गया।

× × × ×

अन्ना ने जर्मन राजकुमार की चीज़ों को अब स्वतन्त्रतापूर्वक देखा। उसे कमल के भाई का पत्र इन चीज़ों में देखकर आश्चर्य हुआ। इस पत्र को पढ़ने के बाद उसने आज 'आर्य' मासिक पत्र का एक लेख पढ़ा जिसे कैथरिन ने उसे पढ़ने को दिया था।

२६

रूस में पहुँचकर कैथरिन ने जो कुछ देखा उससे उसकी आँखें खुल गईं। इसके बाद जब कामरोव ने उसे राजकुमार की हत्या का वृत्तान्त सुनाया तब तो वह और अचम्भे में आ गई। उसने कामरोव से पूछा—"क्या राजकुमार के मारे जाने में कोई राजनीतिक षड्यन्त्र है ? क्या बागड़बिल्ला आपकी गुप्त पुलिस का अंग था ?"

कामरोव हँसकर बोला—"तुम्हें क्या जान पड़ता है ? क्या तुम समझती हो कि बागड़बिल्ला ऐसे लोग राजकीय गुप्त पुलिस में रक्खे जाते हैं ? व्यक्तिगत शत्रुता और द्वेष की पूर्ति की इच्छा को छोड़कर जो लोग देश भर के अपमान का बदला लेने की प्रचण्ड इच्छा रखते हैं, जो देश भर के सम्मान और उसकी प्रतिष्ठा के लिए अनुशासन के भीतर रहकर संगठित शक्ति से काम कर सकते हैं, जो जानते हैं कि हमें केवल सोवियट रूस की रक्षा और सेवा ही नहीं करनी है बल्कि संसार भर को सच्चे भ्रातृत्व की ओर ले जाना है वे ही यहाँ गुप्तचर बनाये जाते हैं। यहाँ जर्मनी के भयङ्कर गुप्तचर दल (गैस्टैपो) का सा आतंक फैलानेवाला कोई भी गुप्त दल नहीं है। बागड़बिल्ला बेवक़ूफ़ था। वह राजनीति के दाँव-पेंच को क्या जाने ? अपनी अदूरदर्शिता और असमर्थता के कारण वह अपना ही संहारक हो गया।"

कैथरिन ने मृदु मुसकान के साथ कहने का साहस किया—"यह तो सोवियट रूस के किसी रहस्य का स्पष्टीकरण न हुआ। मैं मानव-रहस्य को नहीं, रूस के कामरोव के रहस्य को समझना चाहती हूँ। यह रूस, जो एक ओर सार्वजनिक औद्योगीकरणों में अग्रणी हो रहा है, जिसने ज़मींदारों तक को हटाकर सामूहिक खेती का अनुपम आदर्श शेष सारे संसार के सामने रक्खा है, जो बच्चों के उत्पन्न होते ही उनके उचित पालन-पोषण के लिए उन्हें सुसज्जित शिशु-गृहों में भेजकर, उनकी सब तरह की देख-रेख का प्रबन्ध कर सकता है, जिसने जनता को पाखण्डी पादरियों,

और उन्नत रईसों आदि की हानिकारक प्रवंचना और विलासिता से हटाकर उन्हें इसी पृथ्वी पर सुख और समृद्धि का अधिकारी बनाया है, जो संसार-शान्ति की इच्छा से कामरोव को अमरीका भेज सका वह दूसरी ओर युद्ध की बर्बरता बढ़ाने के लिए भयंकर युद्ध-सामग्रियों के बनाने में क्यों लगा है ?"

कामरोव की दृष्टि कैथरिन की विशाल आँखों की ओर गई। उनमें कैसी वेदना नाच रही थी, यह उससे छिपा न रहा। स्वयं उसके नेत्र सजल हो गये। वह बोला—"क्या यह बतलाना पड़ेगा ? मैं चाहता था कुछ दिन, कुछ महीने, कुछ वर्ष तुमसे यह न बतलाता—तुम्हारे साथ इस तरह रहता मानों हम किसी दूसरी दुनिया में जा बसे हैं, जहाँ बुद्धि और विज्ञान का ऐसा भयङ्कर दुरुपयोग नहीं होता कि एक भाई दूसरे भाई को, एक परिवार दूसरे परिवार को, एक जाति दूसरी जाति को और एक देश दूसरे देश को नीचा दिखाना चाहते हों। पर प्यारी कैथरिन ! संसार शान्ति की ओर जाने को अभी तैयार नहीं है। इसमें विश्व-अनुभूति रखनेवाले नेताओं की इतनी कमी है कि अधिकांश देश ऐसी अनुभूति को अपने प्रति विश्वासघात मानते हैं और सारे देश ऐसे हैं जहाँ सम्पूर्ण देश की सच्ची भक्ति को उसमें रहनेवाले बड़े-बड़े दल अपने प्रति विश्वासघात कहते हैं !"

कैथरिन की आँखों से आँसू बह चले। वह क्या उत्तर देती ?

कामरोव ने उसके आँसू पोंछ दिये और बोला—"विश्वास करो, लाखों नहीं करोड़ों वीरों की बलि देकर भी हम संसार में सच्ची शान्ति स्थापित कर सकते तो हम अवश्य करते। पर ऐसा सम्भव नहीं है। यह तो स्वाभाविक विकास से ही हो सकता है कि संसार के शक्तिशाली देश दूसरे छोटे या बड़े देशों पर अत्याचार और अन्याय न करें, उनका शोषण करना, उनके दीन-हीन किसानों और मज़दूरों का यन्त्रों से भी बुरी तरह उपयोग करना, उनके धनवानों को तरह-तरह से विलासी और नीच स्वार्थी बनाकर अपने यन्त्रों से लूटना-चूसना बन्द कर दें, मानव-जाति में जो करुण ग़ुलामी अब भी चल रही है उसका अन्त कर दें,

प्रत्येक मानव-हृदय के लिए और प्रत्येक मानव-मस्तिष्क के लिए पूरे विकास और पूर्ण उन्नति के क्षेत्रों को छोड़ दें, ज्ञान और विज्ञान के भाण्डारों के द्वारों के तालों की कुञ्जियाँ सबके हाथ में दे दें। अकेला रूस संसार भर में ऐसा करने में किसी तरह समर्थ नहीं है।"

"तब फिर वह अपने को संसार में अग्रणी क्यों कहता है?"

कामरोव चुप रहे।

कैथरिन ने कहा—"बताइए न। क्या यह नहीं बतलाना चाहते?"

कामरोव ने कहा—"बतला दूँ? पर क्या बतलाऊँ? कौन उसके इस दावे को मानने को तैयार है? क्या जर्मनी—वही जर्मनी जिसने संसार के साम्यवाद के स्थान पर राष्ट्रीय साम्यवाद का नाम लेकर नाज़ीवाद को अपना लिया है और जर्मन जाति को संसार की सर्वश्रेष्ठ जाति घोषित करके संसार भर पर सैनिक आधिपत्य जमाना चाहता है—अपने को अग्रणी नहीं मानता? संसार के इतिहास में, इस तरह पराजित कोई राष्ट्र कब ऐसी तेज़ी से अपना उद्धार कर सका है? केवल आठ करोड़ की जनसंख्या वाले उस देश—जर्मनी—के इस प्रश्न का बीस करोड़ की आबादी वाला रूस—नव-निर्मित रूस—आदर करता लेकिन क्या वह केवल अपना उद्धार चाहता है? विश्व-विजय की उत्कट कामना उसके युवकों को पागल बना रही है। उस कामना के साधनों में या पूर्ति में लोक-कल्याण की पवित्र भावना कहाँ है? इसी तरह जहाँ एक समय 'पवित्र' रोमन-साम्राज्य का केन्द्र था वहाँ आज फ़ासिस्टी ढङ्ग का बोल-बाला है। जापान विशाल चीन देश में बढ़ता जा रहा है? रूस के सिवा उस देश को कोई सहायता दे रहा है? इसी महा स्वार्थी संसार में तुम स्त्रियों के केवल क्षमा, दया, करुणा से पूर्ण संघों के द्वारा संसार के उद्धार का स्वप्न देखती हो।

कैथरिन ने दृढ़ स्वर में कहा—"और किसी तरह संसार का उद्धार हो ही नहीं सकता। जिस दिन एक करोड़ भी माताएँ और बहनें रङ्ग, रूप, देश, धर्म आदि की संकीर्ण सीमाओं से ऊपर उठकर संसार की वास्त-

विक सेवा के लिए अपने आपको समर्पित कर सकेंगी उसी दिन उसके सच्चे उद्धार का प्रारम्भ होगा। दो अरब लोगों से पूर्ण इस संसार में क्या एक करोड़ स्त्रियाँ भी ऐसी नहीं निकल सकतीं ! मैं योरप, अमरीका, अफ़रीका, एशिया आदि सभी स्थानों को मिलाकर केवल एक करोड़ सच्ची सदस्यएँ चाहती हूँ।"

कामरोव—सदस्याओं के पहले जो विशेषण तुमने लगा दिया है उसे हटा दो तब तुम्हें प्रत्येक देश में एक-एक करोड़ संख्या मिल जायगी। पर 'सच्ची' सदस्याएँ, अपने आपको सचमुच संसार-सेवा के लिए समर्पित कर देनेवाली सदस्याएँ, अगर सौ-पचास भी मिल जातीं तो हमारा बेड़ा पार लग जाता। बुद्धि के विकास और चरित्र के विकास में बड़ा अन्तर है प्यारी कैथरिन ! हम सब बहुत कमज़ोर हैं। वैज्ञानिक यन्त्रों पर हमारा नियन्त्रण होता है, पर अपने शरीर-यंत्र पर नियन्त्रण बहुत कठिन है। और शरीर-यंत्र ही सबसे शक्तिशाली तथा मूल वस्तु है। प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर मैं तुमसे यह सब कह रहा हूँ।

कैथरिन हँसकर बोली—"जोन-डी-आर्क की तरह की अद्भुत शक्तिवाली वीरांगनाओं या महात्माओं, सन्तों, अवतारों आदि की प्रतीक्षा या खोज में बैठे रहना मैं हास्यास्पद और हानिकारक समझती हूँ। हम सब कमज़ोर हैं, फिर भी हम यह तो जान चुके हैं कि यह कमज़ोरी है और हमें इस पर विजय पानी है, हम इसे सर्वथा स्वाभाविक कहकर या इस पर विजय पाना हानिकारक मानकर पतन-पथ पर तो अग्रसर नहीं होना चाहते। बस, ऐसे ही लोगों को मैं अपने संघ में शामिल करती हूँ। आप मेरी सहायता करें, आप मुझे निरुत्साह न करें, मैंने युद्ध की विभीषिका की तैयारी देख ली, मैं भयङ्कर युद्धों को भी देख लूँगी, उनसे मैं हताश होनेवाली नहीं हूँ। यह काम जो मैं करना चाहती हूँ करना ही पड़ेगा—अगर एक ओर मार-काट की धूम मचती है तो दूसरी ओर सेवा और शांति के प्रचार की भी उतनी ही व्यापकता होनी चाहिए। मार-काट तो दो दिनों की वस्तु होती है, असली चीज़ें तो सहयोग, सेवा

और सच्ची स्वतन्त्रता ही है। क्या इस बीसवीं सदी में भी—जो अपने को इतना वैज्ञानिक, सुविकसित और अग्रणी मानती है—संसार की यह करुण-समस्या हल न होगी?"

कामरोव—मैं भी इन बातों पर यथेष्ट सोच चुका हूँ। सभी वादों और विवादों को सुन चुका हूँ और बहुत कुछ अनुभव कर चुका हूँ। मैं तुमसे बहुत बातों में सहमत हूँ। पर स्त्री-संघ नहीं, विश्व-समाज-संघ नाम रखकर तुम रूस में काम करना प्रारम्भ करो। मैं तुम्हें यहाँ भी अपनी प्राइवेट सेक्रेटरी बनाने जा रहा हूँ। इस पद पर काम करते हुए तुम्हें सभी प्रकार के शक्तिशाली व्यक्तियों से मिलने का सुअवसर प्राप्त होगा। तुम उन सबका उचित उपयोग अपने इस संघ के लिए करना।

थोड़ी देर चुप रहकर उन्होंने कहा—"और क्या तुम सदैव इसी तरह रहोगी?"

कैथरिन के कपोल लाल हो गये।

कामरोव ने उसका हाथ पकड़कर कहा—"नहीं, कदापि नहीं। मैं चाहूँ तब भी ऐसा नहीं कर सकता। मेरा मन उस समय तक चैन ही नहीं पा सकता जब तक तुम मेरा प्रेम-प्रस्ताव स्वीकार न कर लो।"

२७

कैथरिन ने यह सुना कि अन्ना का एक पत्र कमल के पास आया है। उसके दूसरे दिन स्वयं उसे भी अन्ना का एक पत्र मिला। वह बहुत संक्षिप्त था। पर उसमें 'पुनश्च' करके जो बात अन्ना ने लिख दी थी वह बहुत बड़ी थी। 'मैं अपना प्रेम डाक्टर कमल के प्रति प्रकाशित किये बिना नहीं रह सकी। कल मैंने जो पत्र उन्हें भेजा है, उसमें मुझसे यह अक्षम्य अपराध हो गया है।'

'अक्षम्य अपराध!' एक बार कैथरिन हँसी, किन्तु उस हँसी में उसे अपने हृदय के अन्तस्तल की पीड़ा जान पड़ी।

उसने अन्ना को लिखा—

मेरी प्यारी बहन,

पत्र मिला। बागड़बिल्ला का रहस्य पूरी तरह समझ में नहीं आया। जान पड़ता है, डाक्टर कमल ने उसे तुम लोगों के साथ इसी लिए भेजा था जिसमें वह अवसर पाते ही राजकुमार को मार डाले, जिससे वे तुम्हारे प्रति अपना प्रेम ऐसा न बढ़ा सकें।

यह तुमसे छिपा नहीं है कि स्वयं मुझे भी यह भय था कि तुम कहीं राजकुमार के ऐश्वर्य और उसकी प्रभुता के लालच में न फँस जाओ। पुरुषों के किसी जाल में फँसकर स्वयं वन्दिनी न बन जाना चाहिए। हज़ारों वर्षों से वे स्त्रियों को ऐसी ही अवस्था में डाले हुए हैं। अब गहरे अन्धकार को छिन्न-भिन्न करके अपनी बहनों के स्वतन्त्र करने के लिए हमें अपनी समस्त शक्ति का सदुपयोग करना है।

तुम्हें यह जानकर प्रसन्नता होगी कि कामरोव ने मुझे अपनी प्राइवेट सेक्रेटरी बना लिया है। अब तुम्हें जर्मनी में देर तक न रहना चाहिए। शीघ्र से शीघ्र यहाँ आ जाओ। मुझे तुम्हारी सहायता की आवश्यकता है।

जिस दिन मैं प्राइवेट सेक्रेटरी बनाई गई उस दिन तो मैं स्वयं ही ईश्वर से प्रार्थना कर रही थी कि कमल से मेरी भेंट न हो। किन्तु सायङ्काल उन्होंने आकर मेरा अभिनन्दन किया। कहा—"मुझे प्रसन्नता है कि कामरोव ने आपकी योग्यता के अनुसार स्थान आपको दे दिया।"

मैंने देखा कि उनके मुख पर प्रसन्नता न थी, बल्कि एक प्रश्न था—जो रूसी स्त्री अपने दो ही दिन पहले के वचन के विरुद्ध काम कर सकती है, उसे संसार भर की स्त्रियों के उद्धार की बातें कहने का क्या अधिकार है!

सम्भव है, यह मेरा भ्रम हो। किन्तु मैंने यहाँ आते समय उनसे कहा था कि उन्हीं के प्रति प्रेम रखने के कारण मैं रूस आई। कामरोव मुझसे विवाह करने का वादा कर चुके हैं। पर, खेद है, एक दिन इन सबके विरुद्ध भी हमें-तुम्हें खड़ा होना ही पड़ेगा।

मैंने अपना पूरा कार्य्य-क्रम निश्चित कर लिया है। हमें अपनी मोरचाबन्दी दृढ़ता के साथ करनी है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इस संसार में ऐसी स्त्री-सभाओं और स्त्री-क्लबों की कमी नहीं है जिनमें

संसार की मुख्य समस्याओं से परिचय भी न रखनेवाली और तरह-तरह के स्वार्थी दलों के हाथों में खेलनेवाली हमारी बहनें सम्मिलित हैं। उनके द्वारा इतना भी नहीं होता कि स्त्रियों को अपने पैरों पर खड़ी करने और उनमें से जो असहाय, गृहहीन आदि हो जाती हैं उन्हें त्राण देने के लिए वे कुछ ऐसे उद्योगों या कुटी-व्यवसायों का ही प्रबन्ध कर सकें जिन पर उन्हीं का पूरा नियन्त्रण हो या अपने देश के लोगों की भिन्न-भिन्न भाषाओं में और जनता की बोली में तरह-तरह की पत्र-पत्रिकाएँ निकाल कर स्त्रियों के नैसर्गिक अधिकारों का समर्थन करें और उन्हें जनता को समझावें। पर वे ऐसे काम करने लगें तो अपने पृष्ठ-पोषकों को वे प्रिय कैसे रहें!

मैं इस समय दो विभागों के खोलने के लिए कामरोव से विशेषतः कहूँगी—एक तो ऐसे औद्योगिक कार्यों का विभाग जिनमें सब काम केवल स्त्रियों द्वारा किये जायँ, और दूसरे एक प्रकाशन-विभाग जिसमें प्रेस के सब काम केवल स्त्रियों द्वारा हों।

तुम इन दो में से जिस विभाग का सञ्चालन अपने सुदक्ष हाथों में लेना चाहोगी, तुम्हें दिया जायगा। बस, तब तक के लिए बस।

तुम्हारी बहन—कैथरिन

और इस पत्र में लिखे अनुसार ही उसने किया भी। कामरोव ने इन दोनों विभागों के खोलने और पूर्ण योजना पर विचार करने के लिए अपने साथियों की एक बैठक बुलाई और इनके लिए स्वीकृति ले ली।

२८

अन्ना के आने के लिए कैथरिन ने लिखा था और अन्ना आ गई पर अब कैथरिन को अन्ना का आना अच्छा नहीं लग रहा है। कमल हिन्दोस्तान में उन ओषधियों को बनाना चाहते थे जिन्हें हिन्दुस्तान के डाक्टर लोग दूसरे देशों से मँगाते हैं। वे पहले से ही इस काम में लगे हुए थे। अब फिर उसी में अपना अधिकांश समय दे रहे थे। अन्ना के आने पर कैथरिन ने चाहा कि वह स्त्रियों के प्रचार-विभाग को अपनावे पर उसने उद्योग-विभाग को ही पसन्द किया।

इस तरह उसे डाक्टर कमल से सलाह लेने को कई बार उनके पास जाना पड़ता था। कैथरिन कहती थी कि इससे वह सन्तोषजनक ढंग से, एकाग्र चित्त से, काम न कर सकेगी और व्यर्थ में हँसी होगी। किन्तु इस बात के पीछे जो भय छिपा हुआ था उसे वे दोनों ही जानती थीं। अन्ना यह सोचकर अपने मन में क्रुद्ध होती थी।

एक दिन एकाएक कमल के यहाँ जाने पर उसने उनकी मेज़ पर एक पत्र देखा, जिससे उसका क्रोध और भी बढ़ गया।

यह पत्र कैथरिन का था। उसने लिखा था—

मेरे प्यारे कमल,

बड़ी बुरी साइत में मैंने अपने टाइपब्यूरो को छोड़कर उस कमरे में प्रवेश किया था जिसमें आप बीमार पड़े हुए थे। मैं कामरोव का रहस्य जानने गई थी, किन्तु मैं आपके रहस्य-जाल में फँसकर वहाँ से निकल न सकी। आपके म्लान मुख पर मुझे ऐसी आकर्षक मधुरता दिखलाई दी, कि मैं एक कलाकार की भाँति उससे अभिभूत हो गई। मैंने आपकी सेवा का अवसर पाना अपना सौभाग्य समझा और ईश्वर की कृपा से आप शीघ्र ही रोग से छुटकारा पा गये। आप जैसे-जैसे स्वस्थ होते गये, मेरा मन वैसे ही वैसे अस्वस्थ होता गया। उस अस्वस्थता से अब मैं इस जीवन में, आप जैसे डाक्टर के प्रयत्न करने पर भी, छुटकारा नहीं पा सकती।

सच जानिए, केवल तुम्हारे पुनर्मिलन की आशा से ही, आपकी आज्ञा मानकर, मैं अमरीका से कामरोव के साथ रवाना हुई थी। यह ठीक है कि मोएटी कार्लो में स्त्री-सङ्घ का अधिवेशन होना पहले से निश्चित हो चुका था और मोएटी कार्लो का नाम लेकर कामरोव ने मुझे और भी खींचा, पर उनके कहने से मैं वहाँ कदापि न जाती। घर पर जाकर व्यक्तियों को प्रभावित करने की कार्य-प्रणाली को मैं आवश्यक मानती हूँ। अमरीका में मैंने इसमें बहुत कुछ सफलता पाई थी और रूस में भी मेरे कार्य-क्रम का केन्द्र यही रहेगा।

पर अन्ना जिस काम में लग रही है उसमें ऐसे लोगों का सम्पर्क मुझे अनुचित जान पड़ता है जो अब तक अपनी प्राचीन कुलीनता या राजवंश का अभिमान अपने मन में दबाये हुए हैं। मुझे मालूम हुआ है कि वह आपसे भी इस सम्पर्क-वृद्धि के कार्य में सहायता ले रही है।

अगर हमें संसार में व्यावहारिक समता लानी है और उससे भीषण विषमता दूर करनी है तो हमारा यह कर्तव्य है कि हम अवसर पाते ही उन्हीं लोगों का साथ दें जो अग्रणी बनकर इस विषमता का नाश करना चाहते हैं। जब कामरोव ने ऐसा अग्रणी बनना स्वीकार कर लिया है तब हमें प्रतिक्रिया-शील लोगों से अपना सम्पर्क क्यों बढ़ाना चाहिए?

आप इधर कई दिनों से मुझसे नहीं मिले। जान पड़ता है, मुझे भूले ही जा रहे हैं। ऐसा न कीजिए।

आपकी कैथरिन

अन्ना यह पत्र पढ़कर दूर जाकर बैठ गई।

जब कमल कमरे में आया और अन्ना से हाथ मिलाने को हाथ बढ़ाने लगा तभी उसे इस पत्र का ध्यान आ गया। उसने हाथ मिलाने के बाद अपनी मेज़ पर से पत्र उठाकर उसके हाथ में रख दिया। अन्ना ने अब उसका एक-एक शब्द फिर पढ़ा। तब बोली—"आपका इस पत्र के बारे में क्या विचार है?"

कमल ने हँसकर कहा—"यह तो मैं तुमसे जानना चाहता हूँ। तुम दोनों मुझे ऐसी रहस्यमयी जान पड़ रही हो कि बहुत सोचने के बाद भी मैं किसी अच्छे निर्णय पर नहीं पहुँच पाता।"

अन्ना—अच्छे निर्णय पर! वैसा प्रयत्न ही आप क्यों करते हैं? हम लोग बहुत बुरी हैं, यह मानकर तो आप किसी निर्णय पर पहुँच जाते हैं।

कमल—वह बहुत भयानक होता है, जिस पर विश्वास करने को जी नहीं चाहता।

अन्ना—क्या आप जानते हैं कि मेरी उस बहन को, जिसे कामरोव अपने साथ हवाई जहाज़ पर लाये थे, गोली मारकर समाप्त कर दिया गया था ?

कमल—जानता हूँ।

अन्ना—क्या आप जानते हैं कि कैथरिन भी वस्तुतः राजवंश की ही है और अपनी कुलीनता पर किसी तरह विजय पाने में समर्थ नहीं हो रही है ?

कमल—मैं तो इसका उल्टा ही देखता हूँ।

अन्ना—आप मनोविज्ञान के स्पष्ट रहस्य को नहीं समझ पा रहे हैं !

कमल—तुम्हीं समझा दो।

अन्ना—मैं क्या समझा दूँ ! संसार में पहले कभी और कहीं सच्चे चरित्रवानों का शासन रहा हो तो रहा हो, पर हम लोगों को तो जो इतिहास संसार भर का पढ़ने को मिलता है उसमें इसी सत्य के प्रमाण हैं कि सैनिक-शक्ति और धन की शक्ति से ही जनता पर नियन्त्रण रक्खा जाता है और इन्हीं से उसे सुख, समृद्धि तथा शान्ति का अवसर दिया जाता है। कैथरिन केवल चरित्र-शक्ति में विश्वास करने की बात कहती है पर वह आर्थिक और वैज्ञानिक शक्तियों की श्रेष्ठता मन ही मन मानती है।

कमल—इस संसार में जितने अंश में चरित्रवानों का शासन रहा है उतने ही अंश में यह सच्चा सुख, सच्ची समृद्धि और सच्ची शान्ति पा सका है। जितना इनका बल क्षीण हुआ उतनी ही अधिक अशान्ति और विपत्तियाँ बढ़ गईं। हिन्दुस्तान में जिन कालों में त्यागी ब्राह्मण होते थे और जब सच्चे बौद्ध होते थे, वे ही काल वहाँ विशेष गौरव और सच्ची उन्नति के हुए। कबीर ने, अकबर ने, सूफ़ियों ने उदारता, सहनशीलता आदि की महत्ता का प्रचार किया तभी लोगों ने सच्ची शान्ति और समृद्धि का पथ देखा। रूस के समाज-शास्त्र का आधार अवैज्ञानिक एवं अस्थायी है। वह पूँजीवाद को हटा नहीं सकता।

अन्ना—मुझे खेद है, मैं आपके इस ऐतिहासिक विवेचन से सहमत नहीं हो सकती—पूँजीवाद नहीं, अधिकारवाद या शासन-सत्ता पर अधिनायकत्व अभी रूस में है—बस। राजनीति और प्रेम में सब कुछ उचित ही है। यही मैं मानती हूँ, और किसी दिन आप यह देखेंगे कि कामरोव के स्थान पर कैथरिन रूस का राज्य कर रही है।

कमल—यह तो होने ही जा रहा है। कामरोव उन्हें अपना अर्द्धाङ्ग बनाकर स्वयं इस पद पर उन्हें सुशोभित करने जा रहे हैं।

अन्ना—जी नहीं, अपनी शक्ति से ही हम लोगों को वह पद प्राप्त करना है और हम ऐसा कर रहे हैं।

कमल—तब कैथरिन ने यह सब क्यों लिखा है?

अन्ना—कैथरिन ने चाहे जो लिखा हो, मैं तो आपको सच्ची बात बताने से अपने को रोक नहीं सकती।

कमल ने चिढ़कर कहा—"बस, तुम लोग कृपा कर मुझे छोड़ दो और मुझे अब बेवक़ूफ़ न बनाओ। परिस्थितियों के बदल जाने से तुम लोगों के मन और हृदय तथा सिद्धान्त सभी बदल जाते हैं, यह मैं नहीं जानता था।"

अन्ना ने कुटिल हँसी हँसते हुए कहा—"आप अपने देश के प्रो० विनयकुमार सरकार के लेखों को पढ़ा करते हैं?"

कमल—क्यों? तुम्हारा मतलब क्या है?

अन्ना—मुझे कैथरिन ने 'आर्य' मासिक पत्र का एक पुराना अङ्क पढ़ने को दिया था। इसी में उन्होंने एक लेख में जो अब सुप्रसिद्ध हो चुका है यूनानी लोरियों में से उस लोरी की याद हमें दिलाई थी जिसमें एक आदमी ने अपने बनाये एक चित्र में एक शेर को मनुष्य के पैरों-तले लोटते दिखाया था और उस चित्र को किसी शेर के पास ले गया था। शेर ने उसे देखकर कहा—"अगर हमने चित्र बनाया होता तो वह वास्तविक होता; क्योंकि वह इसका उल्टा होता।" इस कहानी को प्रोफ़ेसर सरकार ने इसलिए लिखा था कि हम लोगों के इस प्रचार को

कि पूर्वी लोगों का काम गौराङ्गों की ग़ुलामी करना ही है, वे इसी शेर की तरह उत्तर देना चाहते थे। उन्होंने यह भी लिखा था कि पश्चिमी देशों में और अमरीका में एशिया के विरुद्ध जितना अधिक लिखा-लिखाया गया है उस सबको जला देना संसार भर के लिए कल्याणकारक होगा।"

कमल—तुमने मुझसे इस समय यह सब क्यों कहा?—क्या इसलिए कि मैं जान लूँ कि एशिया के लोगों के प्रति वस्तुतः तुम लोगों का कैसा भाव है? वह 'आर्य' मासिक पत्र कैथरिन ने मुझसे ही लिया था। इस लेख में जो निशान लगे थे वे मेरे ही हाथ के थे।

अन्ना – तो जर्मनी जाकर मैं जो कुछ देख-सुन आई हूँ उसके बाद किसी हिन्दुस्तानी को पशु से श्रेष्ठतर मानना मैं अपने लिए सम्भव नहीं पाती।

यह कहकर अन्ना वहाँ से बिजली की सी तेज़ी से चल खड़ी हुई।

कमल को जान पड़ा कि उसे सूर्य की रोशनी की भाँति सच्चा प्रकाश फिर दिखाई दे गया। उसने सोचा—"सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं—अन्ना और कैथरिन। इन सबको पूतना की भाँति समझकर इनसे दूर भागना ही श्रेयष्कर है। मैं कैसे महान् कुचक्र में फँसता जा रहा था।"

२९

कामरोव घबराया हुआ कैथरिन के पास आया और आते ही पूछने लगा—"क्या तुम अन्ना का विश्वास करती हो?"

कैथरिन—सम्पूर्ण हृदय से। न करूँ तो जीवित ही न रहूँ।

कामरोव—जो हमारी सोवियट शासन-पद्धति पर विश्वास नहीं करते या इसका जान-बूझकर विरोध करते हैं और हमारी प्रगति में बाधा डालते हैं उन्हें तुम मार डालने को तैयार हो?

कैथरिन—ऐसा क्यों किया जाय? यदि हम प्रत्येक अज्ञानी और अनुचित अभिमानी का वध न्याययुक्त मान लें तब तो संसार का चलना ही

असम्भव हो जायगा। अज्ञान और अभिमान का नाश होना चाहिए, न कि अज्ञानी और मिथ्याभिमानी का।

कामरोव—ऐसा मानने से तो काम नहीं चल सकता।

कैथरिन—आपका काम भले ही न चले, किन्तु संसार का काम इसी तरह चल सकता है। नहीं तो केवल अनर्थ, अन्याय और सत्यानाश के दृश्य दिखाई देंगे।

अब कामरोव ने कहा—"क्या तुम जानती हो कि चार व्यक्तियों को पकड़कर लाया गया है और उन्हें फाँसी का दण्ड मिला है।"

कैथरिन—फाँसी का दण्ड! आप ही ने तो एक दिन कहा था कि ऐसे कामों के लिए आप कभी किसी को फाँसी का दण्ड पाते नहीं देख सकते!

कामरोव—उन्होंने फ़ौज में षड्यन्त्र रचा। उनमें दो पुरुष हैं और दो स्त्रियाँ। पुरुष उस दल में से हैं जो अमरीका से लौटकर आये और स्त्रियाँ तुम्हारे स्त्री-दल की।

कैथरिन—स्त्रियाँ हमारे स्त्री-दल की नहीं हो सकतीं, जिस दल के साथ मेरा सम्बन्ध रहा है वह दल नृशंस और भयावह कार्यों के सम्पादन के लिए नहीं है। ऐसे कार्यों को मैं भी अक्षम्य अपराध ही मानती हूँ।

कामरोव—धन्यवाद। मुझे भी यही सुनने की आशा थी। वैसे हममें चाहे जो मतभेद रहें पर जब एक आदर्श हम मान लें तो उसकी ओर चलने में हमारे सब वाद-विवाद अलग हो जाने चाहिएँ। इन दो स्त्रियों में एक तुम्हारी अन्ना है।

कैथरिन ने बिना किसी प्रकार का आश्चर्य प्रकट किये गम्भीरतापूर्वक कहा—"मेरी अन्ना?"

कामरोव ने कहा—"हाँ, अब तुम क्या कहती हो?"

कैथरिन ने कहा—"मुझे अब कुछ भी कहना नहीं है।"

कामरोव—अन्ना तुम्हारी ही है। तुमने उसके कामों पर यथेष्ट निगाह नहीं रक्खी। इसमें कुछ दोष तुम्हारा भी है। तुम उसके

छुड़ाने के लिए मुझसे यह भी नहीं कह सकतीं कि मुझे उसे छोड़ देना चाहिए। इसमें मुझे तुम्हारा अत्यधिक अभिमान ही दिखलाई देता है। तुम्हारी मनोवृत्ति विचित्र हो गई है।

कैथरिन—नहीं मेरी मनोवृत्ति में कुछ भी अन्तर नहीं पड़ा है। पर मैं आज आपसे यह बतला देना चाहती हूँ कि अन्ना ने जो कुछ भी किया है उसमें अगर किसी का दोष है तो मेरा। अन्ना तो मेरे हाथ की कठपुतली मात्र है।

वह उठकर खड़ी हो गई थी।

कामरोव—तुम्हें मेरी शासन-प्रणाली में विश्वास नहीं है?

कैथरिन—नहीं, तनिक भी नहीं है। मुझे तो आपकी सारी शासन-प्रणाली और दूसरों की शासन-प्रणाली में इस दृष्टि से कोई अन्तर ही नहीं दीखता कि संसार के कितने ही भागों में स्त्रियों का जो क्रय-विक्रय खुल्लमखुल्ला हो रहा है उसे आप लोगों ने भी कभी बन्द नहीं करवाना चाहा। इतना ही नहीं, संसार की जो सबसे बड़ी शक्ति है, उसी को मानना आपके यहाँ नशा समझा जाता है, और सुन्दरता तथा विलासिता के नशे को मानवता माना जाता है।

कामरोव—तुम ऐसा कह रही हो कैथरिन, तुम! हमारी शक्ति और अशक्ति का क्या तुम्हें क्या नहीं है? मैंने तुम पर कितना विश्वास किया। मैंने तुमसे यह भी नहीं छिपाया कि स्वयं मेरा संसार की अलक्ष्य महत्तम शक्ति में असीम विश्वास है।

कैथरिन—इसी लिए तो मुझे आपकी यह शासन-प्रणाली और भी प्रतारणापूर्ण मालूम होने लगी है।

कामरोव ने घण्टी बजाई। दो आदमी आ गये। हुक्म हुआ—"कैथरिन को पकड़कर हवालात में ले जाओ।"

उसी समय कैथरिन प्राइवेट सेक्रेटरी के सब कार-बार का भार छोड़कर हवालात को चल खड़ी हुई। उस समय भी उसके सुन्दर अधरों पर वही मधुर मुसकान खेल रही थी।

३०

अन्ना अदालत में जज के सामने थी। उसके मुख पर तेजस्विता, उचित दर्प तथा कष्ट की ओर से उपेक्षा के भाव थे। अदालत दर्शकगणों से भरी हुई थी।

जज ने अन्ना को उसके अपराध का विवरण सुना दिया। फिर पूछा—"क्या तुम यह स्वीकार करती हो कि तुमने फ़ौजी लोगों को और जनता को उभाड़ने का प्रयत्न किया है और इस प्रणाली के पदाधिकारियों तथा सहायकों को भी मारने के लिए षड्यन्त्र रचना चाहा है?"

अन्ना ने उत्तर दिया—"मैं पहली बात मानती हूँ और दूसरी झूठे लोगों के षड्यन्त्र का फल समझती हूँ।"

जज की भौंहें टेढ़ी हो गईं। उसने फिर पूछा—"क्या तुम्हारा मतलब यह है कि तुमने लोगों को विरोधी तो बनाना चाहा है पर कोई हिंसक षड्यन्त्र नहीं रचा?"

अन्ना ने व्यङ्गपूर्ण मुसकान के साथ कहा—"जो आप लोगों के लिए सम्भव नहीं है, वही सुविकसित मनवाली स्त्रियों के लिए या वैसी ही स्त्रियों की भाँति के उच्चतर वृत्तिवाले पुरुषों के लिए सर्वथा सम्भव है। माँ और बहन का हृदय रखनेवाली स्त्रियाँ किसी को मारना नहीं चाहतीं, पर अस्वाभाविक असमानता को वे सहन नहीं कर सकतीं और उसके साथ सहयोग करना अपने कर्तव्य के विरुद्ध मानती हैं। उनका साथ देनेवाले सहृदय और न्यायी पुरुषों की कहीं कमी नहीं हो सकती। इस अदालत में भी मुझे पूरा विश्वास है कि उनकी संख्या यथेष्ट है।

इसके समर्थन में उपस्थित जनता की ओर से ज़ोरों के साथ आवाज़ आई। जज एक क्षण के लिए स्तब्ध हो गया किन्तु तुरन्त ही उसने पुलिस को हुक्म दिया—"लोगों से कह दो कि अगर वे किसी प्रकार की गड़बड़ी करेंगे तो उन्हें यहाँ से निकाल दिया जायगा।"

फिर अन्ना की ओर मुड़कर उससे कहा—"क्या तुम यह नहीं जानती हो कि इस समय की शासन-प्रणाली धन, फ़ौजी शक्ति, पाखण्डी धर्म आदि पर अवलम्बित नहीं है। वह जनता की शक्ति और उसी की सम्मति से यह बनाई गई है। यहाँ विदेशी या अपने देश का ही कोई ऐसा गुट नहीं है जो न्याय या धर्म के नाम पर जनसाधारण का शोषण करना चाहे। हम सब अपने को जनता मात्र के सुख-साधनों के लिए उत्तरदायी समझते हैं। फिर हमारे देश के जन-तन्त्र के सभापति ने अपने सुकार्यों से संसार भर के सामने एक आदर्श रखना चाहा है। और कामरेव की प्रशंसा इस समय कौन नहीं करता? उन्होंने वास्तविक विश्व-बन्धुत्व की प्रचण्ड लहरें फैलाई हैं और विश्व-सङ्घ की ठोस नींव डाली है। ऐसे ही सभी पदाधिकारियों ने और जनता ने भी इस राजतन्त्र की पूरी सहायता की है। ऐसी शासन-प्रणाली के विरोध में काम करना तुम्हें और तुम्हारे साथियों को अपना कर्तव्य कैसे जान पड़ा?"

अन्ना—क्या आप सचमुच यह विश्वास मुझे दिलाना चाहते हैं कि किसी देश की जनता—साधारण जनता—यह समझ सकती है कि इस 'जटिल उन्नति' के युग में कौन सी शासन-प्रणाली उसके लिए सब से अच्छी होगी? क्या टर्की की धार्मिक जनता .कुरानशरीफ़ ही को उस समय तक भी सबसे अच्छा ग्रन्थ न समझती थी जब कमालपाशा ने स्विट्ज़रलैण्ड की शासन-प्रथा के क़ानून वहाँ के लिए ठीक समझे? पर क्या .कुरान के अनुसार भी वहाँ स्त्रियों के साथ कभी ऐसी समता का व्यवहार हो सकता था?

जज—नहीं, तुम वहाँ के उस अन्धविश्वासी समय की बातें व्यर्थ कह रही हो? क्या हमारे देश—रूस—में भी तुम्हें वैसे ही अन्धकार-युग की अन्यायपूर्ण बातें दिखलाई देती हैं?

अन्ना—हाँ, यही तो हम लोगो का कहना है और इसी के लिए हम यह सब काम करने को विवश हैं। क्या अब भी रूस में यह सम्भव है कि कोई वैज्ञानिक आस्तिक व्यक्ति, जो खुल्लमखुल्ला संसार को चलाने-

वाली एक महान् बल्कि महत्तम शक्ति पर विश्वास करता हो, यहाँ के किसी विभाग का मन्त्री हो सके ! चाहे वह यहाँ जितने अधिक साल भी रहा हो और यहाँ की जनता की सेवा में चाहे जितना अधिक भाग उसने लिया हो पर क्या यह सम्भव है कि वह पद पा सके ? क्या जनता को आस्तिक वैज्ञानिकों को चुनने की स्वतन्त्रता प्राप्त है ? शासन के उच्च पदों पर स्त्रियों की संख्या कितनी है ? फ़ौज घटी, पर फ़ौजी सामग्री क्यों बढ़ाई जा रही है ?

जज—एक-एक बात—अभी-अभी तुमने जो कुछ कहा था अगर मैं उसे ठीक समझा दूँ तो, उसका अर्थ यही निकलता है कि जनता की स्वतन्त्रता की भी सीमा होती है। यह सब बातों में अच्छे-बुरे की जाँच अपने लिए भी नहीं कर सकती। ऐसे आस्तिक आदमी को चुनने की आज़ादी से जनता का वास्तविक स्वतन्त्रता की सीमा से बाहर जाना होगा; क्योंकि ईश्वर और 'महत्तम शक्ति' के नाम पर मनमाने ढोंग और ठगी के काम फिर होने लगेंगे।

अन्ना—तब आप लोग विश्वबन्धुत्व या संसार-सङ्घ की बातें व्यर्थ किया करते हैं। अगर ऐसा बन्धुत्व या ऐसा सङ्घ सचमुच स्थापित करना है तो वह आस्तिकों का बहिष्कार करके नहीं किया जा सकता। ईसाई, मुसलमान, हिन्दू और बौद्ध चारों मुख्य धर्मों के लोग संसार के तीन चौथाई से भी अधिक हैं।

जज—वे संसार में कब सच्ची शान्ति स्थापित कर सके ! ईसाई लोग मुसलमानों को काफ़िर कहते और समझते हैं और मुसलमानों के बाल्कन प्रदेश से स्पेन तक फैले हुए साम्राज्य को उन्होंने जिहाद यानी धर्मयुद्ध करवा-करवाकर नष्ट किया है। इसी तरह हिन्दू लोग बौद्धों के और मुसलमान लोग हिन्दुओं के विरुद्ध ख़ूब लड़ते रहे हैं।

अन्ना—उन आस्तिकों को, जिनका मानसिक, बौद्धिक और आत्मिक विकास विशेष सौभाग्य और संयोग से तथा अध्ययन और अभ्यास से ऐसा हो गया है कि वे न केवल अपने देश की जातीय और संकीर्ण धार्मिक

क्षुद्रताओं के बल्कि सम्पूर्ण सामाजिक संकीर्णताओं के ऊपर उठ गये हैं, सच्चे संसार-सङ्घ का प्राण मानना पड़ेगा। कोई अपने पक्षपातपूर्ण देश-प्रेम और संकीर्ण ज्ञान के कारण उनको उनके उचित पद से वञ्चित नहीं कर सकता। चरित्रवान् लोग वैज्ञानिक होने के साथ-साथ सच्चे आस्तिक अवश्य होंगे।

जज—तुम्हारा षड्यन्त्र अन्तर्राष्ट्रीय है और सभी देशों के लोग इसमें सम्मिलित हैं, ये बातें तुम मानती हो ? कितने आस्तिक मनुष्य ऐसे शक्तिशाली हैं जो सब धर्मवालों को मिलाकर—जाति, रङ्ग आदि का भेद-भाव मिटाकर—ऐसा संसार-सङ्घ स्थापित कर सकें ?

अन्ना—इस षड्यन्त्र को मैं ध्रुव-सत्य मानती हूँ। पर हम लोगों का यह नैतिक प्रयत्न असल में कोई षड्यन्त्र नहीं है।

जज बोल उठा—"तुम्हारा कहना ग़लत है। तुमने और उन लोगों ने भी जिन पर हमने कहीं अधिक विश्वास किया, हमारे देश की शासन-प्रणाली के ख़िलाफ़ यह कुचक्र रचा है। इसमें भोली-भाली, भावुक स्त्रियों को बहकाया गया है। रूस में स्त्रियों को संसार के अन्य देशों की स्त्रियों से कहीं अधिक अधिकार प्राप्त हैं. फिर भी यह प्रचार किया गया कि शासन-प्रणाली से सम्बन्ध रखनेवाले सभी पदों एवं व्यवसायों में भी स्त्रियों की संख्या आधी बल्कि आधी से भी अधिक होनी चाहिए। इसके लिए उग्र साधनों का सहारा लेना ठीक समझा गया।"

अन्ना ने बात काटकर कहा—"इन बातों के लिए जो प्रमाण आपके पास हों उन्हें जनता के सामने रखिए। उसे उनके जानने का अधिकार है। हमारा तो यह कहना है कि यह नास्तिक, नैतिक बल से हीन शासन-व्यवस्था रूस की स्त्रियों को पुरुषों के समान ही हृदयहीन बना रही है। धन और यन्त्र ही इसके आधार हैं। इन्द्रियों का उपभोग और विलासिता ही इसके सर्वस्व हैं।"

इतने में बाहर अशान्ति बढ़ गई और लोगों ने वहाँ से बाहर आकर देखा कि कैथरिन को साथ लिये हुए, उसका जयजयकार करते

हुए जनता का समूह आ रहा है। स्वयं कामरोध ने कैथरिन को जेल से स्वतन्त्र करा दिया था।

उस समूह ने कैथरिन को उसी अदालत के बाहर एक कुरसी पर बिठाकर उससे कुछ सुनना चाहा।

कैथरिन ने अपने को भरसक सँभालकर कहा—"भाइयो और बहनो, मैं आपसे साफ़-साफ़ कहना चाहती हूँ कि मैं संसार भर पर स्त्रियों का शासन देखने के लिए प्रयत्नशील हूँ; पर मैं इस समय की शासन-सत्ता को हिंसक उपायों से अलग करना नहीं चाहती। मैंने ऐसा कोई काम नहीं किया। फिर रूस की ज़ार-सत्ता एक ऐसी सत्ता थी जो आप लोगों के उचित विकास में बेहद बाधाएँ डालती थी। उसका इस तरह हटना, प्रकृति के अनिवार्य नियमों के अनुसार, सर्वथा स्वाभाविक था। इस समय जो जन-सत्ता यहाँ स्थापित है यह तो आपके ही त्याग, बलिदान और निरन्तर कष्ट-सहन करने के उच्च पथ पर डटे रहने का परिणाम है।"

थोड़ा रुककर उसने फिर कहा—"आप भी इस समय की व्यवस्था-पद्धति की पुरानी व्यवस्था-पद्धति से तुलना करके सहज ही देख सकते हैं कि यह उससे कितनी श्रेष्ठतर है, कितनी अग्रगामी है।

एक दल ने इसके समर्थन में तालियाँ पीटीं। दूसरी ओर से अट्टहास्य सुनाई दिया।

उसी समय कैथरिन ने फिर कहा—"आप लोग यह क्या करने जा रहे हैं! योरप में कई शताब्दियों तक एक प्रकार के ईसाइयों ने दूसरे प्रकार के ईसाइयों से इतनी भयङ्कर लड़ाइयाँ, धर्म के नाम पर, लड़ीं कि वे संसार के सभी दूसरे हिस्सों से इसमें आगे बढ़ गये। धीरे-धीरे उनमें यह समझ आई कि ईसा ने तो मानव-मात्र को एक ही ईश्वर की सन्तान कहा है—एक गड़रिये की भेड़ों से उनकी तुलना की है। फिर भी वे सभी मनुष्यों को—रंग, जाति, भाषा आदि के भेद-भाव भूलकर—अपने भाई के समान न मान सके। 'पवित्र धर्म' के नाम पर उन्होंने मुसलमानों से भी लड़ाइयाँ ठानी थीं। उनके विस्तृत राज्य को नष्ट

कमल—आप उसे अपनी सहधर्मिणी बनाना चाहते हैं ?

कामरोव—मैं उससे जो-जो चाहता हूँ सब करा लूँगा। अभी तुम्हें उससे मिलकर जो-जो बातें करनी चाहिएँ उन्हें मैं बतलाये देता हूँ।

उसकी बतलाई बातों से कमल विस्मय-स्तम्भित रह गया।

३२

कमल ने कैथरिन से जेल में मिलने जाने के पहले कामरोव से जो बात-चीत की उससे उसके मन पर हृदयवेधी, मार्मिक और कटु किन्तु सर्वथा सीधा और सच्चा प्रभाव पड़ा। आज उसने स्पष्टतः देखा कि बड़े से बड़े राजनैतिक और आदर्शवादी पुरुष के भी किस प्रकार दो अलग-अलग रूप हो सकते हैं—एक तो सैद्धान्तिक और दूसरा व्यावहारिक।

अब कमल ने सोचा कि वह स्वयं क्या करे ?

एक दिन उसके प्रति अन्ना ने अपना प्रेम स्पष्ट रूप से प्रकट किया था। अपने पत्र में भी उसने हिन्दुस्तान जाने की उत्कट अभिलाषा प्रकट की थी। कमल ने सोचा—"यह विलासिनी रमणी अपने देश की बुराई किसी तरह सहन नहीं कर पाती और यद्यपि यह कैथरिन के आदर्श को समझ नहीं सकी, किन्तु अपने मनमाने काम के लिए यह अद्भुत वीरता से मर मिटना जानती है।

"और यह कैथरिन ?

"उसकी आत्मा कहीं अधिक विकसित जान पड़ती है, साज-श्रृङ्गार वह भी करती है पर उसका मन कभी उसमें लगता नहीं। उसकी सेवा की शक्ति असीम है। यह सच है कि वह कामरोव को चाहने लगी थी, पर अपने उच्च सिद्धान्तों की पूर्ति के लिए वह कामरोव को छोड़ भी सकती है। जो सिद्धान्तों की पूर्ति के लिए अपने जीवन को अधिक से अधिक लगाना चाहता है, उसे ही यह सम्पूर्ण संसार वन्दनीय और आदर्श मानता है। सम्भव है, कैथरिन भी ऐसी ही हो जाय।

"पर क्या मैं इनमें से किसी की पूरी सहायता कर सकता हूँ ? कामरोव कैथरिन से अपना विवाह करने का प्रस्ताव अब भी किसलिए करना चाहते हैं ? अपनी राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए, या सचमुच संसार के नव-विधान में सहायता पाने के लिए ?"

इन्हीं प्रश्नों पर विचार करता हुआ कमल मोटर पर बैठा हुआ उस जेल की ओर गया जिसमें कैथरिन थी।

किन्तु जब वह वहाँ जाकर कैथरिन के सामने बैठ गया, तब उसके मन में यही भाव उभड़ने लगा कि वह कैथरिन के प्रति अपना प्रेम, अपनी श्रद्धा प्रकट करे और उससे यह प्रार्थना करे कि वह हिन्दुस्तान चलना स्वीकार कर ले।

पर उसने सुना, कैथरिन मुस्कराकर कह रही थी—"जेल में आकर मैंने जैसी शान्ति पाई, वैसी बाहर कभी न पा सकी थी। मैं सचमुच प्राचीन राजवंश की हूँ। पर मुझे उस वंश का तनिक भी अभिमान नहीं है बल्कि यह सोचकर मुझे हार्दिक दुःख ही होता है कि मैं ऐसे वंश में क्यों उत्पन्न हुई ? इससे कहीं अच्छा यह है कि कोई व्यक्ति साधारण परिस्थितियों में पैदा हो, उसी में बढ़े और उसी का सदुपयोग सत्य और न्याय की ओर करे। साधारण क्षेत्र में यह काम करना कहीं आसान है। किन्तु मैं अपने असाधारण क्षेत्र में भी अकृतकार्य्य नहीं रही। जो हो, अब मेरा क्षेत्र स्पष्ट है और मेरा यह कार्यक्षेत्र मुझे निरन्तर बल देता जायगा। देखिए न, मैं कैसी स्वस्थ और प्रसन्न हूँ।"

कमल ने कहा—"जाँच से यह पूरी तरह प्रमाणित होता जा रहा है कि तुम लोगों का काम करने का ढंग वास्तव में उचित था। फिर भी, जान पड़ता है, अन्ना ने तुमको पूरी तरह समझ नहीं पाया था। उसने लोगों को कई स्थानों पर बुरी तरह उसकाया और फ़ौज में भी वह ऐसा काम करने पर उतारू हो गई।"

कैथरिन—इन बातों में उन लोगों का पूरा रंग हो सकता है जो मुझे और अन्ना को उन कामों के लिए फँसाना चाहते हैं जिनकी जड़ पर हम

कैथरिन—आज मैं आपको अपनी बातों की ऐसी आलोचना करने का अधिकार नहीं दे सकती। परस्पर विरोध आपकी बातों में भी कम नहीं होता। मुझमें और आपमें अन्तर यही है कि आप केवल व्यक्तियों के शरीर के रोगों की ओषधियों की खोज करते हैं और मैं समस्त विश्व-शरीर के रोगों को दूर करने के काम में लगी हूँ। स्त्रियों को विज्ञान और शासन में समान अधिकार और अवसर मिले होते तो जैसे एक संसार-प्रसिद्ध स्त्री रेडियम की बहुमूल्य खोज से संसार भर को लाभान्वित कर सकी वैसी ही हज़ारों-लाखों लाभदायक खोजें और आविष्कार हो चुके होते। पुरुषों की कुशासन-प्रणाली के फल-स्वरूप यह सम्भावना है कि पहले महायुद्ध से बीस-बाईस साल के भीतर ही दूसरा महायुद्ध होने जा रहा है। स्वयं कामरोव ने मुझसे ऐसी पूरी सम्भावना बतलाई है।

कमल—उससे क्या होगा? अच्छा तो यही है कि तुम लोग बाहर रहकर वे उपाय काम में लाओ जिनसे युद्ध सचमुच बन्द हो सके।

कैथरिन—उसका तो एक ही उपाय है, शासन-शक्ति पर स्त्रियों का आधिपत्य।

कमल—अगर कोई उच्चतर उपाय न सफल हो और रूस में शक्ति के प्रयोग से ही स्त्रियाँ शासन पर पूर्ण अधिकार जमा लें तो यह काम क्या प्रशंसनीय न होगा?

कैथरिन—क्या असल वस्तु जिसके लिए स्त्रियाँ बेचैन हैं उनके दल-विशेष के शासनाधिकार सी है? क्या बाक़ी सब बातें व्यर्थ की ही हैं? नहीं, आपका ऐसा समझना ठीक नहीं। मज़दूर, किसान-दल की क्रान्ति की तरह स्त्री-दल भी हिंसा द्वारा एक बार अधिकार पा ले तो क्या? मैं इसे मानवता मात्र के विकास के लिए हानिकारक मानती हूँ। फिर भी मैं आज आपसे यह बतलाये देती हूँ कि अन्ना जिसे अपनी बहन कहती है और जिसने मोण्टी कार्लो में कामरोव पर हमला किया था वह असल में मेरी सगी बहन है। आप कामरोव से भी यह कह दीजिएगा। हाँ, यह विश्वास कीजिए कि मुझे वह पथ तनिक भी पसन्द नहीं।

कमल को जान पड़ा मानों बम-वर्षा हो गई । वह आक्रमणकारिणी कैथरिन की ही बहन है—कैथरिन की !

उसने उठते हुए कहा—"आगे मुझे एक शब्द भी नहीं कहना है । अब मैं जाता हूँ ।"

कैथरिन ने उनकी ओर गम्भीरता से देखकर कहा—"हाँ जाइए, पर मैंने जितनी बातें कही हैं सब ठीक हैं, न कि केवल यही एक सगी बहन-वाली बात—इसे न भूल जाइएगा ।"

कमल ने कहा—"मैं कुछ भी न भूलूँगा ।"

और वह तेज़ी से बाहर चला आया ।

३३

"क्या कैथरिन आपके साथ हिन्दुस्तान जाना चाहती है ?"

यही प्रश्न कामरोव ने कमल से मिलने पर किया । कमल कोई उत्तर दिये बिना ही चुपचाप बैठ गया ।

कामरोव ने समझ लिया कि इससे कमल को चोट पहुँची है, उसने इस बार मानो पश्चात्ताप के स्वर में कहा—"क्या कैथरिन बाहर जाकर स्वतन्त्रता-पूर्वक अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र तैयार करने के काम में नहीं लगना चाहती ? मैंने तो उसे स्वयं ही यह स्वतन्त्रता दे रक्खी थी । पर उसने ही झूठ-मूठ अपने को अन्ना के कामों के लिए उत्तरदायिनी कहा । जाँच से यह प्रमाणित है कि अन्ना के अपराधों में उनका तनिक भी हाथ न था । फिर वह बाहर जाना क्यों नहीं चाहती या यहीं पहले जैसा काम क्यों नहीं करती ? विचित्र बात है ! जिन सिद्धान्तों की वह अनुयायिनी नहीं, जिन्हें वह मानव-प्रगति में बाधक ही मानती है, उन्हीं के अनुसार काम करनेवाली अपनी पथभ्रष्टा या जान-बूझकर धोखा देनेवाली साथिनों के लिए वह कारागार के कष्टों को क्यों सहन करती रहना चाहती है ?

कमल—उनका कहना है कि वे अपने साथियों की नेकनीयती में सन्देह नहीं कर सकतीं, चाहे उनसे जितनी और जैसी भूलें हो जायँ ।

कामरोव—अपनी उस बहन को भी वह अपनी साथिन कहती है जिसने स्वयं मुझ पर मोएटी कार्लो में आक्रमण किया था ?

कमल—उसने तो मुझसे स्पष्टतः कहा है कि मैं आपको यह बतला दूँ कि वह आक्रमणकारिणी उन्हीं की बहन है न कि अन्ना की।

कामरोव ने कहा—"अच्छा, डाक्टर कमल, क्या आप यहीं नहीं रह सकते ? क्या आपका हिन्दुस्तान लौटना ज़रूरी है ?"

कमल लम्बी साँस लेकर बोला—"क्या मेरा स्वदेश के प्रति कुछ कर्तव्य ही नहीं है ? मैं अपने देश लौट जाऊँगा और इसी सप्ताह में। मैं आपकी कृपाओं के लिए आभारी रहूँगा।"

कामरोव—इस सप्ताह और इस मास तो आप जा ही नहीं सकते। अगले मास मैं एक प्रीति-भोज देने जा रहा हूँ। उसके बाद आप जा सकते हैं। तब तक अन्ना आदि के बारे में भी सब निर्णय आप सुन लेंगे।

कमल ने इस बार दृढ़ स्वर में कहा—"मेरे मन में किसी न किसी स्त्री को लेकर अपने देश लौटने की लालसा नहीं है ! मैंने तो आपसे यह छिपाया नहीं कि अगर ऐसी बुरी इच्छा मेरे मन में कभी आई थी तो वह पूरी तरह दूर हो चुकी है। मैं अपने देश के लिए कुछ करना चाहता हूँ।"

कामरोव—तब तो हम दोनों पर इन दोनों सुन्दरियों—अन्ना और कैथरिन—का एक-दूसरे के सर्वथा विपरीत प्रभाव पड़ा है। आप अपने देश के कार्य्यक्षेत्र की ओर जाना चाहते हैं और मैं देशों और राष्ट्रों के कार्य्यक्षेत्रों से ऊपर उठकर सच्चे अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र और सच्चे विश्व-समाज-संघ की ओर। चाहे जो हो, हम यह कभी भूल नहीं सकते कि आपके देश के महान् सिद्धान्तों से ही—जिन्हें सभी निष्पक्ष विद्वान् लोग मानवता के मूल सिद्धान्त मानते हैं—कैथरिन ने एक अमिट अंश पा लिया है।

कमल स्वदेश की इस प्रशंसा से प्रसन्न हो गया। बोला—"आप सचमुच ऐसा मानते हैं ?"

कामरोव ने कहा—"सोवियट रिपब्लिक का आदर्श भी अन्त में अहिंसात्मक समाज ही है। मैं अन्ना को क्षमा करके उसे भी अहिंसा की महत्ता दिखाऊँगा। अच्छा हो अगर आप दो-चार साल अभी यहीं रुकें। आगामी संसारव्यापी युद्ध को देखकर तब यहाँ से जायँ। सम्भव है, तब अन्ना भी आपके साथ जाय।"

कमल ने दृढ़ स्वर में कहा—"यह असम्भव है।"

३४

कमल को एक मास ठहरना ही पड़ा।

वह विज्ञान के उन शिक्षालयों को देखने गया जिनमें बारह-बारह, तेरह-तेरह वर्षों के बालकों द्वारा हवाई जहाज़ों, समुद्री जहाज़ों, रेडियो, रेलवे, बिजली के तरह-तरह के यन्त्रों को खेल-खेल में बनवाया जा रहा था। प्रत्येक विद्यार्थी को सप्ताह में कुछ घंटे एक प्रकार के व्यावहारिक विज्ञान में, कुछ घटे किसी व्यावहारिक व्यवसाय में और कुछ प्रकार के सामाजिक उद्योग में व्यय करते देख उसे अपने देश के स्कूलों की निरी शुष्क-शिक्षा पद्धति पर रुलाई आ गई।

अन्त में उस प्रीतिभोज-दिवस का आगमन हुआ। उस दिन भी आकाश मेघाच्छन्न था और बादल कड़क उठते थे। उसने प्रीति-भोज की दालान में जाकर जो कुछ देखा उससे वह आश्चर्य से स्तम्भित रह गया। वहाँ न केवल अन्ना ही उपस्थित थी बल्कि कैथरिन और कैथरिन की कामरोव पर आक्रमण करने के बाद पकड़ी हुई बहन भी। अन्ना और कैथरिन की बहन विवाह की पोशाकें पहने हुई थीं। स्वयं कामरोव ने प्रीति-भोज के प्रारम्भ में कहा—"आप सब लोगों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि मैंने न केवल कैथरिन को बल्कि अन्ना और उनकी बहन को भी क्षमा कर दिया है और अन्ना ने यहाँ के विदेश-मन्त्री के साथ तथा उनकी बहन ने या कैथरिन की बहन ने एक विदेशी-राजदूत से अपना विवाह करना स्वीकार कर लिया है! कैथरिन को हम किसी के

साथ विवाह करने पर किसी तरह राज़ी नहीं कर सके, पर इस ओर से अभी हम निराश होनेवाले नहीं हैं।"

कैथरिन बोल उठी—"मैं यहाँ जन्म भर विवाह न करूँगी—जेल में यही शुभ निश्चय करने की शक्ति मैं संचित कर सकी। अब यह अटल है।"

इस बात के सुनते ही कमल का उदास मुख कमल की भाँति ही खिल गया। वह मन ही मन कह उठा—"बस, अब सब ठीक है। मेरा एक मास ठहरना सफल हो गया और मेरा कैथरिन से प्रेम करना भी। कामरोव ने ज़रूर यही सोच रक्खा था कि आज ही वे अपना विवाह कैथरिन से निश्चित हो जाने की घोषणा भी कर सकेंगे और उन्होंने इसके लिए पूरा प्रयत्न भी किया होगा, परन्तु कैथरिन ने मेरी लाज रख ली और अपनी भी।"

कामरोव ने कैथरिन की बात सुनकर भी कहा—"इस समय तो दूसरे ही प्रश्न हमारे सामने हैं। आप लोगों को स्मरण होगा कि पिछले महायुद्ध के बाद जब रूस में लोकतन्त्र—सोवियट प्रणाली—की स्थापना हुई तब उसने ज़ारों के समय में उनके विलासिता और निरंकुशता से पूर्ण राज्य को चलाने के लिए जो कई अरबों का ऋण अनेक राष्ट्रों से लिया गया था उसे अदा करने से साफ़ इन्कार कर दिया। इससे उन देशों की गवर्नमेंटें हमसे बहुत चिढ़ गईं और हमारे विरुद्ध सब कुछ करने-धरने में उन्होंने कोई कोर-कसर नहीं की। किन्तु इस बीस करोड़ जनता की सुसंगठित शक्ति के सामने किसी की कुछ भी नहीं चली। अब सभी हमें संसार की महान् शक्तियों में स्वीकार करते हैं। हमें अब फिर एक बार अपनी शक्ति की परीक्षा देने के लिए इसी तरह तैयारी करनी है।"

संसार की एक नई व्यवस्था अनिवार्य है। न केवल योरप की, न केवल एशिया की, केवल यूरोप-एशिया की भी नहीं, संसार भर की नई व्यवस्था वह होगी जिसमें मनुष्य जंगली आदमियों या हिंसक पशुओं की

भाँति नहीं बल्कि सभ्य भाइयों और सुशिक्षिता बहनों आदि के रूप में रह सकें। संसार के सभी शक्तिशाली लोगों, विद्वानों और चरित्रवानों का उसमें विशेष हाथ होगा। आशा है, उसी समय कैथरिन की महत्ता भी संसार स्वीकार करेगा।

× × × ×

कमल करे तो क्या करे ? उसे कामरोव बिदा दे चुका। कैथरिन के बारे में उसने एक शब्द भी नहीं कहा, न आगामी लड़ाई के बारे में। वह कमल की खोजों के सम्बन्ध में ही पूछता रहा।

जब कमल स्वदेश के लिए प्रस्थान कर रहा था तभी कैथरिन अपना सूट-केस लिये एकाएक आ गई और बोली—"ठीक समय पर पहुँच गई न ? आप मुझे यहाँ छोड़कर भाग जाना चाहते हैं क्या ?"

कमल—चाहता तो न था, पर करना यही पड़ता।

कैथरिन—मैंने समझ लिया कि संसार भर में केवल आपके देश को वास्तविक रूप से अग्रगामी बनने का श्रेय प्राप्त हो सकेगा, अन्य किसी को भी नहीं।

कमल हर्ष से विह्वल हो गया। अपने को किसी तरह सँभालकर हँसते हुए बोला—"धन्यवाद।"

कैथरिन—आगामी हिंसक लड़ाई के समाप्त हो जाने के बाद मेरे काम का आरम्भ आपके देश से होगा।

कमल—कामरोव से आप क्या कहकर आ पाईं ?

कैथरिन—बड़ी कठिनाई से मैं कामरोव को अपनी इस यात्रा के लिए प्रबन्ध कर देने को राज़ी कर पाई! अगर उन्हें यह भय न हो गया होता कि मेरी अन्य बहनें भी मेरे यहाँ रहने पर बराबर शान्ति-भङ्ग किया करेंगी तो वे मुझे कभी इस तरह बाहर न जाने देते।

कमल को चुप देखकर उसने हँसकर कहा—"आप क्या सोचते हैं ? इस बात से न घबराइए कि मेरा सम्बन्ध राजवंश से है। मैं हिन्दुस्तान

के मज़दूर और किसान-वर्ग के ही साथ मिल जाना चाहती हूँ। आर्थिक स्वतन्त्रता सच्ची स्वतन्त्रता का आधार होती है। चीन की तरह आपके यहाँ भी प्रत्येक घर चर्खे आदि को इस आपत्तिकाल में अपनाकर स्वावलम्बी बने, इसकी मैं पूरी कोशिश करूँगी। जहाँ आदमियों की कमी नहीं, वहाँ लोग अपने शरीर-यन्त्र का उपयोग न कर विदेशी जड़-यन्त्रों के मोह में इसी से फँसे हुए हैं कि उनको अधिकांश स्त्रियों का सच्चा सहयोग अभी तक नहीं मिल सका। वस्तुत: स्त्री ही मानवता के प्रत्येक क्षेत्र में अग्रणी होती है। हिन्दुस्तानी स्त्री में तो इसकी और भी विशेषता है।"

कमल—तब तो आप भी हिन्दुस्तानी हो चुकीं।

तब वे दोनों व्यक्ति प्रसन्नतापूर्वक और नवीन आशा तथा नवीन उत्साह से साथ-साथ चल खड़े हुए। उस समय अन्ना अपने कमरे में बैठी भयानक मनसूबे गाँठ रही थी। उसने कैथरिन को विश्व-द्रोहिनी माना।

'मधुप' को तार द्वारा कमल ने अपने कैथरिन के साथ शुभ प्रस्थान की सूचना भेज दी।

जब से अन्ना जर्मनी चली गई थी तब से मधुप अपनी स्त्री ललिता की सूझ-बूझ का और भी अधिक प्रशंसक हो गया था।

कमल के इस तार से ललिता को भी यथेष्ट प्रसन्नता हुई।

वह बोली—"कैथरिन आपके मित्र की सच्ची प्रेमिका है। उसके दिल में दूसरों के लिए काफ़ी दर्द है और उसके जीवन में एक आदर्श भावना है। वह वास्तविक स्त्री है—सच्ची साधिका है। उसका दर्शन पाना, उसके साथ रहने का सुअवसर पा जाना मैं पुण्यप्रद समझती हूँ। आपके मित्र के निर्धन होने की बात से उस पर तनिक भी बुरा प्रभाव न पड़ा, जब कि अन्ना के मन को उसने बिलकुल फेर दिया। वह अन्ना की भाँति हिंसा-पथ की ओर जानेवाली भी नहीं—अहिंसा मानती है।"

वे बम्बई पहुँचे। कमल के भाई भी गये। उनकी अमरीकन सहधर्मिणी चुनाव के बारे में 'मधुप' के कांग्रेसी सिद्धान्तों से सहमत न हुई। अतः वह अपना जीवन फिर आमोद-प्रमोद में बिताने लगी थी। कमल के भाई ने मधुप से कहा—"भाई, कहीं कैथरिन भी मेरी सहधर्मिणी की तरह न निकल जाय। अच्छा होता अगर कमल वहाँ से कैथरिन के बदले केवल सच्ची देशभक्ति को ही साथिन बनाकर लौटता। मैं तो अपनी ज़िन्दगी से ऊब उठा हूँ।"

और उन्होंने देखा, कमल जहाज़ पर अकेला उदास मुँह किये हुए खड़ा है। उसने उतरने पर अपनी आँखों में आँसू भरे हुए कहा—"कैथरिन पर अन्ना ने गोली चला दी! वह चुपचाप ट्रेन पर चढ़ आई थी और मिलने के बहाने उस देवी को मार बैठी।"

सब ने अपने-अपने आँसू पोंछे।

——